व्याकरण-रत्न

पंजाब - यूनिवर्सिटी की रत्न तथा मैट्रिकुलेशन और
देहली-यूनिवर्सिटी की मैट्रिकुशलेन-परीक्षा के लिये

श्री गोपालचन्द्र देव

Vyākarn - Rattan

व्याकरण-रत्न

पंजाब यूनिवर्सिटी की रत्न और मैट्रिकुलेशन तथा
देहली यूनिवर्सिटी की मैट्रिकुलेशन
परीक्षा के लिये

लेखक
गोपालचन्द्र देव
Gopal chandra Dev

प्रकाशक
विद्या-भवन
लाहौर

द्वितीय संस्करण] मार्च १९३८ [मूल्य ।।।)

प्रकाशक

श्यामचन्द्र विशारद, प्रभाकर

विद्या-भवन

हस्पताल रोड, लाहौर

"विद्ययाऽमृतमश्नुते"

मुद्रक

जगजीतसिंह पाल

वसन्त प्रेस

लाहौर

निवेदन

व्याकरण-रत्न को हिन्दी-जगत् ने जिस उत्साह से अपनाया है, इसका मुझे बहुत हर्ष है और इसके लिये मैं हिन्दी-प्रेमियों का अन्तःकरण से कृतज्ञ हूँ। इस व्याकरण की सरलता, स्पष्टता और परीक्षोपयोगिता पर मुग्ध होकर प्रायः सभी माननीय अध्यापकों और विदुषी अध्यापिकाओं ने मुझे बहुत सम्मानित किया है। मैं उन्हें हार्दिक धन्यवाद देना अपना परम कर्तव्य समझता हूँ।

सौभाग्य से मुझे अनेक व्याकरणों को आद्योपान्त देखने का अवसर मिला है, कुछ रुचि इस ओर अधिक है; इसके अतिरिक्त मैंने अनेक स्थलों पर कई प्रकार से विचार-विनिमय भी किया है; इसीलिये इसे सरल, पूर्ण उपयोगी और सुसम्बद्ध बनाने में सफल हो सका हूँ।

शुद्ध-शुद्ध लिखने, पढ़ने और बोलने का ज्ञान प्राप्त कराना ही व्याकरण का मुख्य उद्देश्य होता है। यूनिवर्सिटी भी शुद्ध-लेख पर बहुत जोर देती है। इस व्याकरण में मैंने इस बात का विशेष ध्यान रक्खा है। वर्णविचार में लिखने की रीति शुद्ध-अक्षर-योजना और उच्चारण सम्बन्धी बहुत सी महत्त्वपूर्ण बातें दी हैं। शब्दविचार में भी बहुत कुछ निर्देश किया है। वाक्य-विचार में अभ्यास के लिये आठ विशेष नियम दिये हैं।

इस संस्करण में अनेकार्थक, भिन्नार्थक, विपरीतार्थक, पर्यायवाचक, वाक्यांश-प्रकाशक और ध्वनिसूचक शब्दों को विशेष रूप से दे दिया है, क्योंकि परीक्षाओं में ऐसे प्रश्न मुख्यतया पूछे जाते हैं। मुहावरों और लोकोक्तियों की संख्या पहले से पर्याप्त अधिक कर दी है।

मुझे पूर्ण आशा है कि यह संस्करण विद्यार्थियों के लिये अतीव लाभदायक सिद्ध होगा।

अन्त में विद्वज्जनों से विशेषत: वैयाकरणों से प्रार्थना है कि वे इसमें जो कुछ परिवर्तन या संशोधन करना चाहते हों, कृपा करके मुझे विद्याभवन के पते पर लिख भेजें, मैं उनका अत्यन्त आभारी हूँगा।

विनीत—

गोपालचन्द्र देव

विषय-सूची

व्याकरण-रत्न

लेखक की अन्य पुस्तकें

निबन्ध कौमुदी

सरजा शिवाजी

भूषण निबन्धावली

प्रभाकर निबन्धावली

व्याकरण-रत्न

प्रस्तावना

भाषा बोली को कहते हैं। मनुष्य जाति की संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी, अंगरेजी आदि कई बोलियां हैं, पशु-पक्षियों की भी अपनी अपनी बोलियां होती हैं, परन्तु इस पुस्तक में मनुष्यों की बोलियों में से केवल हिन्दी बोली के ही नियमों पर विचार किया जाता है।

संसार का व्यवहार चलाने के लिए अपने विचार दूसरों पर प्रकट करने और दूसरों के विचार समझने आवश्यक होते हैं। गूंगों की भांति हाथ हिलाने आदि संकेतों द्वारा भी अपने विचार प्रकट किये जा सकते हैं और दूसरों के विचार समझे जा सकते हैं, परन्तु उसमें सरलता नहीं होती और समय भी अधिक लगता है। इसलिये—

अपने विचारों को दूसरों पर प्रकट करने और दूसरों के विचारों को समझने के लिये भाषा सब से सरल साधन है।

भाषा का प्रयोग दो प्रकार से होता है—बोलकर और लिखकर। समीप वाले व्यक्ति पर और टैलीफोन आदि साधनों से दूर वाले व्यक्ति पर भी अपने विचार बोलकर प्रकट किए जाते हैं। दूरवर्ती मनुष्य पर पत्रादि लिखकर और जनसाधारण पर पुस्तकादि लिखकर अपने विचार प्रकट किए जाते हैं।

बोलना ध्वनियों से बनता है और लिखना वर्णों से। एक या अधिक ध्वनियों या वर्णों से शब्द बनते हैं। जैसे— मैं, ला, आम, हाथी।

शब्द का कुछ न कुछ अर्थ अवश्य होता है। जब दो या अधिक शब्द मिल कर किसी पूरी बात को प्रकट करते हैं तो वाक्य बनता है। जैसे—घर जा, मोहन पढ़ता है, आदि। वाक्य व्याकरण का मुख्य अंग है।

वाक्य-रचना के लिये जब शब्द इकट्ठे होते हैं तो उनके रूपों में आपस के सम्बन्ध के कारण प्रायः हेर फेर हो जाता है। उदाहरण के लिये—कुत्ता, बालक, काटना—इन तीन शब्दों से जब अर्थ के अनुसार भिन्न भिन्न वाक्य बनाए जाएं तो इनके रूप बदलते जाएंगे, जैसे—कुत्ता बालक को काटता है, कुत्ते ने बालक को काटा, कुत्ते से बालक काटा गया, आदि। यदि व्याकरण के नियमों का ज्ञान न हो तो इन वाक्यों में कई प्रकार की अशुद्धियां हो सकती हैं। अतः—

व्याकरण उस शास्त्र को कहते हैं जो भाषा को शुद्ध रूप में प्रयुक्त करने के लिये नियमादि समझाए।

व्याकरण शब्द का अर्थ है—अशुद्ध शब्दादि से शुद्ध शब्दादि को अलग करना और उसके लिये नियम और कारण बतलाना।

व्याकरण के मुख्य तीन विभाग हैं—

वर्णविचार, शब्दविचार, वाक्यविचार।

वर्णविचार—व्याकरण के उस विभाग को कहते हैं जिसमें वर्णों के आकार, भेद, उच्चारण, मेल आदि का वर्णन होता है।

शब्दविचार—व्याकरण के उस विभाग को कहते हैं जिसमें शब्दों के भेद, रूप-परिवर्तन और व्युत्पत्ति आदि का वर्णन होता है।

वाक्यविचार—व्याकरण के उस विभाग को कहते हैं जिसमें वाक्य-भेद, वाक्य बनाने और वाक्य पृथक् करने की रीति तथा विरामचिह्न आदि का वर्णन होता है।

अभ्यास

भाषा किसे कहते हैं? गूंगों की तरह संकेतों द्वारा ही अपने विचार दूसरों पर प्रकट किये जा सकते हैं फिर भाषा की क्या आवश्यकता है? पशु-पक्षियों की भाषा होती है या नहीं? व्याकरण किसे कहते हैं? व्याकरण शब्द का क्या अर्थ है? व्याकरण के मुख्य कितने विभाग हैं प्रत्येक के लक्षण लिखो।

वर्णविचार

वर्ण या अक्षर

जिस मूल ध्वनि को कोई चिह्न प्रकट कर सकता है उसे वर्ण या अक्षर कहते हैं। जैसे—अ, क्, ल्, स्।

वर्णों के समूह को वर्णमाला या लिपि कहते हैं। हिन्दी भाषा की वर्णमाला देवनागरी लिपि कहलाती है।

वर्ण दो प्रकार के होते हैं—स्वर और व्यञ्जन।

देवनागरी लिपि के वर्ण ये हैं—

स्वर

अ आ इ ई उ ऊ ऋ (ॠ ऌ ॡ) ए ऐ ओ औ

व्यञ्जन

अनुस्वार अं (—), विसर्ग—अः (:)

क ख ग घ ङ   च छ ज झ ञ

ट ठ ड ढ ण   त थ द ध न

प फ ब भ म

य र ल व

श ष स ह

ॠ, ऌ, ॡ—इनका हिन्दी भाषा में प्रयोग नहीं होता।

प्रत्येक वर्ण के अन्त में 'कार' लगाने से उसी वर्ण का बोध होता है। जैसे—अकार, टकार, पकार, अर्थात् अ, ट, प, परन्तु 'र' के लिए 'रेफ' प्रयुक्त होता है, 'रकार' नहीं।

स्वर उन वर्णों को कहते हैं जो विना किसी की सहायता के बोले जा सकते हैं। जैसे—अ, इ, उ, आदि।

व्यञ्जन उन वर्णों को कहते हैं जो स्वरों की सहायता के विना नहीं बोले जा सकते। जैसे—क, ट, प।

इसीलिये वर्णमाला में अनुस्वार, विसर्ग तथा क, ख, आदि व्यञ्जनों को स्वर-सहित दिखाया गया है। क, ख आदि को स्वर-रहित दिखाने के लिये इनके नीचे तिरछी लकीर (्) लगा देते हैं। जैसे—क्, द्, स्।

अनुस्वार और विसर्ग भी व्यञ्जन हैं, क्योंकि वे भी स्वरों की सहायता के विना नहीं बोले जा सकते। इनमें और अन्य व्यञ्जनों में इतना भेद है कि स्वर इनके पहले आकर सहायक होते हैं, जैसे—अ+ ं=अं, अ+ः=अः; परन्तु अन्य व्यञ्जनों के पीछे आकर सहायक होते हैं, जैसे—क्+अ=क, न्+अ=न।

हिन्दी में 'ड' और 'ढ' की दो और ध्वनियां हैं जो नीचे विन्दी लगा कर प्रकट की जाती हैं। जैसे—पकड़, सड़क, घोड़ा, अकड़, मकड़ी, बाढ़।

स्वरों के भेद

(१) रचना के अनुसार स्वरों के दो भेद हैं—मूलस्वर और सन्धिस्वर।

जो किसी दूसरे स्वर से नहीं बनते उन्हें मूलस्वर कहते हैं। मूलस्वर चार हैं—अ, इ, उ, ऋ।

जो मूलस्वरों के मेल से बनते हैं उन्हें सन्धिस्वर कहते हैं। हिन्दी में सन्धिस्वर सात हैं—आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

अ+अ=आ, इ+इ=ई, उ+उ=ऊ, अ+इ=ए, अ+ए=ऐ, अ+उ=ओ, अ+ओ=औ।

(२) उच्चारण में लगने वाले समय के अनुसार स्वर तीन प्रकार के हैं—ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत।

'अ' के बोलने में जितना समय लगता है उसे मात्रा कहते हैं।

जिस स्वर के उच्चारण करने में एकमात्रा का समय लगता है, उसे ह्रस्व या एकमात्रिक कहते हैं। जैसे—अ, इ, उ, ऋ।

जिस स्वर के उच्चारण करने में ह्रस्व से दूना काल लगता है उसे दीर्घ या द्विमात्रिक कहते हैं। जैसे—आ, ई, ऊ, ए आदि।

जिस स्वर के उच्चारण करने में ह्रस्व से तिगुना समय लगता है उसे प्लुत या त्रिमात्रिक कहते हैं। हिन्दी में इसका प्रयोग केवल पुकारने या चिल्लाने में होता है। प्लुत प्रकट करने के लिये स्वर के आगे तीन (३) का चिह्न इच्छानुसार लगाया जाता है। जैसे—रमे३श रमेश३, दौड़ियो रे३, हाय मरा३, अरे दे३व।

(३) उच्चारण के अनुसार स्वर दो प्रकार के हैं—

अनुनासिक और अननुनासिक (अन् + अनुनासिक)

स्वर जब मुख और नासिका से बोले जाते हैं तब अनुनासिक कहलाते हैं। जैसे—दाँत, पहुँच, ऐंठ।

स्वर जब केवल मुख से बोले जाते हैं तब अननुनासिक कहलाते हैं। जैसे—आम, उचित, एक।

व्यञ्जनों के भेद

व्यञ्जन तीन प्रकार के हैं—स्पर्श, अन्तस्थ, ऊष्म।

क से लेकर म तक पचीस व्यञ्जन स्पर्श कहलाते हैं। य र ल व को अन्तस्थ कहते हैं। श ष स ह ऊष्म हैं।

स्पर्श—	क	ख	ग	घ	ङ	कवर्ग
	च	छ	ज	झ	ञ	चवर्ग
	ट	ठ	ड	ढ	ण	टवर्ग
	त	थ	द	ध	न	तवर्ग
	प	फ	ब	भ	म	पवर्ग
अन्तस्थ—	य	र	ल	व		
ऊष्म—	श	ष	स	ह		

अभ्यास

वर्ण किसे कहते हैं ? लिपि से क्या अभिप्राय है ? हिन्दी भाषा किस लिपि में लिखी जाती है ? स्वर और व्यञ्जन किसे कहते हैं ? सन्धिस्वर, अन्तस्थ, ऊष्म अक्षरों को लिखो। 'सन्तप्त' और 'बाल्यावस्था' शब्दों में कितने अक्षर हैं ?

स्थान और प्रयत्न

मुख के जिस भाग से जिस वर्ण का उच्चारण होता

है उसे उस वर्ण का स्थान कहते हैं।

कण्ठ—अ, आ, क, ख, ग, घ, ङ, ह, विसर्ग (:) —ये कण्ठ से बोले जाते हैं। इन्हें कण्ठ्य कहते हैं।

तालु—इ, ई, च, छ, ज, झ, ञ, य, श—ये तालु पर जीभ लगाने से बोले जाते हैं। इन्हें तालव्य कहते हैं।

मूर्धा—ऋ, (ॠ), ट, ठ, ड, ढ, ण, र, ष—ये मूर्धा पर जीभ लगाने से बोले जाते हैं। इन्हें मूर्धन्य कहते हैं।

ड़, ढ़—हिन्दी भाषा की इन दो ध्वनियों के उच्चारण में जिह्वा को मोड़ कर मूर्धा पर लगाते हुए, अन्दर ले जाने और फिर बाहर लाने से जिह्वा और मूर्धा का दो बार स्पर्श होता है, इसलिये इन्हें द्विस्पृष्ट कहते हैं। जैसे—घोड़ा, बाढ़।

दन्त—(ऌ, ॡ) त, थ, द, ध, न, ल, स—ये दाँतों (दन्त) पर जीभ लगाने मे बोले जाते हैं। इन्हें दन्त्य कहते हैं।

ओष्ठ—उ, ऊ, प, फ, ब, भ, म—ये ओष्ठ से बोले जाते हैं। इन्हें ओष्ठ्य कहते हैं।

दन्तोष्ठ—व—यह दन्त और ओष्ठ से बोला जाता है। इसे दन्तोष्ठ्य कहते हैं।

कण्ठतालु—ए, ऐ—ये कण्ठ और तालु से बोले जाते हैं। इन्हें कण्ठतालव्य कहते हैं।

कण्ठोष्ठ—ओ, औ–ये कण्ठ और ओष्ठ से बोले जाते हैं। इन्हें कण्ठोष्ठ्य कहते हैं।

नासिका—(ं) अनुस्वार—यह नासिका से बोला जाता है। इसे नासिक्य कहते हैं। (ँ) तथा ङ, ञ, ण, न, म—ये मुख तथा नासिका से बोले जाते हैं। इन्हें अनुनासिक कहते हैं।

प्रयत्न

वर्णों के उच्चारण में होने वाले व्यापार को प्रयत्न कहते हैं। प्रयत्न दो प्रकार का होता है—वर्णों के उच्चारण से पहले, आभ्यन्तर; वर्णों के उच्चारण से पीछे, बाह्य।

आभ्यन्तर प्रयत्न चार प्रकार के हैं—

विवृत, स्पृष्ट, ईषद्विवृत, ईषत्स्पृष्ट।

(क) स्वरों का विवृत प्रयत्न है। इनके उच्चारण में वागिन्द्रिय पूरी तरह खुलती है।

(ख) क से म तक वर्णों का स्पृष्ट प्रयत्न है। इनके उच्चारण में जिह्वा का भिन्न भिन्न स्थानों से पूरा स्पर्श होता है।

(ग) य, र, ल, व—इनका ईषद्विवृत प्रयत्न है। इनके उच्चारण में वागिन्द्रिय थोड़ी खुलती है।

(घ) श, ष, स, ह—इनका ईषत्स्पृष्ट प्रयत्न है। इनके उच्चारण में जिह्वा का थोड़ा स्पर्श होता है।

बाह्य प्रयत्न के दो भेद हैं—

अघोष और घोष। अघोष में श्वास (साँस) का और

घोष में नाद (शब्द) का प्रयोग होता है।

वर्गों के पहले और दूसरे अक्षरों (क ख, च छ, ट ठ, त थ, प फ) का और श ष स का अघोष प्रयत्न है।

सब स्वरों और शेष व्यञ्जनों का घोष प्रयत्न है।

बाह्य प्रयत्न के दो उपभेद हैं—अल्पप्राण और महाप्राण।

जिन वर्णों के उच्चारण में थोड़ा परिश्रम होता है उनका अल्पप्राण प्रयत्न होता है। वर्गों का पहला, तीसरा, पांचवां अक्षर, य र ल व, अनुस्वार (ं) और सब स्वर—इनका अल्पप्राण प्रयत्न है।

जिन वर्णों के उच्चारण में अधिक परिश्रम होता है उनका महाप्राण प्रयत्न है। वर्गों का दूसरा तथा चौथा अक्षर, श, ष, स, ह और विसर्ग (:)—इनका महाप्राण प्रयत्न है।

अभ्यास

स्थान और प्रयत्न किसे कहते हैं? आभ्यन्तर प्रयत्न तथा बाह्य प्रयत्न कितने प्रकार के हैं? ष, य, र, स, क, औ, घ, फ, श, ट, ख, अ, ऐ, अनुस्वार, व, ङ, ह—इनके स्थान बताओ? मूर्धन्य अक्षर लिखो। द्विस्पृष्ट अक्षर कौन कौन से हैं? ग, घ, र, स इनके आभ्यन्तर और बाह्य प्रयत्न बताओ। बाह्य प्रयत्न के उपभेद कौन कौन से हैं?

उच्चारण सम्बन्धी विशेष बातें

'अ' का अनुच्चारण

(१) अकारान्त शब्दों के अन्त वाले 'अ' का उच्चारण नहीं होता। जैसे—दिन, रात, राम, सफल।

अपवाद—नीचे लिखे स्थानों पर अन्त वाले 'अ' का पूरा उच्चारण होता है—

(क) आ, इ, ई, ऊ से परे आने वाले 'य' में—राय, तिय, परकीय, राजसूय।

(ख) संयुक्त अक्षर में—सन्त, सत्य, शुद्ध।

(ग) एकाक्षर शब्दों में—'ल' 'ख' (उसने 'क' लिखा)।

(घ) कविता में—हरित वन कुसुमित हैं द्रुम वृन्द।

(२) अकारान्त भिन्न शब्दों में तीन अक्षरों वाले शब्दों के दूसरे और चार अक्षरों वाले शब्दों के तीसरे वर्ण का 'अ' नहीं बोला जाता। जैसे—खेलना, पकड़ना।

(३) दो शब्दों से मिल कर बने हुए शब्दों में मूल शब्दों के अन्त का 'अ' नहीं बोला जाता। जैसे—रामनाथ, सोमदेव, बचपन।

ऐ, औ

(१) संस्कृत के शब्दों में 'ऐ' का उच्चारण 'अइ' और 'औ' का उच्चारण 'अउ' होता है। जैसे—तैल, ऐश्वर्य, कौतुक।

(२) हिन्दी के शब्दों में 'ऐ' का उच्चारण 'अय़' और 'औ' का उच्चारण 'अव़' सा होता है। जैसे—है, ऐसा, कौन।

ड ढ और ड़ ढ़

(१) शब्द के आदि में, संयोग में और अनुस्वार से परे 'ड, ढ' मूर्धन्य बोले जाते हैं। जैसे—डाक, डमरू, ढोल, बुड्ढा, मंडप।

(२) शब्द के मध्य में और अन्त में 'ड़ ढ़' द्विस्पृष्ट बोले जाते हैं।

जैसे—सड़क, चढ़ना, करोड़, पढ़ ।

क़, ख़, ग़, ज़, फ़

क़, ख़, ग़ का उच्चारण जीभ को जरा कण्ठ की ओर ले जाकर किया जाता है, जैसे—क़ौम, ख़त, ग़श । ज़ का उच्चारण दाँतों को कुछ बन्द कर वायु को जोर से निकालने से होता है, जैसे—ज़ुकाम, रोज़ । फ़ का उच्चारण निचले होंठ को ऊपर के दाँतों से लगाकर किया जाता है, जैसे—फ़ार्म, फ़ीस । (ये उच्चारण विदेशी हैं) ।

ज्ञ

'ज्ञ' का शुद्ध उच्चारण 'ज्यँ' है, परन्तु कुछ लोग 'ग्य' बोलते हैं ।

अनुस्वार (ं), अनुनासिक (ँ)

अनुस्वार (ं) केवल नाक से और अनुनासिक (ँ) मुख और नासिका से बोला जाता है । जैसे—संत, आँच ।

(१) आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ—इनके पीछे आने वाले अनुस्वार का उच्चारण अनुनासिक होता है । जैसे—आँच, ईंट, ऊँट, ऐंठ, जौं ।

(२) शब्दों के अन्त में ह्रस्व स्वर के पीछे आने वाले 'अनुस्वार' का उच्चारण 'म्' की तरह होता है । जैसे—एवं, सायं ।

स्वराघात या बल

किसी शब्द को बोलते समय उसके किसी स्वर पर औरों की अपेक्षा जो अधिक जोर डाला जाता है उसे स्वराघात या बल कहते हैं । प्रायः अनुच्चरित 'अ' वाले वर्ण से, संयुक्त व्यञ्जन से, अनुस्वार और विसर्ग से पहला स्वर जोर से बोला जाता है । जैसे—धन, अचल,

खटपट, वृद्ध, संत, दुःख।

अनेक अर्थों वाले शब्द का कहां क्या अर्थ लेना चाहिये यह स्वराघात से जाना जाता है। जैसे—'पढ़ा' शब्द के दो अर्थ हैं—'पढ़ लिया' भूतकाल और 'पढ़ाने की आज्ञा' विधि। 'पढ़ा' 'प' पर जोर देने से 'पढ़ लिया' अर्थ का पता चलता है। 'पढ़ा' 'ढ़ा' पर बल देने से 'पढ़ाने की आज्ञा' का बोध होता है।

अभ्यास

'अ' कहां बोला जाता है? 'सत्य' के 'य' में 'अ' का उच्चारण होता है या नहीं। 'ऐ' और 'औ' के ऐसे चार चार उदाहरण दो जिनमें इनका क्रम से 'अय्' और 'अउ' उच्चारण हो। 'ड़' और 'ढ' का उच्चारण कहां कहां होता है? स्वराघात किसे कहते हैं? उसका क्या प्रयोजन है? (ं) (ँ) इनको क्या कहते हैं?

———

लिखने की रीति

मात्राएँ और संयुक्त व्यञ्जन

(१) व्यञ्जनों के साथ मिलने पर 'अ' को छोड़ कर शेष सब स्वर अपने रूपों को छोड़ कर नीचे लिखे रूपों में बदल जाते हैं, इन्हें मात्राएं कहते हैं—

स्वर—	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ए	ऐ	ओ	औ
मात्राएं—	ा	ि	ी	ु	ू	ृ	ॄ	े	ै	ो	ौ

इ की मात्रा (ि) व्यञ्जन के पहले; आ, ई, ओ, औ की मात्राएं (ा, ी, ो, ौ) व्यञ्जन के पीछे; ए, ऐ की मात्राएं (े ै) व्यञ्जन के ऊपर और उ, ऊ, ऋ, ॠ की मात्राएं (ु ू ृ ॄ) व्यञ्जन के नीचे लगाई जाती हैं। जैसे—

का, कि, की, कु, कू, कृ, कॄ, के, कै, को, कौ

विशेष—व्यञ्जनों के पीछे ही आने वाले स्वर मात्राओं में बदलते हैं, पहले आने वाले नहीं। जैसे—आम, इस, ईश, उठ, ऊत, ऋण, ॠकार, एक, ऐश्वर्य, ओम्, औढर।

(२) र् में उ, ऊ, ऋ नीचे लिखे प्रकार से मिलाए जाते हैं—

र्	+	उ	=	रु	गरुड़
र्	+	ऊ	=	रू	कुरूप
र्	+	ऋ	=	ॠ	नैॠत

(३) दो प्रकार के वर्ण हैं—(ा) पाई वाले, जैसे—च, म, प आदि और बिना पाई के, जैसे—ट, ड, द आदि।

व्यञ्जनों के संयोग में यदि पहला व्यञ्जन पाई वाला हो तो पाई हटा देते हैं। जैसे—अच्छा, स्यार, स्याऊँ।

पाई रहित व्यञ्जनों को संयुक्त करने के लिए ऊपर नीचे लिखते हैं। जैसे—खट्टा, चिट्ठी।

(४) क्, च्, न्, ल्, ब्, श्—ये द्वित्व होने पर ऊपर नीचे और आगे पीछे दोनों प्रकार से लिखे जाते हैं। जैसे—पक्का पक्का, सच्चा सच्चा, सुन्न सुन्न, मल्ल मल्ल, डिब्बी डिब्बी, विश्व विश्व।

(५) कुछ संयुक्त अक्षर निम्नलिखित प्रकार से लिखे जाते हैं—

क्	+	त	=	क्त	भक्त
ङ्	+	क	=	ङ्क	अङ्क

त्	+	र	=	त्र	सुपुत्र
क्	+	ष	=	क्ष	राक्षस
ज्	+	ञ	=	ज्ञ	आज्ञा
त्	+	न	=	त्न	प्रयत्न
द्	+	ध	=	द्ध	सिद्ध
द्	+	व	=	द्व	द्वितीय
श्	+	र	=	श्र	श्रेणी
ह्	+	म	=	ह्म	ब्राह्मण
ह्	+	ल	=	ह्ल	प्रह्लाद

अ ग्र, ण ग, झ भ, श श—ये दो दो रूप वाले होते हैं।

(३) संयोग में र् यदि व्यञ्जन से पहले हो तो ऊपर (ˊ) लिखा जाता है; जैसे—धर्म=धर्म। पाई वाले व्यञ्जन के पीछे हो तो व्यञ्जन में (प्र) लिखा जाता है; जैसे—प्+र्+आ=प्रा, प्राण। पाई रहित व्यञ्जन के पीछे हो तो नीचे (‸) लिखा जाता है; जैसे—ट्+र्+अ= ट्र, राष्ट्र।

शुद्ध-अक्षर-योजना

शुद्ध-अक्षर-योजना के लिये नीचे लिखी बातें ध्यान में रखनी आवश्यक हैं—

१. 'अ' के साथ इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ की मात्राएं कभी नहीं जोड़नी चाहियें, ध्वनि के अनुसार एक ही स्वर ठीक होता है। जैसे—इस, ऊपर, एक। (अिस, अूपर, अेक अशुद्ध हैं)।

२. शब्दों में ह्रस्व 'इ' और दीर्घ 'ई' का प्रयोग ठीक ठीक करना चाहिये। 'वाला' या 'करने वाला' अर्थ वाले शब्द दीर्घ ईकारान्त होते हैं। जैसे—धनी, मानी, ज्ञानी, सुखी, लोभी, प्रमादी, अर्थात् धनवाला,

लोभ करने वाला, आदि । रीति, नीति, प्रीति, कृति, मति, बुद्धि, आदि भाववाचक 'ति' प्रत्ययान्त शब्दों के अन्त में ह्रस्व इकार होता है। इनके अतिरिक्त प्रायः स्त्रीलिङ्ग शब्दों के अन्त में दीर्घ 'ई' होता है; जैसे—भाभी, नानी, जेठानी, वाणी, देवी, दियासलाई, खटाई, खुदाई, दवाई, लिखाई, पढ़ाई । प्रायः पुल्लिङ्ग शब्दों के अन्त में ह्रस्व 'इ' होता है । जैसे—कवि, हरि, मुनि, कपि ।

३. 'औ' के स्थान पर 'ओ' नहीं लिखना चाहिये । जैसे—लाहौर, चौमासा । (लाहोर, चोमासा अशुद्ध है) ।

४. 'व' और 'ब' दो अक्षर पृथक् पृथक् हैं. इनका प्रयोग ठीक ठीक करना चाहिये । व्यवहार, व्यापार, विमला, विचार, वेद, विद्वान्, विहारी, वत्स, विवेक, वक्त, विज्ञान, वश, वन्दनीय, विमय, वन, वैराग्य आदि शब्दों में 'व' लिखा जाता है और बृहस्पति, ब्रह्म, बोध, बीभत्स, बालक, बछड़ा, बाग, बगुला, बग्घी, बात आदि शब्दों में 'ब' लिखा जाता है । (बिमला, बन, बैराग्य, ब्यापार, बेद, बन्दनीय, आदि और वृहस्पति, वीभत्स, वछड़ा, वग्घी आदि अशुद्ध हैं) ।

५. संयुक्त अक्षरों को पृथक् करके नहीं लिखना चाहिए और पृथक् अक्षरों को संयुक्त नहीं कर देना चाहिये। जैसे—यत्न, रत्न, भक्त प्रतिज्ञा उपर्युक्त, व्याकरण, परमात्मा, भूषण, सकता। (क्रिश्शन, मनुष, यतन, रतन, परतिग्या, उपरोक्त, ब्याकर्ण, प्रमात्मा, भूष्ण, सक्ता आदि अशुद्ध हैं) ।

६. संस्कृत के शब्दों को छोड़ कर अन्य शब्दों में 'उ' या 'ऊ' के बाद 'य' अथवा 'व' नहीं लिखा जाता । जैसे—हुई, हुआ, हुए, सूआ, छूआ, कूआँ । (हुयी, हुवी, हुया, हुवा, हुये, हुवे, सूया, छूया, छूवा, कूयां, कूवां अशुद्ध हैं) ।

७. क्रिया के अन्त में 'ए' अथवा 'ये' दोनों लिखे जाते हैं । जैसे—लिए, लिये; गए, गये; लिखिए, लिखिये ।

८. एक शब्द में एक अर्थ वाले दो शब्दांश नहीं लगाये जाते। जैसे—पूज्य, आवश्यक, आरोग्य, आलस्य, यौवन, चातुर्य, सौजन्य, लाघव, शुद्धता, दुष्टता, षष्ठ। (पूज्यनीय, आवश्यकीय, आरोग्यता, आलस्यता, यौवनता, चातुर्यता, सौजयन्ता, लाघवता, शुद्धताई, दुष्टताई, षष्ठम अशुद्ध हैं)।

९. 'निर्दय' आदि शब्दों के पीछे 'जिसके' या 'जिसमें' या 'वाला' आदि अर्थों को प्रकट करने वाला 'ई' नहीं लगाया जाता; क्योंकि ऐसे शब्द बिना ही 'ई' के 'जिसके' आदि अर्थों को प्रकट करते हैं। जैसे—निर्दय, निर्धन, कृतघ्न, निरपराध, अर्थात् 'नहीं है दया जिसमें' आदि। (निर्दयी, निर्धनी, कृतघ्नी, निरपराधी अशुद्ध हैं)।

१०. 'ढ़' के स्थान पर 'ड़' नहीं प्रयुक्त करना चाहिये। जैसे—ओढ़ना, पढ़ना, चढ़ना, सिंहगढ़। (ओड़ना, पड़ना, चड़ना, सिंहगड़ अशुद्ध हैं)।

११. 'श, ष' और 'न, ण' को यथास्थान लिखना चाहिये। जैसे—शोभा, शोक, ईश, कपीश, निश्चिंत; सन्तोष, विशेषण, निषेध, षडानन; जन, पानी, जननी, जानकी, सुन; प्रण, रामायण, गणना। प्रायः 'ष' के बाद 'ण' आता है, जैसे—कृष्ण, विष्णु और 'श' के बाद 'न' आता है, जैसे—प्रश्न, दर्शन।

१२. केवल महान् आदि शब्दों का तथा 'वाला' अर्थ वाले शब्दों का ही अन्तिम 'न' हल् करना चाहिये। जैसे—महान्, हनुमान्, विद्वान्, मतिमान्, ज्ञानवान्, भगवान्। अन्य शब्दों का अन्तिम 'न' कभी भी हल् नहीं करना चाहिये। जैसे—शोभायमान, विद्यमान, सम्मान, प्रमाण, बेईमान, अपमान, (शोभायमान्, विद्यमान् आदि अशुद्ध हैं)।

१३. जिन शब्दों के आदि में संयुक्त 'स्' हो उनके पहले अपनी ओर से 'इ' आदि नहीं लगाना चाहिये। जैसे—स्कूल, स्त्री, स्टेशन।

(इस्कूल, इस्त्री, इस्टेशन अशुद्ध हैं)।

१४. 'ड़' और 'ल' के स्थान में 'र' नहीं प्रयुक्त करना चाहिये। जैसे—घोड़ा, सड़क, गिर पड़ती, तलवार। (घोरा, सरक, गिर परति, तरवार अशुद्ध हैं)।

१५. ह्रस्व, दीर्घ आदि को शुद्ध बोलने से शुद्ध लिखने में बड़ी सहायता मिलती है; इसलिये ह्रस्व, दीर्घ आदि का सदा शुद्ध उच्चारण करना चाहिये। जैसे—अधीन, आनन्द। (आधीन, अनन्द अशुद्ध हैं)।

अभ्यास के लिये कुछ और शुद्ध शब्द दिये जाते हैं—

अक्षर	आह्लाद	कृतज्ञ	छत्र
अग्नि	उच्चारण	कृतघ्न	छात्र
अध्ययन	उत्थान	कृपण	जवाब
अध्याय	उत्साह	कृपाण	ज्ञान
अपेक्षा	उद्दण्ड	कृषि	ज्यों
अभियुक्त	उद्देश्य	क्रम	तन्त्र
अमृतसर	उन्माद	क्रोध	तपस्वी
अर्क	उपेक्षा	क्लेश	तुम्हारी
अर्थ	उष्ण	क्षण	तृप्ति
अर्ध	इत्यादि	कार्य	तृष्णा
अर्पण	इन्द्र	गणित	दीर्घ
असमर्थ	ऐक्य	गृह	दुर्गति
अस्थि	ओर	ग्यारह	दृश्य
आचार्य	और	ग्रन्थ	द्रोणाचार्य
आज्ञा	कम्बल	ग्रह	ध्रुव
आशा	कर्ण	चन्द्र	नवाब
आश्रय	कर्म	चूर्ण	नारायण

निद्रा	प्रस्थान	यद्यपि	शुक्ल
निपुण	प्रेम	यन्त्र	शुल्क
निर्मल	प्रौढ़	युग	सत्कार
न्याय	प्लुत	युवावस्था	सम्मति
पत्र	बन्धु	रक्त	सुरेन्द्र
पद्य	बहुत	रण	स्तुति
पद्म	बहू	रावण	सन्तान
पराक्रम	बाढ़	लक्षण	संन्यासी
पूर्ण	बाधा	लक्ष्मण	सम्मुख
पृथिवी	बाल	लक्ष्मी	प्रात:काल
पृथ्वी	भूल	लग्न	सम्राट्
प्रकार	भक्षण	लड्डू	साधारण
प्रकाश	भगवद्भक्ति	वर्ष	सामग्री
प्रचार	भयानक	वर्षा	स्नान
प्रताप	भस्म	वश	स्वर्ग
प्रतिज्ञा	मग्न	वाणिज्य	स्वागत
प्रत्यक्ष	मन्त्र	वार्ता	स्वतन्त्र
प्रधान	महत्ता	विद्यालय	स्वादिष्ट
प्रणाम	महर्षि	विद्वत्ता	स्वदेश
प्रभाव	महेन्द्र	विलम्ब	स्वाधीन
प्रमाद	मुंह	विश्व	स्वास्थ्य
प्रयत्न	मूर्ख	विह्वल	हमारी
प्रवीण	मूर्ति	व्रत	हानि
प्रसाद	यक्ष	शक्ति	हिन्दी
प्रसन्न	यज्ञ	श्मशान	ह्रस्व

अभ्यास

इ, उ, ऋ, ऐ, ओ की मात्राएं बताओ।

र् में उ, ए् में इ, और च् में अ मिलाओ।

क्+ष, त्+र, ज्+ञ, त्+म+य, च्+छ्+व, र्+द्+ध, स्+त्+र, ङ्+क+त को संयुक्त करके दो दो शब्द लिखो।

त्त और क्त में कौन कौन से अक्षर हैं ?

पहले लिखे शब्दों का पाँच पाँच बार उच्चारण करो।

निम्नलिखित अशुद्ध शब्दों के शुद्ध रूप लिख कर दस दस बार शुद्ध उच्चारण करो—

अग्नी, व्याकर्न, प्रमातमा, परतिग्या, भगत, परभाव, चूरन, इंदर, लछमी, रतन, भूष्ण, परभाकर, असनान, किरपान, इस्त्री, इस्कुल, घोरा, अनन्द, नवाव, वकत, परसन्न, चन्दर, दोरति, है, हुवा, हुये, लिखिअे, लच्छमन, कुशल्या, क्रतघ्नी, निर्दयी, निरपराधी, अम्रत्सर, वौहत, आधीन, स्वात्माधीन, कुशलताई, वृहस्पति, धनि, प्रीती, हीन्दि, पढ़ाइ, मुनी, बन, अभियुकत, अरक, अरथ, अस्मर्थ, आसरे, उतसाह, तुमारी, हम्हारी, दीरघ, नरायण, निंद्रा, पूरन, परकाश, भ्यानक, मूंढ, बिवेक, जूँ तूँ, करिके, स्वासथ्य।

———

शब्दविचार

पहला अध्याय

शब्द

जो सुनाई देता है उसे शब्द कहते हैं। शब्द दो प्रकार का होता है—अव्यक्त और व्यक्त।

१. ध्वन्यात्मक या अव्यक्त—जिसमें वर्ण स्पष्ट नहीं सुनाई देते। जैसे—ढोल का ढमाढम शब्द, घोड़े का हिनहिनाना।

२. वर्णात्मक या व्यक्त—जिसमें वर्ण स्पष्ट सुनाई देते हैं। जैसे—इस, मोहन, सिंह, भालु।

ध्वन्यात्मक शब्द का अनुकरण करके उस ध्वनि से मिलता जुलता कोई शब्द निश्चित कर लिया जाता है। ऐसे शब्द वर्णात्मक भेद में आजाते हैं। जैसे—खटखट मत कर। चौकी आदि पर कलम या लकड़ी आदि मारने से जो ध्वनि निकलती है उसका नाम 'खटखट' रख लिया गया है। ये शब्द अनुकरणवाचक भी कहलाते हैं।

वर्णात्मक शब्दों के दो भेद होते हैं—सार्थक और निरर्थक। सार्थक शब्द वे हैं जिनसे किसी अर्थ का बोध होता है। जैसे—'पानी' शब्द से एक तरल पदार्थ का बोध होता है। निरर्थक शब्द वे हैं जिनसे किसी अर्थ का बोध नहीं होता। जैसे—ऊटपटांग। व्याकरण में सार्थक शब्दों पर ही विचार किया जाता है।

हिन्दी भाषा का शब्द भण्डार

हिन्दी भाषा में चार प्रकार के शब्द हैं—

तत्सम, तद्भव, देशी, विदेशी।

(१) तत्सम—जो शब्द संस्कृत के समान ही हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं उन्हें तत्सम कहते हैं। जैसे—नदी राजा, प्रभु।

(२) तद्भव—जो शब्द संस्कृत के शब्दों से कुछ बिगड़ कर हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं उन्हें तद्भव कहते हैं। जैसे—खेत, दूध, हाथ। [संस्कृत—क्षेत्र, दुग्ध, हस्त]।

(३) देशी—जिनका स्वरूप संस्कृत के शब्दों से नहीं मिलता तथा जो भारत की भिन्न भिन्न बोलियों से आए हैं वे देशी कहलाते हैं। जैसे—पेट, रोड़ा, पगड़ी।

(४) विदेशी—जो शब्द अंग्रेजी, अरबी, फारसी आदि विदेशी भाषाओं से लिये गए हैं। जैसे—स्टेशन, इम्तिहान, चाकू, अक्ल।

शब्दों की व्युत्पत्ति

व्युत्पत्ति के अनुसार शब्दों के तीन भेद हैं—

रूढ़, यौगिक, योगरूढ़।

रूढ़—जिन शब्दों के खण्ड सार्थक न हों। जैसे—जल, घोड़ा, बैल। इनके ज, ल; घो, ड़ा; बै, ल—इन खण्डों

का कोई अर्थ नहीं, इसलिये ये रूढ़ अर्थात् किसी के लिये प्रसिद्ध शब्द हैं।

यौगिक—जिनके खण्ड सार्थक हों। जैसे—जल-वाला, घुड़सवार, बैलगाड़ी। इनके जल, वाला; घुड़, सवार; बैल, गाड़ी—ये खण्ड सार्थक हैं, इसलिये ये यौगिक अर्थात् मेल से बने हुए शब्द हैं।

योगरूढ़—जो शब्द यौगिक होने पर भी किसी विशेष अर्थ में प्रसिद्ध हों। जैसे—पंकज, अर्थात् कीचड़ से पैदा होने वाला=कमल। कीचड़ से तो कीड़े आदि भी पैदा होते हैं, परन्तु उन्हें पंकज नहीं कहा जाता, इसलिये यह यौगिक होते हुए भी रूढ़ होने के कारण योगरूढ़ शब्द है।

शब्दों का रूपान्तर

कुछ शब्दों के रूपों में परिवर्तन होता है और कुछ शब्दों के रूपों में परिवर्तन नहीं होता, इसलिये—

रूपपरिवर्तन या रूपान्तर के अनुसार शब्दों के दो भेद होते हैं—विकारी और अविकारी।

(१) लिंग, वचन, कारक आदि के अनुसार जिन शब्दों के रूप बदल जाते हैं वे विकारी कहलाते हैं। जैसे—

घोड़ा—घोड़ी, घोड़े, घोड़ों को।
मैं—हम, मुझे, हममें, हमारा।
बुरा—बुरी, बुरे, बुरों से।
लिख—लिखती, लिखते, लिखा, लिखे।

(२) जिन शब्दों के रूप नहीं बदलते वे अविकारी कहलाते हैं। जैसे—

अब, तक, और, हाय।

शब्दों का प्रयोग

भाषा का मुख्य अङ्ग वाक्य शब्दों से बनता है, इसलिए शब्दों को वाक्यखण्ड कहते हैं। वाक्य में प्रत्येक शब्द का किसी न किसी अर्थ के लिये प्रयोग होता है, अतः—

प्रयोग के अनुसार शब्दों के आठ भेद हैं—

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रियाविशेषण, सम्बन्धबोधक, योजक, द्योतक।

संज्ञा—वस्तु, व्यक्ति, स्थान आदि के नाम बताने वाले शब्द—हाथी, पुस्तक, पर्वत, सत्यदेव।

सर्वनाम—संज्ञा के स्थान में प्रयुक्त होने वाले शब्द—तू, मैं, कौन।

विशेषण—वस्तु, व्यक्ति, स्थान आदि की विशेषता बताने वाले शब्द—सुन्दर, मीठा, लाल, छोटा।

क्रिया—व्यापार का बोध कराने वाले शब्द—जाता है, पकाता था, मारेगा, पढ़िये।

क्रियाविशेषण—क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द—शीघ्र, धीरे।

सम्बन्धबोधक—शब्दों के पीछे आकर उनका वाक्य के अन्य शब्दों से सम्बन्ध बतलाने वाले शब्द—तक, पर। (पाठशाला तक, घर पर)।

योजक—दो शब्दों या वाक्यों को जोड़ने वाले शब्द—और, या, अथवा, परन्तु। इन्हें समुच्चयबोधक भी कहते हैं।

द्योतक—आश्चर्य, हर्ष, दुःख, लज्जा, घृणा आदि भाव प्रकट करने

वाले शब्द—ओह ! हाय ! छिः ! वाह वाह ! धिक् ! इन्हें विस्मयादि-बोधक भी कहते हैं।

इनमें से संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया के रूपों में परिवर्तन होता है, इसलिये ये चार विकारी हैं और क्रियाविशेषण, सम्बन्धबोधक, योजक, द्योतक के रूपों में परिवर्तन नहीं होता, इसलिये ये चार अविकारी हैं।

अभ्यास

शब्द किसे कहते हैं ? अनुकरणवाचक शब्द से क्या अभिप्राय है ? सोदाहरण लिखो। हिन्दी भाषा का शब्द भण्डार कितने प्रकार के शब्दों से पूर्ण है ? प्रत्येक के दो दो उदाहरण दो। व्युत्पत्ति, रूपान्तर और प्रयोग के अनुसार शब्दों के कितने कितने भेद हैं ? उदाहरण सहित समझाओ। निम्नलिखित शब्द व्युत्पत्ति, रूपान्तर और प्रयोग के अनुसार किस किस भेद के अन्तर्गत हैं—

चारपाई, नैनसुख, रमेश, उफ्, लाल, सत्य, ठीक, पीला, तक, पर, यद्यपि, विद्यालय, तालाब, क्या, वह, मैं।

दूसरा अध्याय

संज्ञा के भेद

संज्ञा शब्द तीन प्रकार के होते हैं—

व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक।

व्यक्तिवाचक—जिस संज्ञा से किसी एक ही व्यक्ति या वस्तु का बोध होता है उसे व्यक्तिवाचक कहते हैं।

जैसे—सामवेद, प्रताप, लाहौर, रावी, भारतवर्ष, एशिया। इनसे एक ही पुस्तक, एक ही व्यक्ति, एक ही नदी, एक ही देश और एक ही महाद्वीप का बोध होता है, सब का नहीं।

व्यक्तिवाचक संज्ञाएं सुविधा के लिये रखे हुए पदार्थों के नाम होते हैं, इनका अर्थ प्रायः घटता नहीं, जैसे—'कृष्ण' किसी सफेद व्यक्ति का नाम भी रख लिया जाता है, परन्तु कुछ संज्ञाओं में अर्थ घट भी जाता है, जैसे— हिमालय, = 'बर्फ का घर' सार्थक है। इसी प्रकार परमेश्वर, चन्द्र, ब्रह्माण्ड आदि व्यक्तिवाचक संज्ञाएं सार्थक हैं।

जातिवाचक—जिस संज्ञा से एक जाति के सब पदार्थों का बोध होता है उसे जातिवाचक कहते हैं। जैसे—पशु, पर्वत, नदी, बालक, पुस्तक, सभा। पशु, पर्वत आदि संज्ञाओं से सब पशुओं, सब पर्वतों आदि का बोध होता है।

भाववाचक—जिस संज्ञा से पदार्थों के गुण, दोष, व्यापार, आदि धर्मों का बोध होता है उसे भाववाचक कहते हैं। जैसे—पशुत्व, मिठास, लाली, दौड़, दुःख, कमी, भय, सत्य, विद्या, व्याकरण, गणित, दिन, रात, वर्ष। पशुत्व आदि पशु आदि के धर्म हैं, विद्या आदि बुद्धि के धर्म हैं और दिन, रात आदि पृथ्वी के धर्म हैं।

(स्पर्श न हो सकने वाले अर्थ को बताने वाली संज्ञा भाववाचक होती है)

(क) जातिवाचक संज्ञाएं जब सारे पदार्थों को न बतला कर एक ही पदार्थ का बोध कराती हैं तब वे

व्यक्तिवाचक बन जाती हैं। जैसे—

पुरी (जगन्नाथ पुरी), गान्धी (महात्मा गान्धी), संवत् (विक्रमी संवत्), मालवीय (मदनमोहन मालवीय)।

वैसे ये चारों संज्ञाएं जातिवाचक हैं, क्योंकि ये सब शहरों, सब वार्षिकगणनाओं सब गान्धी और मालवीय जाति के व्यक्तियों की वाचक हैं।

(ख) व्यक्तिवाचक संज्ञाएं जब किसी एक ही व्यक्ति को न बतला कर उसके विशेष गुणों से युक्त कई व्यक्तियों का बोध कराती हैं तब वे जातिवाचक बन जाती हैं। जैसे—हे प्रभु, हमारे घरों में भी सीताएं उत्पन्न हों (सीता जैसे गुणों वाली कन्याएं)। आजकल आर्यों में कितने शिवाजी हैं (शिवाजी के समान वीर और नीतिज्ञ)।

(ग) भाववाचक संज्ञाएं जब पदार्थों के धर्मों को न बतला कर पदार्थों का बोध कराती हैं तब वे जातिवाचक बन जाती हैं। जैसे—सब पहरावे ट्रंक से निकाल कर गठरी में बांध लो। (पहरने के वस्त्र)।

(घ) कभी कभी दूसरे शब्द संज्ञा के समान प्रयुक्त होते हैं। जैसे—विशेषण—बड़ों का आदर कर। छोटों को क्षमा कर। क्रियाविशेषण—यहां के लोग सुखी हैं। उसका बाहर भीतर एक सा है। द्योतक—इस हाय हाय से कुछ न होगा।

भाववाचक संज्ञाओं की उत्पत्ति

भाववाचक संज्ञाएं तीन प्रकार के शब्दों से बनती हैं—

(१) जातिवाचक संज्ञा से—लड़का से लड़कपन। पशु से पशुता। शत्रु से शत्रुता। चोर से चोरी।

(२) विशेषण से—मूर्ख से मूर्खता। खट्टा से खटाई। सुन्दर से सुन्दरता। कम से कमी।

(३) क्रिया से—लड़ना से लड़ाई। लिखना से लेख। लेना देना से लेन देन। उभरना से उभार।

अभ्यास

संज्ञा किसे कहते हैं? संज्ञा के भेद उदाहरण सहित लिखो। व्यक्तिवाचक संज्ञा जातिवाचक कब हो जाती है? भाववाचक संज्ञाएं कितने प्रकार के शब्दों से बनती हैं? उदाहरण सहित लिखो। निम्नलिखित संज्ञाएं किस किस भेद की हैं—तिलक, गोखले, मास, न्याय, यजुर्वेद, छत्रसाल, दवात, सूर्य, अहंकार। आगे लिखे शब्दों की भाववाचक संज्ञाएं बनाओ—हम, जड़, देखना, पण्डित, मीठा, प्रभु, लोभी, विश्वस्त, महान्, वृद्ध, घूमना, सेकना, पतित, बालक, खट्टा, कृपण, बूढ़ा, चिकना, बनाना, गुरु, धार्मिक।

तीसरा अध्याय
संज्ञा-विकार

संज्ञाओं के रूपों में लिंग, वचन और कारक के अनुसार विकार होता है।

लिङ्ग

शब्द पुरुष जाति का बोधक है या स्त्री जाति का

यह जिससे जाना जाय उसे लिङ्ग कहते हैं। लिङ्ग दो हैं—पुल्लिंग और स्त्रीलिङ्ग।

पुरुषजाति बोधक शब्दों को पुल्लिंग कहते हैं। जैसे—पिता, राजा, लड़का, घोड़ा।

स्त्रीजाति बोधक शब्दों को स्त्रीलिंग कहते हैं। जैसे—माता, रानी, लड़की, घोड़ी।

संस्कृत और अंग्रेजी में नपुंसकलिङ्ग भी होता है, परन्तु हिन्दी में नहीं होता।

लिङ्ग की पहचान के कुछ नियम

(१) प्राणिवाचक संज्ञाएं पुरुष का बोध कराएं तो पुल्लिंग और स्त्री का बोध कराएं तो स्त्रीलिंग होती हैं। जैसे—

पुल्लिङ्ग——चाचा, सिंह, घोड़ा, बालक।
स्त्रीलिङ्ग—चाची, सिंहनी, घोड़ी, बालिका।

(२) कई प्राणिवाचक संज्ञाओं से पुरुष और स्त्री (नर और मादा) दोनों का बोध होता है, पर वे केवल पुल्लिंग या केवल स्त्रीलिंग होती हैं। जैसे——

केवल पु०—चीता, उल्लू, खटमल, भेड़िया, गेंडा, तोता।
केवल स्त्री०—मक्खी, मैना, कोयल, चील, गिलहरी, जोंक।

(३) प्राणियों के समूहों को बतलाने वाली संज्ञाएं व्यवहार के अनुसार पुल्लिंग या स्त्रीलिंग होती हैं। जैसे—

पु०—संघ, मण्डल, दल, समूह, झुण्ड, ठट्ठ।
स्त्री०—टोली, समिति, सभा, प्रजा, भीड़, फौज।

(४) प्रायः मोटी, बेढंगी, भारी वस्तुओं के नाम पुल्लिंग और पतली, छोटी, हलकी वस्तुओं के नाम स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे—

पु०—लट्ठ, लक्कड़, गड्ढा, रस्सा, कोल्हू, हल।
स्त्री०—लाठी, लकड़ी, गाड़ी, रस्सी, चक्की, सूई।

(५) हिन्दी में प्रयुक्त होने वाले संस्कृत के पुल्लिंग तथा नपुंसकलिंग शब्द प्रायः पुल्लिंग होते हैं और स्त्रीलिंग शब्द प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे—

पु०—सदाचार, देश, कार्य, ज्ञान।
स्त्री०—कान्ता, दिशा, लता, प्रभुता।

(६) संस्कृत के कुछ पुल्लिंग और नपुंसकलिंग शब्द हिन्दी में स्त्रीलिंग प्रयुक्त होते हैं और कुछ स्त्रीलिंग शब्द पुल्लिंग प्रयुक्त होते हैं। जैसे—

स्त्री०—सन्तान, विधि, मृत्यु, आयु, इन्द्रिय, वस्तु।
पु०—देवता।

(७) फारसी शब्दों का हिन्दी में वही लिंग होता है, जो उनका फारसी में होता है। जैसे—

पु०—बाग, गुलाब, जोश, दगा।
स्त्री०—हवा, कलम, ताजगी, बदबू।

(८) हिन्दी में प्रयुक्त होने वाले अंग्रेजी के शब्द व्यवहार के अनुसार पुल्लिंग या स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे—

पु०—स्कूल, बूट, सोडा, कैमरा।

स्त्री०—पैंसिल, फीस, चिमनी, लायब्रेरी।

(९) जिन भाववाचक शब्दों के अन्त में आ, आव, पा, पन, न हों वे पुल्लिंग होते हैं और जिनके अन्त में आई, वट, हट, ति हों वे स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे—

पु०——लोटा, बहाव, बुढ़ापा, बालकपन, लेन देन।

स्त्री०—लिखाई, दिखावट, चिल्लाहट, नीति।

(१०) इ, ई, ऋ, ॠ, ऌ, ॡ स्त्रीलिंग और शेष सब वर्ण पुल्लिंग होते हैं।

(११) ग्रह, धातु, रत्न, वृक्ष, अन्न, और द्रव पदार्थों के नाम कुछ एक को छोड़ कर पुल्लिंग होते हैं। जैसे——

पु०—सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध (ग्रह); सोना, तांबा, पीतल, लोहा (धातु); हीरा, मोती, मूंगा, लाल, पन्ना, (रत्न); पीपल, वट, देवदारु, अशोक, तमाल (वृक्ष), गेहूं, चावल, जौ, चना, बाजरा (अन्न); पानी, सिरका, तेल, घी (द्रव पदार्थ)।

स्त्री०—पृथ्वी (ग्रह); चांदी, धातु, (धातु); नीम, इमली (वृक्ष); ज्वार, मक्का, अरहर, मूंग (अन्न); स्याही, मसि (द्रव पदार्थ)।

(१२) वार, मास और पर्वतों के नाम पुल्लिंग और तिथि, नक्षत्र और नदियों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे—

पु०—सोमवार, मंगलवार आदि (वार); चैत्र, बैसाख आदि (मास); सतपुड़ा, सुलेमान आदि (पर्वत)।

स्त्री०—प्रतिपदा, अमावस्या, पूर्णिमा आदि (तिथियां); चित्रा, कृत्तिका, अश्विनी आदि (नक्षत्र); रावी, गंगा, यमुना, आदि (नदियां)।

(१३) कुछ शब्द दोनों लिंगों में प्रयुक्त होते हैं। जैसे—

पवन, बर्फ, श्वास, गेंद, आत्मा, समाज, चलन। इन्हें उभय-लिङ्ग कहते हैं।

पुल्लिङ्ग शब्दों से स्त्रीलिङ्ग बनाने के नियम

ई, इया, इन, नी, आनी, आइन प्रत्यय लगाने से पुल्लिंग शब्द स्त्रीलिंग बन जाते हैं। जैसे—

(१) अकारान्त और आकारान्त शब्दों के अन्तिम 'अ' या 'आ' को 'ई' हो जाता है। जैसे—

पुत्र	पुत्री	मामा	मामी
देव	देवी	लड़का	लड़की
गीदड़	गीदड़ी	चाचा	चाची

(२) कुछ शब्दों के अन्तिम 'आ' को 'इया' हो जाता है और पहला स्वर ह्रस्व हो जाता है। जैसे—

कुत्ता	कुतिया	बेटा	बिटिया
चूहा	चुहिया	लोटा	लुटिया

(३) व्यापारिवाचक शब्दों के तथा 'नाती' और 'ईसाई' शब्दों के अन्त वाले स्वर को 'इन' हो जाता है। जैसे—

कहार	कहारिन	माली	मालिन
जुलाहा	जुलाहिन	धोबी	धोबिन
कसेरा	कसेरिन	नाइ	नाइन
नाती	नातिन	ईसाई	ईसाइन

(४) कुछ शब्दों में 'नी' प्रत्यय लगता है। जैसे—

सिंह	सिंहनी	बाघ	बाघनी
जाट	जाटनी	मोर	मोरनी

(५) उपनामवाचक शब्दों के अन्तिम स्वर को 'आइन'

हो जाता है और यदि पहला स्वर दीर्घ हो तो ह्रस्व हो जाता है। जैसे—

पाण्डे	पण्डाइन	दूबे	दुबाइन
बाबू	बबुआइन	ठाकुर	ठकुराइन

परन्तु 'ओझा' का 'ओझाइन' ही बनता है 'उझाइन' नहीं।

(६) कई शब्दों के अन्तिम स्वर को 'आनी' हो जाता है। जैसे—

देवर	देवरानी	खत्री	खत्रानी
जेठ	जेठानी	मेहतर	मेहतरानी
सेठ	सेठानी	नौकर	नौकरानी
चौधरी	चौधरानी	मुगल	मुगलानी
रुद्र	रुद्राणी	इन्द्र	इन्द्राणी

'जेठ' का 'जिठानी' और 'चौधरी' का 'चुधरानी' भी होता है।

(७) कुछ तत्सम शब्दों में अन्तिम 'अ' को 'आ' हो जाता है। जैसे—

बाल	बाला	पंडित	पंडिता
प्रिय	प्रिया	शूद्र	शूद्रा
मूर्ख	मूर्खा	सुत	सुता

(८) 'अक' अन्त वाले शब्दों के 'अक' को 'इका' हो जाता है। जैसे—

लेखक	लेखिका	पाठक	पाठिका
बालक	बालिका	गायक	गायिका

(९) कई शब्दों के स्त्रीलिंग भिन्न होते हैं। जैसे—

पिता	माता	भाई	बहिन
पुरुष	स्त्री	राजा	रानी
वर	वधू	नर	मादा

स्त्रीलिंग शब्दों से पुल्लिंग बनाने के नियम

स्त्रीलिंग शब्दों में आ, उआ, ओई, आव लगाने से वे पुल्लिंग बनते हैं। जैसे—

भैंस	भैंसा	बहन	बहनोई
रांड	रंडुआ	बिल्ली	बिलाव

अभ्यास

लिङ्ग किसे कहते हैं? लिङ्ग पहचानने के मुख्य नियम क्या हैं? कौन से शब्द केवल स्त्रीलिंग या केवल पुल्लिङ्ग होते हैं? पांच उभयलिङ्ग शब्द लिखो। पुल्लिग से स्त्रीलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग से पुल्लिङ्ग बनाने के नियम लिखो।

निम्नलिखित शब्दों में लिङ्गपरिवर्तन करो—

पाचक, बिल्ली, रुद्र, वधू, सुत, सेठानी, बाबू, पुत्री, नाई, राजपूत, श्रीमान्, इन्द्र, बहिन, सिंह, विद्वान्।

निम्नलिखित शब्दों के लिङ्ग बताओ—

दादा, शूद्रा, पशुता, देवता, समर, कमर, घास, मास, रमा, आत्मा, चरण, शरण, तराजू, बाजू, मोम, रोम, मनीषी, विदुषी, मोरनी, दानी, फूल, भूल, उड़िया, गुड़िया, बिलाव।

वचन

संज्ञा आदि विकारी शब्दों के जिस रूप से संख्या का

बोध होता है उसे वचन कहते हैं। हिन्दी में वचन दो हैं—एकवचन और बहुवचन।

संस्कृत में द्विवचन भी होता है, परन्तु हिन्दी में नहीं होता।

विकारी शब्द के जिस रूप से एकत्व का बोध होता है उसे एकवचन कहते हैं। जैसे—

बालिका हँसती है। बालक खेलता है। घोड़ा दौड़ता है।

विकारी शब्द के जिस रूप से एक से अधिक पदार्थों का बोध होता है उसे बहुवचन कहते हैं। जैसे—

बच्चे जाते हैं। लड़कियां पढ़ती हैं। पत्ते हिलते हैं।

आदर के लिए एकवचन के स्थान में बहुवचन आता है। जैसे—

हरिश्चन्द्र बड़े दानी थे। महात्मा गान्धी बड़े त्यागी हैं। रमेशचन्द्र बड़े विद्वान् हैं।

जातिवाचक शब्दों में बहुवचन के स्थान में एकवचन भी प्रयुक्त होता है। जैसे—

मनुष्य बड़ा स्वार्थी जीव है। लंगड़ा आम बहुत मीठा होता है। मारवाड़ियों के पास बहुत रुपया है।

संज्ञाओं में वचन के अनुसार होने वाला विकार दो प्रकार का है। (१) विभक्तिरहित—'ने, को, में' आदि चिन्हों के बिना, और (२) विभक्तिसहित—'ने, को, में' आदि चिन्हों के सहित।

विभक्तिरहित बहुवचन बनाने के नियम

(१) आकारान्त पुल्लिंग शब्दों के 'आ' को 'ए' हो जाता है। जैसे—

लड़का	लड़के	पहिया	पहिये	जोड़ा	जोड़े
घोड़ा	घोड़े	लोटा	लोटे	पेड़ा	पेड़े
भानजा	भानजे	बेटा	बेटे	भतीजा	भतीजे

अपवाद—निम्नलिखित आकारान्त शब्दों के रूप बहुवचन में नहीं बदलते—

नाना, दादा, मामा, काका आदि सम्बन्धवाचक।

जावा, सुमात्रा, एशिया, ब्रह्मा आदि देशवाचक।

चन्द्रमा, राजा, पिता, कर्ता आदि संस्कृत के सकारान्त, नकारान्त और ऋकारान्त शब्द जो हिन्दी में आकारान्त हो जाते हैं।

(२) अकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के अन्तिम 'अ' को 'एं' हो जाता है। जैसे—

पुस्तक	पुस्तकें	बहिन	बहिनें	रात	रातें
बोतल	बोतलें	बात	बातें	आंख	आंखें

(३) आकारान्त पुल्लिंग संज्ञाओं को छोड़ शेष पुलिंग संज्ञाओं के रूपों में परिवर्तन नहीं होता। जैसे—

घर	घर	मुनि	मुनि	गुरु	गुरु
बालक	बालक	भाई	भाई	डाकू	डाकू
चौबे	चौबे	माधो	माधो	जौ	जौ

घर नया है, घर नए हैं। मुनि लिखता है, मुनि लिखते हैं।

(४) इकारान्त और ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के अन्त

में 'यां' लगा दिया जाता है और अन्तिम दीर्घ 'ई' को ह्रस्व 'इ' कर दिया जाता है। जैसे—

विधि विधियां		रानी रानियां
रीति रीतियां		थाली थालियां
तिथि तिथियां		टोपी टोपियां

(५) 'या' जिनके अन्त में है ऐसे स्त्रीलिंग शब्दों के 'या' को 'यां' हो जाता है। जैसे—

लुटिया लुटियां	बुढ़िया बुढ़ियां
लठिया लठियां	गुड़िया गुड़ियां
डिबिया डिबियां	कुण्डलिया कुण्डलियां

(६) शेष अकारान्त, उकारान्त, ऊकारान्त आदि स्त्रीलिंग शब्दों के अन्त में 'एं' लगाया जाता है और 'ऊ' को ह्रस्व कर दिया जाता है। जैसे—

लता लताएं	बहू बहुएं
वस्तु वस्तुएं	गौ गौएं

(७) ओंकारान्त और औंकारान्त शब्द बहुवचन में विकृत नहीं होते। जैसे—

जोखों, सरसों, दौं आदि।

बहुत्व प्रकट करने के लिये शब्दों के पीछे लोग, गण, वृन्द आदि शब्द भी लगाए जाते हैं। जैसे—आर्य लोग, पाठकगण, सज्जनवृन्द।

अभ्यास

वचन का लक्षण लिखकर उसके भेद सोदाहरण लिखो। एकवचन के अर्थ में बहुवचन और बहुवचन के अर्थ में एक-

वचन कब प्रयुक्त होता है ? अग्रलिखित संज्ञाओं के बहुवचन बनाओ—खूंटी, बुढ़िया, धेनु, मुनि, भतीजा, बाला, पिता, माता, देवता, महात्मा, डाकू, बोतल, रीति, धोती। विभक्ति रहित और विभक्तिसहित वचन-विकार से क्या तात्पर्य है ?

कारक

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका सम्बन्ध वाक्य के दूसरे शब्दों के साथ जाना जाता है उसे कारक कहते हैं। जैसे—

"कान्ता ने लेखिनी से कापी पर लिखा।" इस वाक्य में (१) कान्ता ने, (२) लेखिनी से, (३) कापी पर—ये तीनों संज्ञाओं के रूपान्तर हैं। इनका सम्बन्ध आपस में और 'लिखा' क्रिया के साथ सूचित होता है, अत: ये तीनों कारक हैं।

संज्ञा या सर्वनाम के आगे कारक प्रकट करने के लिये जो 'ने, से, पर' आदि चिन्ह लगाए जाते हैं, उन्हें विभक्तिचिन्ह कहते हैं।

विभक्तिरहित शब्दों को शब्द कहते हैं और विभक्ति-सहित शब्दों को पद कहते हैं। जैसे—मोहन (शब्द), मोहन को (पद)।

हिन्दी में आठ कारक हैं। कारकों के नाम और विभक्तिचिन्ह निम्नलिखित हैं—

(कारक)	(विभक्तियां)
(१) कर्ता	ने, (शून्य
(२) कर्म	को
(३) करण	से

(४) सम्प्रदान को, के लिये
(५) अपादान से
(६) सम्बन्ध का, के, की; रा, रे, री
(७) अधिकरण में, पर

ये चिन्ह शब्दों के अन्त में लगाये जाते हैं।

(८) सम्बोधन हे, अजी, रे, अहो आदि

ये विभक्तिचिन्ह नहीं कहलाते तथा ये शब्दों से पहिले आते हैं।

कारकों के लक्षण और उदाहरण

कर्ता—संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के करने वाले का बोध होता है उसे कर्ता कारक कहते हैं। जैसे—

वनमाली सोता है। इस वाक्य में 'सोना' क्रिया को करने वाला वनमाली है, अत: 'वनमाली' कर्ता कारक है।

कर्म—जिस वस्तु पर कर्ता के व्यापार का फल पड़ता है उसका बोध कराने वाले संज्ञा या सर्मनाम के रूप को कर्म कारक कहते हैं। जैसे—

सरला टीपू को मारती है। इस वाक्य में सरला के व्यापार 'मारने' का फल टीपू पर पड़ता है, टीपू मारा जाता है; अत: 'टीपू को' कर्म कारक है।

करण—संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के साधन का बोध होता है उसे करण कारक कहते हैं। जैसे—

दासी कलम से लिखती है। इस वाक्य में 'लिखना' क्रिया में 'कलम' साधन है, अत: 'कलम से' करण कारक है।

सम्प्रदान—जिसके लिये क्रिया की जाती है उसका बोध कराने वाले संज्ञा या सर्वनाम के रूप को सम्प्रदान कारक कहते हैं। जैसे—

उपेन्द्र ने जगदीश को पुस्तक दी। यहां 'देना' क्रिया जगदीश क लिये की गई है, इसलिये 'जगदीश को' सम्प्रदान कारक है।

अपादान—संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से पृथक्त्व, उद्गम और भय आदि का बोध होता है उसे अपादान कारक कहते हैं। जैसे—

वृक्ष से पत्ता गिरता है। गंगा हिमालय से निकलती है। निरुपमा सिंह से डरती है। इन वाक्यों में 'वृक्ष से, हिमालय से, सिंह से' ये अपादान कारक के रूप हैं।

सम्बन्ध--संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसके वाच्य पदार्थ का सम्बन्ध किसी दूसरे पदार्थ के साथ सूचित होता है उसे सम्बन्ध कारक कहते हैं।

कपिल का गेंद। यहां कपिल का सम्बन्ध गेंद से है, इसलिये 'कपिल का' सम्बन्ध कारक है।

अधिकरण—संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से आधार का बोध होता है उसे अधिकरण कारक कहते हैं। जैसे—

मेरे हाथ में रुपया है। यहां रुपये का आधार हाथ है, इसलिये 'हाथ में' अधिकरण कारक है।

सम्बोधन—संज्ञा के जिस रूप से किसी को चेताना या पुकारना सूचित होता है उसे सम्बोधन कारक कहते हैं।

जैसे—हे प्रभु, अब तो दया करो। रमेश, इधर आ। यहां—'हे प्रभु' और 'रमेश' सम्बोधन कारक के रूप हैं।

एक वाक्य में सब कारकों का प्रयोग—

माता जी, रमेश के भाई ने बाजार से आकर मेरे लिये कागज पर एक प्रश्न लिखा।

विभक्तियों के योग से होने वाले विकार

१. एकवचन में केवल आकारान्त पुल्लिग संज्ञाओं के 'आ' को 'ए' होता है, *शेष सब संज्ञाएं अविकृत रहती हैं। जैसे—

घोड़े को, गधे को, लोटे को आदि।

अपवाद—राजा को, पिता को, विधाता को, भ्राता को, मामा को, चाचा को, चन्द्रमा को आदि।

२. बहुवचन में अकारान्त, आकारान्त पुल्लिग और अकारान्त, इयाप्रत्ययान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं के अन्तिम 'अ' या 'आ' के स्थान में 'ओं' हो जाता है। जैसे—

हृदयों में, घोड़ों में, बहिनों में, डिबियों में।

३. बहुवचन में इकारान्त तथा ईकारान्त पुल्लिग और स्त्रीलिंग संज्ञाओं के अन्त में 'यों' लगाया जाता है और 'ई' को 'इ' कर दिया जाता है। जैसे—

कवियों ने, गतियों ने, सखियों ने, पतियों ने, यतियों ने।

४. बहुवचन में उ-ऊ-ए-ऐ-ओ-औकारान्त पुल्लिग और

*सब प्रकार की स्त्रीलिंग संज्ञाए और आकारान्त को छोड़कर पुल्लिग संज्ञाएं।

स्त्रीलिंग शब्दों के, आकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के और राजा पिता, चन्द्रमा आदि अविकारी आकारान्त पुल्लिग शब्दों के अन्त में 'ओं' जोड़ दिया जाता है और 'ऊ' को 'उं' कर दिया जाता है। जैसे—

साधुओं से, धेनुओं से, डाकुओं से, बहुओं से, माताओं से, राजाओं से, चन्द्रमाओं से।

५. सानुस्वार ओकारान्त संज्ञाएं बहुवचन में भी अविकृत ही रहती हैं। जैसे—

सरसों को, सरसों को; कोदों को, कोदों को।

६. (क) सम्बोधन में विभक्तियों के योग से होने वाले विकार होते हैं, केवल अन्त वाला अनुस्वार उड़ा दिया जाता है। जैसे—

एकवचन—हे बालक, हे घोड़े, हे माता, हे कवि ।
बहुवचन—हे बालको, हे घोड़ो, हे माताओ, हे कवियो।

(ख) एकवचन में संस्कृत की तरह भी सम्बोधन होते हैं। जैसे—

हे राजन्, हे मुने, हे बाले, हे परमात्मन्, हे प्रभो।

संज्ञाओं की रूपावली

पुल्लिङ्ग संज्ञाएं

अकारान्त

(कारक)	(एकवचन)	(बहुवचन)
कर्ता	बालक, बालक ने	बालक, बालकों ने
कर्म	बालक को	बालकों को

करण	बालक से	बालकों से
सम्प्रदान	बालक को, के लिए	बालकों को, के लिए
अपादान	बालक से	बालकों से
सम्बन्ध	बालक का, के, की	बालकों का, के, की
अधिकरण	बालक में, पर	बालकों में, पर
सम्बोधन	हे बालक	हे बालको

इसीप्रकार धनुष, वन, फल आदि अन्य सब अकारान्त शब्दों के रूप होते हैं।

आकारान्त विकृत

कर्ता	लड़का, लड़के ने	लड़के, लड़कों ने
कर्म	लड़के को	लड़कों को
करण	लड़के से	लड़कों से
सम्प्रदान	लड़के को, के लिए	लड़कों को, के लिए
अपादान	लड़के से	लड़कों से
सम्बन्ध	लड़के का, के, की	लड़कों का, के, की
अधिकरण	लड़के में, पर	लड़कों में, पर
सम्बोधन	हे लड़के	हे लड़को

इसीप्रकार घोड़ा, बच्चा, घड़ा, गढ़ा, पहिया आदि अन्य सब विकृत आकारान्त शब्दों के रूप होते हैं।

आकारान्त अविकृत

कर्ता	विधाता, विधाता ने	विधाता, विधाताओं ने
कर्म	विधाता को	विधाताओं को
करण	विधाता से	विधाताओं से
सम्प्रदान	विधाता को, के लिए	विधाताओं को, के लिए
अपादान	विधाता से	विधाताओं से
सम्बन्ध	विधाता का, के, की	विधाताओं का, के, की

अधिकरण	विधाता में, पर	विधाताओं में, पर
सम्बोधन	हे विधाता	हे विधाताओ

इसीप्रकार राजा, देवता, चन्द्रमा आदि अन्य सब अविकृत आकारान्त शब्दों के रूप होते हैं।

इकारान्त

कर्ता	मुनि, मुनि ने	मुनि, मुनियों ने
कर्म	मुनि को	मुनियों को
करण	मुनि से	मुनियों से
सम्प्रदान	मुनि को, के लिए	मुनियों को, के लिए
अपादान	मुनि से	मुनियों से
सम्बन्ध	मुनि का, के, की	मुनियों का, के, की
अधिकरण	मुनि में, पर	मुनियों में, पर
सम्बोधन	हे मुनि	हे मुनियो

इसीप्रकार पति, कपि आदि अन्य सब इकारान्त शब्दों के रूप होते हैं।

ईकारान्त

कर्ता	माली, माली ने	माली, मालियों ने
कर्म	माली को	मालियों को
करण	माली से	मालियों से
सम्प्रदान	माली को, के लिये	मालियों को, के लिये
अपादान	माली से	मालियों से
सम्बन्ध	माली का, के, की	मालियों का, के की
अधिकरण	माली में, पर	मालियों में,पर
सम्बोधन	हे माली	हे मालियो

इसीप्रकार धोबी, नाई, भाई, धनी आदि अन्य सब ईकारान्त शब्दों के रूप होते हैं।

उकारान्त

कर्ता	गुरु, गुरु ने	गुरु, गुरुओं ने
कर्म	गुरु को	गुरुओं को
करण	गुरु से	गुरुओं से
सम्प्रदान	गुरु को, के लिये	गुरुओं को, के लिये
अपादान	गुरु से	गुरुओं से
सम्बन्ध	गुरु का, के, की	गुरुओं का, के, की,
अधिकरण	गुरु में, पर	गुरुओं में, पर
सम्बोधन	हे गुरु	हे गुरुओ

साधु, भानु आदि अन्य सब उकारान्त संज्ञाओं के रूप इसीप्रकार होते हैं।

ऊकारान्त

कर्ता	डाकू, डाकू ने	डाकू, डाकुओं ने
कर्म	डाकू को	डाकुओं को
करण	डाकू से	डाकुओं से
सम्प्रदान	डाकू को, के लिये	डाकुओं को, के लिये
अपादान	डाकू से	डाकुओं से
सम्बन्ध	डाकू का, के, की	डाकुओं का, के, की
अधिकरण	डाकू में, पर	डाकुओं में, पर
सम्बोधन	हे डाकू	हे डाकुओ

बाबू आदि अन्य सब ऊकारान्त संज्ञाओं के रूप इसीप्रकार होते हैं।

एकारान्त

कर्ता	दुबे, दुबे ने	दुबे, दुबेओं ने
कर्म	दुबे को	दुबेओं को
करण	दुबे से	दुबेओं से

सम्प्रदान	दुबे को, के लिये	दुबेओं को, के लिये
अपादान	दुबे से	दुबेओं से
सम्बन्ध	दुबे का, के, की	दुबेओं का, के, की
अधिकरण	दुबे में, पर	दुबेओं में, पर
सम्बोधन	हे दुबे	हे दुबेओ

चौबे आदि अन्य सब एकारान्त संज्ञाओं के रूप इसीप्रकार होते हैं।

ऐकारान्त

कर्ता	बैरै, बैरै ने	बैरै, बैरैओं ने
कर्म	बैरै को	बैरैओं को
करण	बैरै से	बैरैओं से
सम्प्रदान	बैरै को, के लिये	बैरैओं को, के लिये
अपादान	बैरै से	बैरैओं से
सम्बन्ध	बैरै का, के, की	बैरैओं का, के, की
अधिकरण	बैरै में, पर	बैरैओं में, पर
सम्बोधन	हे बैरै	हे बैरैओ

इसीप्रकार अन्य सभी ऐकारान्त संज्ञाओं के रूप होते हैं।

ओकारान्त

कर्ता	रासो, रासो ने	रासो, रासोओं ने
कर्म	रासो को	रासोओं को
करण	रासो से	रासोओं से
सम्प्रदान	रासो को, के लिये	रासोओं को, के लिये
अपादान	रासो से	रासोओं से
सम्बन्ध	रासो का, के, की	रासोओं का, के, की
अधिकरण	रासो में, पर	रासोओं में, पर
सम्बोधन	हे रासो	हे रासोओ

माधो आदि अन्य ओकारान्त संज्ञाओं के रूप इसीप्रकार होते हैं।

सानुस्वार ओकारान्त

कर्ता	कोदों, कोदों ने	कोदों, कोदों ने
कर्म	कोदों को	कोदों को
करण	कोदों से	कोदों से
सम्प्रदान	कोदों को, के लिये	कोदों को, के लिये
अपादान	कोदों से	कोदों से
सम्बन्ध	कोदों का, के, की	कोदों का, के, की
अधिकरण	कोदों में, पर	कोदों में, पर
सम्बोधन	हे कोदों	हे कोदों

अन्य सानुस्वार ओकारान्त संज्ञाओं के रूप इसीप्रकार होते हैं।

औकारान्त

कर्ता	जौ, जौ ने	जौ, जौओं ने
कर्म	जौ को	जौओं को
करण	जौ से	जौओं से
सम्प्रदान	जौ को, के लिये	जौओं को, के लिये
अपादान	जौ से	जौओं से
सम्बन्ध	जौ का, के, की	जौओं का, के, की
अधिकरण	जौ में, पर	जौओं में, पर
सम्बोधन	हे जौ	हे जौओ

इसीप्रकार अन्य औकारान्त संज्ञाओं के रूप होते हैं।

स्त्रीलिङ्ग संज्ञाएं

अकारान्त

(कारक)	(एकवचन)	(बहुवचन)
कर्ता	बात, बात ने	बातें, बातों ने

शेष अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों की तरह । इसीप्रकार आँख, बहिन, रात आदि अकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप होते हैं।

आकारान्त

कर्ता	माता, माता ने	माताएं, माताओं ने

शेष राजा आदि अविकृत आकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों की तरह। इसी प्रकार लता, पाठशाला आदि आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप होते हैं।

इयाप्रत्ययान्त

कर्ता	कुण्डलिया, कुण्डलिया ने	कुण्डलियां, कुण्डलियों ने

शेष आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों की तरह । इसीप्रकार डिबिया, खड़िया आदि इयाप्रत्ययान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप होते हैं।

इकारान्त

कर्ता	भक्ति, भक्ति ने	भक्तियां, भक्तियों ने

शेष इकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों की तरह । इसीप्रकार शक्ति, मति, रति, बुद्धि आदि इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप होते हैं।

ईकारान्त

कर्ता	रानी, रानी ने	रानियां, रानियों ने

शेष ईकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों की तरह । इसीप्रकार नदी, देवी, भाभी, सखी, नानी आदि ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप होते हैं।

उकारान्त

कर्ता	धेनु, धेनु ने	धेनुएं, धेनुओं ने

शेष उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों की तरह।

ऊकारान्त

कर्ता	बहू, बहू ने	बहुएं, बहुओं ने

शेष ऊकारान्त पुल्लिंग शब्दों की तरह । इसीप्रकार कुहू, जोरू, बधू आदि ऊकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप होते हैं।

एकारान्त

कर्ता	ऐक्सरे, ऐक्सरे ने	ऐक्सरेएं, ऐक्सरेओं ने

शेष एकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों की तरह ।

ऐकारान्त

ऐकारान्त शब्द नहीं है ।

ओकारान्त

(अधिकतर बिगाड़े हुए नाम होते हैं, जैसे—रामदेवी, कैलाश कुमारी आदि से रामो, कैलाशो आदि ।)

इनके रूप ओकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों की तरह होते हैं ।

सानुस्वार ओकारान्त

सरसों आदि—इनके रूप ओंकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों की तरह होते हैं ।

औकारान्त

कर्ता	गौ, गौ ने	गौएं, गौओं ने

शेष औकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों की तरह ।

सानुस्वार औकारान्त

कर्ता	भौं, भौं ने	भौंएं, भौंओं ने

आदि रूप औंकारान्त शब्दों की तरह होते हैं ।

अभ्यास

कारक किसे कहते हैं ? कर्ता आदि कारकों के लक्षण और उदाहरण लिखो । ने, को, में, पर, की, से—ये चिन्ह किन कारकों के हैं ? शब्द और पद में क्या भेद है ? करण और अपादान में, कर्म और सम्प्रदान में क्या भेद है ? कारकों के अनुसार किन शब्दों में विकार होता है, राजा शब्द में होता है या नहीं ?

पिता, घड़ी, चपल, भौं, रासो, जौ, उड़िया, चिटिया शब्दों के

सब कारकों में रूप लिखो।

निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करो—

सरसोओं को उठा लाओ। भौं तिरछे हैं। गौएं सिंह में डरते हैं। विधाते ने किसी को एक न सुना।

नीचे लिखे वाक्यों में कारक बताओ—

तुम्हारी पुस्तक कहां है। मैं गांव से आया हूँ। रमेश सिंह से नहीं डरता। मैं तलवार से काटती हूँ। वह तुम्हें वस्त्र देता है। चटाई पर बैठकर बात सुनाओ। मोहन, बैंत उठा ला।

चौथा अध्याय

सर्वनाम

जो विकारी शब्द संज्ञाओं की पुनरुक्ति को दूर करने के लिये उनके बदले आते हैं उन्हें सर्वनाम कहते हैं। जैसे—

सुनीति ने अपनी माता से कहा कि मैं पढ़ने जा रही हूं, मेरी पुस्तकें मुझे दे दें और आज मेरे कपड़े अवश्य मंगवो रखना।

इस वाक्य में 'अपनी, मैं, मेरी, मुझे, मेरे'—ये सर्वनामों के रूप हैं। इनके अभाव में वाक्य बहुत भद्दा बन जाता। जैसे—

सुनीति ने सुनीति की माता से कहा कि सुनीति पढ़ने जा रही है, सुनीति की पुस्तकें सुनीति को दे दें और आज सुनीति के कपड़े अवश्य मंगवा रखना।

पुरुष

बोलचाल या लेख में जो तीन तरह का सम्बन्ध होता है उसे पुरुष कहते हैं। इसीलिये पुरुष तीन प्रकार के होते

हैं—(१) बोलने या लिखने वाला, (२) सुनने या पढ़ने वाला, (३) जिसके सम्बन्ध में कुछ कहा या लिखा जाय। अतः-

१. मैं—उत्तमपुरुष। २. तू—मध्यमपुरुष। ३. शेष सब सर्वनाम—अन्यपुरुष।

संज्ञाएं भी अन्यपुरुष होती हैं।

सर्वनामों के भेद

सर्वनाम छः प्रकार के हैं—

(१) पुरुषवाचक	मैं, तू, आप (आदरसूचक)
(२) निजवाचक	आप
(३) निश्चयवाचक	यह, वह
(४) अनिश्चयवाचक	कुछ, कोई
(५) सम्बन्धवाचक	जो, सो
(६) प्रश्नवाचक	कौन, क्या

पुरुषवाचक—मैं परीक्षा देती हूं। तू तलवार चलाती है। आप ऋग्वेद पढ़ते हैं। इन वाक्यों में मैं, तू, आप पुरुषवाचक सर्वनाम हैं। आप शब्द आदरसूचक है। इसके साथ क्रिया सदा बहुवचन में आती है। बहुत्व के लिये 'आप' के साथ 'लोग' शब्द भी लगाते हैं, जैसे—आप लोगों ने क्या सुना है?

निजवाचक—मैं आप पढ़ रही हूं। लता आप चल कर आई है। इन वाक्यों में 'आप' शब्द निजवाचक सर्वनाम है। कई स्थानों पर 'आप' की जगह 'अपना आप' भी प्रयुक्त होता है, जैसे—मोहन ने अपना आप बिगाड़ लिया है। वह अपने आप आ जायगा।

निश्चयवाचक—यह मीठा है, वह खट्टा है। इन वाक्यों में 'यह' शब्द से पदार्थ की समीपता का और 'वह' शब्द से पदार्थ की दूरी का निश्चय होता है, अतः ये दोनों निश्चयवाचक सर्वनाम हैं।

अनिश्चयवाचक—कोई पढ़ रहा था, कोई सो रहा था। कुछ लिख रहे थे, कुछ गा रहे थे। इन वाक्यों में 'कोई' और 'कुछ' शब्दों से निश्चय नहीं पाया जाता कि पढ़ने, सोने, लिखने और गाने वाले कौन और कितने हैं, इसलिये 'कोई' और 'कुछ' अनिश्चयवाचक सर्वनाम हैं।

सम्बन्धवाचक—जो ढूंढते हैं सो पाते हैं। जो सोते हैं सो खो देते हैं। इन वाक्यों में 'जो' और 'सो' शब्दों से 'ढूंढते हैं' और 'पाते हैं' का तथा 'सोते हैं' और 'खो देते हैं' का सम्बन्ध प्रकट होता है, इसलिये 'जो' और 'सो' सम्बन्धवाचक सर्वनाम हैं।

प्रश्नवाचक—कौन सो रहा है? क्या खा रहे हो? इन वाक्यों में 'कौन' और 'क्या' से व्यक्तिविषयक और वस्तुविषयक प्रश्न प्रकट होता है, इसलिये 'कौन' और 'क्या' प्रश्नवाचक सर्वनाम हैं। इस बात का ध्यान रहे कि 'कौन' शब्द प्राणियों के लिये और 'क्या' शब्द प्राणि-भिन्न वस्तुओं के लिये आता है।

सर्वनामों का विकार

सर्वनामों में वचन और कारक के अनुसार विकार होता है, लिंग के अनुसार विकार नहीं होता।

मैं, तू, यह, वह के रूप विभक्तिरहित कर्त्ताकारक के बहुवचन में क्रमशः हम, तुम, ये, वे होते हैं।

सम्बन्ध कारक में मैं और तू शब्दों के रूपों के साथ का, के, की के स्थान पर रा, रे, री विभक्तिचिन्ह लगते हैं।

सर्वनामों का सम्बोधन नहीं होता।

सर्वनामों के रूप इस प्रकार होते हैं—

सर्वनामों की रूपावली

मैं

(कारक)	(एकवचन)	(बहुवचन)
कर्ता	मैं, मैंने	हम, हमने
कर्म	मुझको, मुझे	हमको, हमें
करण	मुझसे	हमसे
सम्प्रदान	मुझको, मुझे	हमको, हमें
अपादान	मुझसे	हमसे
सम्बन्ध	मेरा, मेरे, मेरी	हमारा, हमारे, हमारी
अधिकरण	मुझमें, पर	हममें, पर

तू

कर्ता	तू, तूने	तुम, तुमने
कर्म	तुझको, तुझे	तुमको, तुम्हें
करण	तुझसे	तुमसे
सम्प्रदान	तुझको, तुझे	तुमको, तुम्हें
अपादान	तुझसे	तुमसे
सम्बन्ध	तेरा, तेरे, तेरी	तुम्हारा, तुम्हारे, तुम्हारी
अधिकरण	तुझमें, पर	तुममें, पर

यह

कर्ता	यह, इसने	ये, इन्होंने
कर्म	इसको, इसे	इनको, इन्हें
करण	इससे	इनसे
सम्प्रदान	इसको, इसे	इनको, इन्हें
अपादान	इससे	इनसे
सम्बन्ध	इसका, के, की	इनका, के, की

अधिकरण	इसमें, पर	इनमें, पर

वह

कर्ता	वह, उसने	वे, उन्होंने
कर्म	उसको, उसे	उनको, उन्हें
करण	उससे	उनसे
सम्प्रदान	उसको, उसे	उनको, उन्हें
अपादान	उससे	उनसे
सम्बन्ध	उसका, के, की	उनका, के, की
अधिकरण	उसमें, पर	उनमें, पर

कोई

कर्ता	कोई, किसी ने	कोई, किन्हीं ने
कर्म	किसी को	किन्हीं को
करण	किसी से	किन्हीं से
सम्प्रदान	किसी को	किन्हीं को
अपादान	किसी से	किन्हीं से
सम्बन्ध	किसी का, के, की	किन्हीं का, के, की
अधिकरण	किसी में, पर	किन्हीं में, पर

कई विद्वान् 'कोई' शब्द के बहुवचन के रूप नहीं मानते।

'कुछ' शब्द को विकार नहीं होता।

जो

कर्ता	जो, जिसने	जो, जिन्होंने
कर्म	जिसको, जिसे	जिनको, जिन्हें
करण	जिससे	जिनसे
सम्प्रदान	जिसको, जिसे	जिनको, जिन्हें
अपादान	जिससे	जिनसे

सम्बन्ध	जिसका, के, की	जिनका, के, की
अधिकरण	जिसमें, पर	जिनमें, पर

सो

कर्ता	सो, तिसने	तिन्होंने
कर्म	तिसको, तिसे	तिनको, तिन्हें
करण	तिससे	तिनसे
सम्प्रदान	तिसको, तिसे	तिनको, तिन्हें
अपादान	तिससे	तिनसे
सम्बन्ध	तिसका, के, की	तिनका, के, की
अधिकरण	तिसमें, पर	तिनमें, पर

'सो' शब्द का प्रयोग अधिक सम्मत नहीं। इसके स्थान पर 'वह' शब्द प्रयुक्त होता है। जैसे—जिसको पहचानते हो उसे बुला लाओ।

कौन

कर्ता	कौन, किसने	कौन, किन्होंने
कर्म	किसको, किसे	किनको, किन्हें
करण	किससे	किनसे
सम्प्रदान	किसको, किसे	किनको, किन्हें
अपादान	किससे	किनसे
सम्बन्ध	किसका, के, की	किनका, के, की
अधिकरण	किसमें, पर	किनमें, पर

आप (आदरसूचक)

कर्ता	आप, आपने	आप, आप लोग, आप लोगों ने
कर्म	आपको	आपको, आप लोगों को
करण	आपसे	आपसे, आप लोगों से

सम्प्रदान	आपको	आपको, आप लोगों को
अपादान	आपसे	आपसे, आप लोगों से
सम्बन्ध	आपका, के, की	आपका, आप लोगों का, के, की
अधिकरण	आपमें, पर	आपमें, आप लोगों में, पर

उदाहरण—एक व्यक्ति के लिये—आप कब आए हैं। एक विद्यार्थी अपने अध्यापकों से—मैं आप से (आप सब से) सविनय प्रार्थना करता हूं कि...। व्याख्याता जनता से—आपको (या आप लोगों को) पता होना चाहिये कि...।

आप (निजवाचक)

कर्ता	आप	बहुवचन नहीं होता
कर्म	अपने को	
करण	अपने से	
सम्प्रदान	अपने को, लिये	
अपादान	अपने से	
सम्बन्ध	अपना, ने, नी	
अधिकरण	अपने में, पर	

'अपना' और 'आप' शब्दों को मिलाकर 'अपना आप, अपने आपको, अपने आप से' आदि रूप भी होते हैं।

क्या

कर्ता	क्या	क्या

शेष कौन शब्द की तरह।

विशेष—विभक्तिचिन्ह सर्वनामों के साथ मिलाकर लिखे जाते हैं, परन्तु संज्ञाओं और 'कोई' सर्वनाम के रूपों से पृथक् लिखे जाते हैं; जैसे—हमारा, उसको, इससे।

अध्यापक ने, मोहन का, चम्पा से, किसी ने, किन्हीं को, किसी में, किसी पर।

अभ्यास

सर्वनाम किसे कहते हैं? उनका क्या उपयोग है? पुरुष कितने हैं? कौनसा सर्वनाम मध्यमपुरुष कहलाता है? संज्ञाओं का पुरुष बनाओ। मैं, तू, यह, वह और आदरसूचक आप शब्दों के रूप लिखो। निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित सर्वनामों द्वारा करो—

कान्ता ने—जेब में हाथ डालकर—रूमाल निकाला—कुछ पढ़ो—याद कर लो।—गा रहा है—रो रहा है। कुछ पढ़ रहे हैं—सो रहे हैं।—बहुतेरा समझाया, परन्तु—एक न मानी।

पांचवां अध्याय
विशेषण

जिन विकारी शब्दों से पदार्थों की विशेषता प्रकट होती है उन्हें विशेषण कहते हैं। जैसे—मीठा आम। यहां 'मीठा' शब्द से आम की विशेषता प्रकट होती है, अतः 'मीठा' शब्द विशेषण है।

विशेषणों द्वारा जिन पदार्थों की विशेषता प्रकट की जाती है उनकी वाचक संज्ञाओं को विशेष्य कहते हैं। 'मीठा आम' में 'आम' विशेष्य है।

विशेषण-भेद

विशेषण चार प्रकार के होते हैं—

गुणवाचक, परिमाणवाचक, संख्यावाचक, निर्देशक।

१. पदार्थों के रंग, आकार, गुण आदि प्रकट करने वाले विशेषणों को गुणवाचक कहते हैं। जैसे—

रंग—लाल, पीला, नीला, काला, हरा, सफेद।

आकार—गोल, चौकोर, चपटा, सुडौल, बेडौल, विरूप।

गुण—बुरा, भला, अच्छा, खोटा, पापी, धर्मी, धार्मिक, लोभी, बुद्धिमान्, दयालु, अभिमानी, विषैला, जिज्ञासु, भयभीत।

दिशा—पूर्वी, पश्चिमी, उत्तरी, दक्षिणी, ऊपरी, निचला।

दशा—मोटा, पतला, दुबला, पिघला, गाढ़ा, गीला, कोढ़ी, संचित।

देश—भारतीय, चीनी, जापानी, यूरोपियन, स्वर्गीय, देशी, विदेशी।

काल—भूत, वर्तमान, भविष्यत्, प्राचीन, अर्वाचीन, पुरातन, नूतन, गत, आगामी, दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, वार्षिक।

स्थान—बाहरी, भीतरी, आन्तरिक, बाह्य, ऊँचा, नीचा, अधोलिखित, उपर्युक्त, निम्नलिखित, स्थानीय, ग्रामीण, नागरिक।

२. पदार्थों के परिमाण (माप) बतलाने वाले विशेषणों को परिमाणवाचक कहते हैं। जैसे—

छटांक, सेर, मन, थोड़ा, बहुत, सारा, गज, रत्ती, पाव।

इसके दो भेद हैं—

निश्चित परिमाणवाचक—सेर, मन, रत्ती।

अनिश्चित परिमाणवाचक—सारा, थोड़ा, स्वल्प, बहुत।

निश्चित परिमाणवाचकों के अन्तिम 'अ' को 'ओं' और

'इ, ई' को 'इयों' कर देने से भी अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण बनते हैं। जैसे—सेरों, मनों, रत्तियों।

३. पदार्थों की संख्या प्रकट करने वाले विशेषण संख्यावाचक कहलाते हैं। जैसे—एक, दो, तीन, अनेक, कई, सारे, थोड़े।

इसके तीन भेद हैं—

निश्चित संख्यावाचक, अनिश्चित संख्यावाचक, विभाग वाचक या (प्रत्येकबोधक)।

(अ) निश्चित संख्यावाचक के चार भेद हैं—

(१) गणनावाचक—(१) एक, दो, तीन, चार, पांच, छः, सात, आठ, नौ, दस, ग्यारह, बारह, तेरह, चौदह, पन्द्रह, सोलह, सत्रह, अठारह, उन्नीस, बीस, इक्कीस, बाईस, तेईस, चौबीस, पच्चीस, छब्बीस, सताईस, अठाईस, उनतीस, तीस, इकतीस, बत्तीस, तेतीस, चौंतीस, पैंतीस, छत्तीस, सैंतीस, अड़तीस, उनचालीस, (उनतालीस), चालीस, इकतालीस, बयालीस, तैंतालीस, चौवालीस, पैंतालीस, छयालीस, सैंतालीस, अड़तालीस, उनचास, पचास, इक्यावन, बावन, त्रेपन, चव्वन, पचपन, छप्पन, सतावन, अठावन, उनसठ, साठ, इकसठ, बासठ, त्रेसठ, चौंसठ, पैंसठ, छयासठ, सतसठ, अड़सठ,

उनहत्तर, सत्तर, एकहत्तर, बहत्तर, तेहत्तर, चौहत्तर, पचहत्तर, छेहत्तर, सतहत्तर, अठहत्तर, उनासी, अस्सी, इकासी, बयासी, त्रयासी, चौरासी, पचासी, छयासी, सतसी, अठासी, उनानवे (नवासी), नब्वे, इक्यानवे, बानवे, त्रयानवे, चौरानवे, पचानवे, छयानवे, सतानवे, अठानवे, निन्यानवे, सौ, एक सौ एक (१०१)।

(२) क्रमवाचक—पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा, पांचवां, छठा, सातवां, आठवां, नौवां, दसवां, ग्यारहवां।

(३) आवृत्तिवाचक–दुगुना, तिगुना, चौगुना, पंचगुना।

(४) समुदायवाचक–दोनों, तीनों, चारों, पांचों, छओं।

(आ) अनिश्चित संख्यावाचक—बहुत रुपये, सब पुस्तकें, थोडे लोग, अनेक वृक्ष।

अनिश्चित परिमाणवाचकों से परिमाण का और अनिश्चित संख्यावाचकों से संख्या का निश्चय नहीं होता। अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण और उनके विशेष्य एकवचन होते हैं और अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण और उनके विशेष्य बहुवचन होते हैं। यद्यपि चावल, गेहूं, जौ आदि संज्ञाएं बहुवचन में प्रयुक्त होती हैं, फिर भी इनके साथ अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण ही आते हैं, अनिश्चित संख्यावाचक नहीं, क्योंकि ये वस्तुएं गिनी नहीं जातीं।

कुछ उदाहरण

(अनिश्चित परिमाणवाचक)	(अनिश्चित संख्यावाचक)
बहुत पानी	बहुत आम
सारी सम्पत्ति	सारे रत्न
थोड़ी भूमि	थोड़े कपड़े
अधिक वर्षा	अधिक पत्ते
पूरा घाव	पूरे छात्र
कुछ दूध	कुछ मोती
सारा गांव	सारे गांव
बहुत चावल	
थोड़े गेहूं	
सारे जौ	

(इ) जिनसे कई वस्तुओं में विभाग का बोध होता है उन्हें विभागवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे—प्रत्येक, एक एक, दो दो, हरएक, हर पांचवें।

४. जिनसे संकेत या निर्देश प्रकट होता है उन्हें निर्देशक विशेषण कहते हैं। जैसे—यह घोड़ा, वह हाथी, ऐसा व्यक्ति, वैसी बातें। इनमें 'यह' से समीपता का और 'वह' से दूरी का संकेत प्रकट होता है और 'ऐसा' तथा 'वैसा' से क्रमशः 'व्यक्ति' और 'बात' के लिए निर्देश प्रगट होता है। इसके रूप सर्वनामों से बनते हैं, इसलिए इन्हें सार्वनामिक विशेषण भी कहते हैं।

तुलना

पदार्थों के गुण या दोष बतलाने को तुलना कहते हैं। तुलना के विचार से विशेषणों की तीन अवस्थाएं होती हैं—

मूलावस्था, उत्तरावस्था, उत्तमावस्था।

१. मूलावस्था में दूसरे पदार्थों के साथ गुणों या दोषों का मिलान नहीं किया जाता। जैसे—बलदेव चतुर है।

२. उत्तरावस्था में दो वस्तुओं का मिलान करके एक को अधिक बतलाया जाता है। जैसे—चम्पा सरला से चतुर है, मोहन रमेश से मूर्ख है। इनमें क्रमशः चम्पा की सरला से चतुरता में अधिकता और मोहन की रमेश से मूर्खता में अधिकता बताई गई है।

उत्तरावस्था में जिससे तुलना की जाती है उस संज्ञा के आगे 'से, में, की अपेक्षा अधिक, से बढ़कर, से कहीं' आदि लगाये जाते हैं। जैसे—रुद्र रमाकान्त से बलवान् है। इन दोनों में रुद्र बलवान् है। रमाकान्त की अपेक्षा रुद्र अधिक बलवान् है। रुद्र रमाकान्त से बढ़कर बलवान् है। रुद्र रमाकान्त से कहीं बलवान् है।

उत्तरावस्था प्रकट करने के लिए विशेषणों के आगे 'तर' प्रत्यय भी लगाते हैं। जैसे—प्रियतर, मृदुतर, दृढ़तर।

३. उत्तमावस्था में दो से अधिक वस्तुओं का मिलान करके एक को औरों से अधिक बतलाया जाता है। जैसे—विमला सब से चतुर है। इसमें च ुरता में विमला की सबसे अधिकता दिखलाई गई है।

उत्तमावस्था के लिये 'सब से' या 'सब में' लगाते हैं। जैसे—सिंह सब से भयङ्कर जीव है। यह गांव सब गांवों में बड़ा है। कभी कभी विशेषणों की द्विरुक्ति भी कर देते हैं और द्विरुक्ति में कहीं कहीं पहले विशेषण के आगे 'से' भी लगाते हैं। जैसे—ऊँचे ऊँचे पर्वत, नीच से नीच व्यक्ति। कहीं कहीं विशेषणों से पहले 'अति, अत्यन्त, बहुत' आदि लगाते हैं तथा अत्यन्त अधिकता प्रकट करने के लिए 'अति' के आगे 'ही' लगाते हैं। जैसे—अति ऊँचा पर्वत, अत्यन्त मीठा दूध, बहुत खट्टा आम। अति ही नीच व्यक्ति, अत्यन्त ही चौड़ो नदी, बहुत ही मोटी भैंस।

उत्तमावस्था प्रकट करने के लिये विशेषणों के अन्त में 'तम' प्रत्यय भी लगाते हैं। जैसे—प्रियतम, मृदुतम, दृढ़तम।

विशेषण-विकार

विशेषणों के लिङ्ग, वचन और कारक विशेष्यों के अनुसार होते हैं, परन्तु इनके कारण होने वाले विकार निम्नलिखितों में ही होते हैं—

लिङ्ग के कारण केवल आकारान्त विशेषणों में ही विकार होता है। जैसे—पीला कपड़ा, पीली धोती। मोटा बालक, मोटी बालिका। अन्यत्र—लाल कपड़ा, लाल धोती।

वचन के कारण केवल आकारान्त पुलिङ्ग विशेषणों में ही विकृत आकारान्त संज्ञाओं की तरह विकार होता है। जैसे—मीठा आम, मीठे आम। अन्यत्र—लाल कपड़ा, लाल कपड़े बैंजनी घोड़ा, बैंजनी घोड़े।

कारक के कारण भी केवल आकारान्त पुल्लिङ्ग विशेषणों में ही विकृत आकारान्त संज्ञाओं की तरह विकार होता है, पर विभक्तिचिह्न विशेष्यों के ही साथ लगते हैं, विशेषणों के साथ नहीं। जैसे—मीठे आम से रस निकालो, खोटे बालक का संग बुरा होता है। अन्यत्र—सफेद घोड़े को पकड़ लाओ।

निर्देशक विशेषणों में वही विकार होता है जो सर्वनामों में होता है, पर विभक्तिचिह्न विशेष्यों के ही साथ लगते हैं, विशेषणों के साथ नहीं। जैसे—यह घोड़ा, ये घोड़े, इस घोड़े को। वह बालक, वे बालक, उस बालक ने।

संस्कृत विशेषणों के रूप लिङ्ग के अनुसार बदल भी जाते हैं और नहीं भी बदलते। जैसे—सुन्दर बालक; सुन्दर शीला, सुन्दरी शीला। पर कुछ विशेषणों में विकार अवश्य ही करना पड़ता है। जैसे—श्रीमान्, श्रीमती। विद्वान्, विदुषी। गुणवान्, गुणवती। महान्, महती।

अभ्यास

विशेषण किसे कहते हैं? वे कितने प्रकार के हैं? उनके भेद, उपभेद सोदाहरण लिखो। आगे लिखे शब्दों के विशेषण बनाओ—लाली, नील, कालिख, हरियाली, गोली, पाप, धर्म, लोभ, बुद्धि, दया, अभिमान, विष, जिज्ञासा, भय, पूर्व, ऊपर, नीचे, पिघलना, कोढ़, संचय, भारत, जापान, यूरोप,

स्वर्ग, विदेश, पक्ष, बाहर, स्थान, ग्राम, नगर। एक, तीन, पांच, सात से क्रमवाचक विशेषण बनाओ। आवृत्तिवाचक विशेषण बनाने के लिये क्या करना पड़ता है?

अनिश्चित परिमाणवाचक और अनिश्चित संख्यावाचक में क्या भेद है? आगे लिखे विशेषण किस किस भेद के हैं— सारे घोड़े, कुछ लड़कियां, बहुत अन्न, सारे चावल, थोड़े गेहूँ, स्वल्प दूध, कुछ कपड़े?

तुलना किसे कहते हैं? तुलना के विचार से विशेषणों की कितनी अवस्थाएं होती हैं? उत्तरावस्था और उत्तमावस्था में संस्कृत के कौन कौन से प्रत्यय लगते हैं? किन किन विशेषणों में लिङ्ग, वचन और कारक के अनुसार विकार होता है? निम्नलिखित वाक्य को शुद्ध करो—

वह दिन श्रीमान महारानी साहिब ने विद्वान सरला कुमारी को बुलाय यह पाठशाला में नियुक्ता कर दी।

———

छठा अध्याय

क्रिया

जिस विकारी शब्द से कर्ता के व्यापार आदि का बोध होता है उसे क्रिया कहते हैं। जैसे—लता लिखती है, इसमें 'लिखती है' यह 'लता' का व्यापार है, अतः 'लिखती है' क्रिया है।

क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं। जैसे—'लिखती है' क्रिया में 'लिख' मूल रूप है, अतः 'लिख' धातु है।

धातु के आगे 'ना' प्रत्यय लगाने से जो रूप बनता है उसे क्रिया का सामान्यरूप कहते हैं। जैसे—लिख से लिखना, जा से जाना, पढ़ से पढ़ना। क्रिया का सामान्य-रूप संज्ञा के समान भी प्रयुक्त होता है। जैसे—प्रातःकाल का 'पढ़ना' बहुत लाभदायक है। 'लिखने से' ही तो लेखक बनता है।

सकर्मक और अकर्मक

क्रिया के दो अर्थ होते हैं—व्यापार और फल। जैसे—(१) कान्ता चावल पकाती है। इसमें पकाने का व्यापार कान्ता करती है और पकाने का फल चावलों पर पड़ता है अर्थात् चावल पकते हैं। (२) कमला दौड़ती है। इसमें दौड़ने का व्यापार कमला करती है और दौड़ने का फल भी कमला पर ही पड़ता है अर्थात् कमला ही शीघ्रता से एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचती है। अतः—

(१) जिन क्रियाओं के व्यापार का फल कर्ता को छोड़कर कर्म पर पड़ता है वे सकर्मक होती हैं। जैसे—कान्ता चावल पकाती है, उमा पत्र लिखती है।

(२) जिन क्रियाओं के व्यापार और फल कर्ता में ही रहते हैं वे अकर्मक होती हैं। जैसे—कमला दौड़ती है, सुषमा सोती है।

जब सकर्मक क्रियाओं द्वारा केवल व्यापार प्रकट किया जाता है और कर्म को बतलाने की इच्छा नहीं होती तब वे भी अकर्मक हो जाती हैं। जैसे—कुमुद देखती है, मैं सुनती हूँ, वह बोलती है। इनमें क्रियाओं से केवल व्यापार प्रकट किया गया है, अर्थात् कुमुद देख सकती है, अन्धी नहीं; मैं सुन सकती हूँ, बहरी नहीं; वह बोल सकती है, गूंगी नहीं। यहां यह बतलाने की इच्छा नहीं कि क्या देखती, सुनती और बोलती हैं।

जब अकर्मक क्रियाओं के व्यापार के अर्थ को एक प्रकार का कर्म मानकर उनके साथ जोड़ देते हैं तब वे भी सकर्मक बन जाती हैं। जैसे—वह चालें चलता है। मोहन लड़ाई लड़ता है। मैं लम्बी दौड़ दौड़ता हूँ।

कई क्रियाएं सकर्मक भी होती हैं और अकर्मक भी। जैसे—

(सकर्मक)	(अकर्मक)
मैं घड़ा भरता हूं	घड़ा भर गया है
भीम सिर खुजलाता है	उसका सिर खुजलाता है
अब उसे न लजाओ	कन्या लजाती है
वह चालें बदलता है	समय बदलता है

सकर्मक क्रियाएं दो प्रकार की होती हैं--

एककर्मक और द्विकर्मक

एककर्मक में एक कर्म होता है। जैसे—वह पत्र पढ़ता है।

द्विकर्मक में दो कर्म होते हैं। जैसे—उसने मुझे गणित पढ़ाया, मैंने उसे बात बतलाई, तुमने मुझे कथा सुनाई। इन वाक्यों में रेखाङ्कित पद अप्रधान कर्म और उनसे आगे के पद प्रधान या मुख्य कर्म हैं। इस प्रकार दो दो कर्म होने से 'पढ़ाया, बतलाई, सुनाई' आदि क्रियाएं द्विकर्मक होती हैं।

अप्रधान कर्म प्राणिवाचक होता है और प्रायः पहले आता है तथा प्रधान कर्म अप्राणिवाचक होता है और प्रायः पीछे आता है।

अपूर्ण क्रियाएं

जिन सकर्मक क्रियाओं का आशय कर्म के होने पर भी पूरा नहीं होता और उसकी पूर्ति के लिये किसी संज्ञा या विशेषण की आवश्यकता होती है उन क्रियाओं को अपूर्ण सकर्मक कहते हैं। जैसे—मैं उसे पाता हूं। तू उसे समझता है। तुम उसे बनाते हो। इन वाक्यों में 'उसे' कर्म के होने पर भी 'पाता हूं, समझता है, बनाते हो' इन क्रियाओं से पूरा आशय नहीं निकलता, इसलिये उक्त तीनों क्रियाएँ अपूर्ण सकर्मक हैं।

जिन अकर्मक क्रियाओं का आशय पूरा नहीं निकलता और उसे पूरा करने के लिये किसी संज्ञा या विशेषण की

आवश्यकता होती है उन क्रियाओं को अपूर्ण अकर्मक कहते हैं। जैसे—मैं हूं। तुम दिखते हो। वह बनता है। इन वाक्यों में 'हूं, दिखते हो, बनता है' इन क्रियाओं से पूरा आशय नहीं निकलता, इसलिये ये अपूर्ण अकर्मक हैं।

पूरक

अपूर्ण सकर्मक और अपूर्ण अकर्मक क्रियाओं के आशय को पूरा करने के लिये जो संज्ञा या विशेषण आते हैं उन्हें पूरक कहते हैं।

अपूर्ण सकर्मक क्रियाओं के पूरक कर्मपूरक कहलाते हैं और अपूर्ण अकर्मक क्रियाओं के पूरक कर्तृपूरक कहलाते हैं। जैसे—

(कर्मपूरक)	(कर्तृपूरक)
मैं उसे चतुर पाता हूं	मैं बालक हूं
तू उसे मूर्ख समझता है	तुम बीमार दिखते हो
तुम उसे बुद्धू बनाते हो	वह बालक बनता है

संयुक्त क्रियाएं

'पढ़, सो, लिख' आदि मूल धातुओं से बनने वाली 'पढ़ता है, सोता है, लिखता है' आदि क्रियाएं मूल क्रियाएं कहलाती हैं।

'पढ़ चुक, सो सक, लिख दे' आदि दो दो धातुओं से बनने वाली 'पढ़ चुका है, सो सकता है, लिख देता है' आदि क्रियाएं संयुक्त क्रियाएं कहलाती हैं।

संयुक्त क्रियाओं में पहली क्रिया मुख्य होती है और

दूसरी क्रिया उसके साथ मिलकर उसके अर्थ में कुछ विशेषता उत्पन्न कर देती है। जैसे—मैं पढ़ सकता हूं। इस वाक्य में मुख्य क्रिया का अर्थ केवल 'पढ़ना' है। 'सक' के मिलने से 'पढ़ने की शक्ति रखता हूं' इस विशेष अर्थ का बोध होता है।

अर्थों के विचार से संयुक्त क्रियाओं के भेद और नियम—

(नियम)	(अर्थ)	(संयुक्त क्रियाएं)
१. क्रिया के सामान्यरूप के 'ना' को 'ने' करके आगे 'लगना' जोड़ने से	आरम्भबोधक	पढ़ने लगा
२. ,, ,, ,, 'देना' या 'पाना'	अवकाशबोधक	लिखने दो
३. ,, ,, ,, 'पड़ना' या 'होना' जोड़ने से	विवशताबोधक	खाना पड़ा लिखना होता है
४. धातु के आगे 'चुकना' जोड़ने से	समाप्तिबोधक	पढ़ चुका
५. ,, ,, ,, 'सकना' ,, ,,	शक्तिबोधक	खा सकता है
६. सामान्यभूतकालिक क्रिया के आगे 'करना' जोड़ने से	नित्यताबोधक	लिखा करता है
७. क्रिया के सामान्यरूप के आगे 'चाहना' जोड़ने से	इच्छाबोधक	पढ़ना चाहता है
८. सामान्यभूतकालिक क्रिया के आगे 'चाहना' जोड़ने से	तत्कालबोधक	गिरा चाहता है
९. सामान्यभूतकालिक क्रिया के अन्तिम स्वर को 'ए' करके आगे 'देना' या 'डालना' जोड़ने से (परन्तु एकाक्षर धातु के आगे 'ए' लगाते हैं।	तत्कालबोधक	लिखे देता हूं पढ़े डालता हूं

जैसे—खाए डालता है)		
१०. धातु के आगे या हेतुहेतुमद्‌भूत कालिक क्रिया के आगे 'रहना' जोड़ने से	सातत्यबोधक	करता रहता है कर रहा है
११. समान अर्थ वाली दो क्रियाओं के मिलाने से (इनको पुनरुक्त क्रियाएं भी कहते हैं)	साधारणार्थक	पढ़ता लिखता है आता जाता है खेलता कूदता है
१२. धातु के आगे 'डालना' जोड़ने से	पूर्णताबोधक	मार डाला
१३. अन्य शब्दों और क्रिया के मेल से कई प्रकार की संयुक्त क्रियाएं बनती हैं ।		कमर बांधना काम आना हँसी उड़ाना

नामधातु

क्रिया को छोड़ अन्य शब्दों में प्रत्यय जोड़ने से जो धातु बनते हैं उन्हें नामधातु कहते हैं। नाम शब्द का अर्थ है संज्ञा, जो संज्ञाएं धातु बन जाती हैं उनका नाम नाम-धातु होता है। जैसे—हाथ संज्ञा से हथिया नामधातु बनाकर—'हथियाता है' आदि रूप होते हैं।

कुछ संज्ञाओं में 'आ, या, ला' प्रत्यय लगाते हैं और यदि शब्दों का पहला स्वर दीर्घ हो तो ह्रस्व हो जाता है तथा 'या' प्रत्यय परे होने पर शब्द के अन्तिम स्वर को 'इ' हो जाता है। जैसे—

(शब्द)	(प्रत्यय)	(नामधातु)	(क्रिया का सामान्यरूप)
शर्म	आ	शर्मा	शर्माना

गर्म	,,	गर्मा	गर्माना
लाज	,,	लजा	लजाना
बात	या	बतिया	बतियाना
हाथ	,,	हथिया	हथियाना
चपत	,,	चपतिया	चपतियाना
मोटा	,,	मुटिया	मुटियाना
झूठ	ला	झुठला	झुठलाना

कुछ शब्द बिना ही किसी विकार के धातु बन जाते हैं—

(शब्द)	(धातु)	(क्रिया का सामान्यरूप)
खर्च	खर्च	खर्चना
रंग	रँग	रँगना
दाग	दाग	दागना
बदल	बदल	बदलना
फटकार	फटकार	फटकारना
दु:ख	दुख	दुखना
अपना	अपना	अपनाना

अनुकरणवाचक शब्दों से भी नामधातु बनते हैं, उन्हें अनुकरणधातु भी कहते हैं। जैसे—

(शब्द)	(प्रत्यय)	(नामधातु)	(क्रिया का सामान्यरूप)
भिनभिन	आ	भिनभिना	भिनभिनाना
सनसन	,,	सनसना	सनसनाना
टनटन	,,	टनटना	टनटनाना
बड़बड़	,,	बड़बड़ा	बड़बड़ाना
छनछन	,,	छनछना	छनछनाना

खटखट	,,	खटखटा	खटखटाना
टर्र	,,	टर्रा	टर्राना

प्रेरणार्थक क्रियाएं

जिन क्रियाओं से यह जाना जाय कि कर्ता कार्य को स्वयं न करके किसी दूसरे को उसके करने की प्रेरणा करता है उन क्रियाओं को प्रेरणार्थक कहते हैं। जैसे—माता धात्री से बालक को सुलवाती है। मैं तुमसे पत्र लिखवाती हूं। कसुम वीरबाला से कपड़े सिलवाती है।

पाना, जाना, होना, आना, सकना, रुचना आदि क्रियाओं से प्रेरणार्थक क्रियाएं नहीं बनतीं।

शेष सब क्रियाओं से दो दो प्रकार की प्रेरणार्थक क्रियाएं बनती हैं। जैसे—फणीन्द्र पढ़ता है (साधारण), केशव फणीन्द्र को पढ़ाता है (पहली प्रेरणार्थक), अध्यापक केशव से फणीन्द्र को पढ़वाता है (दूसरी प्रेरणार्थक)।

पहली प्रकार की प्रेरणार्थक क्रियाएं प्रायः सकर्मक के अर्थ में आती हैं, उनसे स्पष्ट प्रेरणा नहीं पाई जाती; दूसरे प्रकार की प्रेरणार्थक क्रियाओं से स्पष्ट प्रेरणा पाई जाती है।

सब प्रेरणार्थक क्रियाएं सकर्मक होती हैं। उनमें पीना, खाना, पढ़ना, सुनना, देना आदि द्विकर्मक होती हैं। जैसे—बालक सोता है, धात्री बालक को सुलाती है (पहली प्रेरणा, एककर्मक), माता धात्री से बालक को सुलवाती है (दूसरी प्रेरणा, एककर्मक)। मोहन दूध पीता है, रमेश मोहन को दूध पिलाता है, (पहली प्रेरणा, द्विकर्मक) जगदीश रमेश से मोहन को दूध पिलवाता है (दूसरी प्रेरणा, द्विकर्मक)।

प्रेरणार्थक क्रिया वाले वाक्य में प्रेरणा करने वाले को 'प्रेरक' कर्ता कहते हैं और जिसको प्रेरणा की जाती है उसे 'प्रेरित' कर्ता कहते हैं। दूसरी प्रेरणा में 'प्रेरक' कर्ता-कारक में और 'प्रेरित' करण-कारक में आता है। जैसे— मालिनी पढ़ती है (साधारण), कुमुद मालिनी को पढ़ाती है (पहली प्रेरणा), माता कुमुद से मालिनी को पढ़वाती है (दूसरी प्रेरणा)। यहां माता 'प्रेरक' कर्ता है, जो कर्ता कारक में है और कुमुद 'प्रेरित' कर्ता है, जो करण कारक में है।

कभी कभी एक से अधिक प्रेरक कर्ता होते हैं, जो अपने से पहले प्रेरक कर्ता के प्रेरित होते हैं। पुनरुक्ति दोष दूर करने के लिए दो प्रेरितों में से पहले प्रेरित के आगे 'से' के स्थान पर 'द्वारा' या 'के द्वारा' लगाते हैं। जैसे— राम चलता है, मोहन राम को चलाता है, कुणाल मोहन स राम को चलवाता है, गजेन्द्र कुणाल द्वारा मोहन से राम को चलवाता है।

प्रेरणार्थक बनाने के नियम

मूलधातु के अन्त में 'आ' जोड़ने से पहली प्रेरणार्थक और 'वा' जोड़ने से दूसरी प्रेरणार्थक क्रियाएं बनती हैं और

दो अक्षरों के धातुओं में 'ऐ' और 'औ' को छोड़ अन्य पहला स्वर यदि दीर्घ हो तो ह्रस्व हो जाता है *। जैसे—

(मूलधातु)	(सामान्यरूप)	(पहली प्रेरणा)	(दूसरी प्रेरणा)
चल	चलना	चलाना	चलवाना
बिक	बिकना	बिकाना	बिकवाना
गिर	गिरना	गिराना	गिरवाना
फट	फटना	फटाना	फड़वाना
समझ	समझना	समझाना	समझवाना
लिख	लिखना	लिखाना	लिखवाना
लद	लदना	लदाना	लदवाना
भटक	भटकना	भटकाना	भटकवाना
बदल	बदलना	बदलाना	बदलवाना
खुल	खुलना	खुलाना	खुलवाना
पढ़	पढ़ना	पढ़ाना	पढ़वाना
कट	कटना	कटाना	कटवाना
जाग	जागना	जगाना	जगवाना
जीत	जीतना	जिताना	जितवाना
घूम	घूमना	घुमाना	घुमवाना
भूल	भूलना	भुलाना	भुलवाना
खेल	खेलना	खिलाना	खिलवाना
तोल	तोलना	तुलाना	तुलवाना

* आ, ई, ऊ, ए, ओ के स्थान में क्रम से अ, इ, उ, इ, उ हो जाते हैं।

फैल	फैलना	फैलाना	फैलवाना
भौंक	भौंकना	भौंकाना	भौंकवाना

'ले' धातु को छोड़ एकाक्षरधातुओं के दीर्घ स्वर को ह्रस्व करके अन्त में 'ला' जोड़ने से पहली प्रेरणार्थक और 'लवा' जोड़ने से दूसरी प्रेरणार्थक क्रियाएँ बनती हैं। जैसे——

जी	जीना	जिलाना	जिलवाना
पी	पीना	पिलाना	पिलवाना
सो	सोना	सुलाना	सुलवाना
दे	देना	दिलाना	दिलवाना

कुछ धातुओं के रूप अनियमित होते हैं। जैसे——

चुभ	चुभना	चुभाना, चुभोना	चुभवाना
भीग	भीगना	भिगाना, भिगोना	भिगवाना
लेट	लेटना	लिटाना, लेटाना	लिटवाना
बैठ	बैठना	बिठाना, बैठाना, बिठलाना,	बिठलवाना
कह	कहना	कहाना, कहलाना	कहलवाना
रह	रहना	रखाना	रखवाना
ले	लेना	लिवाना	लिवाना
गा	गाना	गवाना	गवाना

कट, सी, दे, ले, गा धातुओं का दोनों प्रेरणाओं में एक ही अर्थ होता है।

अकर्मक से सकर्मक बनाने के नियम

१. दो अक्षरों के धातुओं के पहले स्वर को और तीन अक्षरों के धातुओं के दूसरे स्वर को दीर्घ करने से अकर्मक

से सकर्मक धातु बनते हैं। जैसे—

(अकर्मक)	(सकर्मक)	(अकर्मक)	(सकर्मक)
लदना	लादना	निकलना	निकालना
कटना	काटना	बिगड़ना	बिगाड़ना
पिटना	पीटना	उखड़ना	उखाड़ना

२. कुछ दो अक्षरों के धातुओं में पहले 'इ' को 'ए' और 'उ' को 'ओ' हो जाता है। जैसे—

फिरना	फेरना	खुलना	खोलना
घिरना	घेरना	तुलना	तोलना
दिखना	देखना	घुलना	घोलना

३. कुछ धातुओं के अन्तिम 'ट' को 'ड़' होकर पहले 'अ' को 'आ' और 'उ' या 'ऊ' को 'ओ' हो जाता है। जैसे—

फटना	फाड़ना	फूटना	फोड़ना
जुटना	जोड़ना	छूटना	छोड़ना

४. कुछ अनियमित होते हैं। जैसे—

टूटना	तोड़ना	रहना	रखना
सिलना	सीना	बिकना	बेचना

सकर्मक और पहली प्रेरणार्थक में भिन्नता

(मूल)	(सकर्मक)	(पहली प्रेरणार्थक)
गड़ना	गाड़ना	गड़ाना
घुलना	घोलना	घुलाना
रहना	रखना	रखाना
बिकना	बेचना	बिकाना

अभ्यास

क्रिया, धातु और क्रिया का सामान्यरूप—इनके लक्षण और उदाहरण लिखो। धातु के कितने अर्थ होते हैं? सकर्मक क्रियाएं अकर्मक और अकर्मक क्रियाएं सकर्मक कब बन जाती हैं? सकर्मक क्रियाएं कितने प्रकार की होती हैं? प्रधान कर्म और अप्रधान कर्म की क्या पहचान है? अपूर्ण अकर्मक और अपूर्ण सकर्मक से क्या अभिप्राय है? पूरक किसे कहते हैं? कर्मपूरक और कर्तृपूरक में क्या भेद है?

नीचे लिखी क्रियाएं अपूर्ण अकर्मक हैं या अपूर्ण सकर्मक—तू था, प्रभुदत्त बनता है, घनश्याम मुझे सुनाता है, अध्यापक ने छात्रों को बतलाया—इन क्रियाओं को पूर्ण बनाओ। संयुक्त क्रिया किसे कहते हैं? विवशताबोधक, पूर्णताबोधक, समाप्तिबोधक और इच्छाबोधक क्रियाएं कैसे बनती हैं? प्रत्येक के पांच पांच उदाहरण दो। लगाना, जाना, रहना, देना क्रियाओं के जोड़ने से किन किन अर्थों वाली संयुक्त क्रियाएं बनती हैं?

नाम शब्द का क्या अर्थ है? नामधातु किसे कहते हैं? अनुकरणधातु के चार उदाहरण दो।

प्रेरणार्थक क्रिया किसे कहते हैं? वह कितने प्रकार की होती है? एक से अधिक प्रेरक हों तो क्या किया जाता है? उदाहरण देकर समझाओ। प्रेरणार्थक बनाने के क्या नियम हैं?

अकर्मक से सकर्मक क्रियाएं किस प्रकार बनती हैं? निम्नलिखितों के प्रेरणार्थक और सकर्मक के रूप लिखो—

जीना, सोना, रहना, बिकना, लदना, ओढ़ना, मुड़ना, फटना; जाना, आना, होना।

सातवां अध्याय

क्रिया-विकार

क्रियाओं में काल, प्रकार, लिङ्ग, वचन, पुरुष, वाच्य और प्रयोग के कारण विकार होता है। जैसे—

काल—मनुष्य सोता था, मनुष्य सोता है, मनुष्य सोएगा।

प्रकार—रुद्र पढ़ता है, रुद्र को पढ़ना चाहिए, रुद्र पढ़।

लिङ्ग—रमेश जाता है, लता जाती है।

वचन—कान्ता लिखती है, बालिकाएं लिखती हैं।

पुरुष—मैं गाता हूं, तुम गाते हो, वह गाता है।

वाच्य—वीरसिंह लाठी चलाता है, वीरसिंह से लाठी चलाई जाती है।

प्रयोग—तू गाता है, तू ने पुस्तक पढ़ी, चला जायगा।

काल

क्रिया के जिस रूप से क्रिया के होने का समय जाना जाता है उसे काल कहते हैं। काल तीन प्रकार के होते हैं—

भूत, वर्तमान, भविष्यत्।

भूतकाल—क्रिया के जिस रूप से बीते हुए समय में क्रिया का होना पाया जाय उसे भूतकाल कहते हैं। जैसे—मोहन गया, राधा ने रोटी पकाई।

वर्तमानकाल—क्रिया के जिस रूप से बीतते हुए समय में क्रिया का होना पाया जाय उसे वर्तमानकाल कहते हैं। जैसे—चन्द्रदेव जाता है, कपिल पढ़ रहा है।

भविष्यत्काल—क्रिया के जिस रूप से आने वाले

समय में क्रिया का होना पाया जाय उसे भविष्यत्काल कहते हैं। जैसे—अध्यापिका जायगी।

काल-उपभेद

भूतकाल के छः भेद हैं—सामान्यभूत, आसन्नभूत, पूर्णभूत, अपूर्णभूत, सांदिग्धभूत, हेतुहेतुमद्भूत।

सामान्यभूत—क्रिया के जिस रूप से बीते हुए समय के किसी विशेष भाग का निश्चय नहीं होता उसे सामान्यभूत कहते हैं। जैसे—वह गया, उसने लिखा।

आसन्नभूत—क्रिया के जिस रूप से निकट में ही (अभी अभी) क्रिया का समाप्त होना पाया जाय उसे आसन्नभूत कहते हैं। जैसे—वह गया है, उसने लिखा है।

पूर्णभूत—क्रिया के जिस रूप से दूरवर्ती बीते हुए समय में क्रिया का होना पाया जाय उसे पूर्णभूत कहते हैं। जैसे—वह फल लाया था, उसने पत्र पढ़ा था।

अपूर्णभूत—क्रिया के जिस रूप से क्रिया का बीते हुए समय में होना तो पाया जाय, पर पूरा होना न पाया जाय उसे अपूर्णभूत कहते हैं। जैसे—अर्जुन पढ़ता था, तुम जाते थे।

संदिग्धभूत—क्रिया के जिस रूप से बीते हुए समय में होने वाली क्रिया में सन्देह पाया जाय उसे संदिग्धभूत कहते हैं। जैसे—उसने कहा होगा। तू रहा होगा।

हेतुहेतुमद्भूत—क्रिया के जिस रूप से बीते हुए समय में एक क्रिया के न होने के कारण दूसरी किया का न होना पाया जाय उसे हेतुहेतुमद्भूत कहते हैं। हेतुहेतुमद्भूत दो प्रकार का होता है—पूर्ण और अपूर्ण। जैसे—पूर्णहेतुहेतुमद्भूत—कहा होता, पढ़ा होता,

लिखा होता, तुमने पत्र लिखा होता तो उसने उत्तर अवश्य दिया होता; अपूर्णहेतुहेतुमद्भूत—कहता, आता, पढ़ता, लिखता, बादल आते तो वर्षा होती; कहता होता, पढ़ता होता।

वर्तमानकाल के दो भेद हैं—सामान्यवर्तमान और संदिग्धवर्तमान।

सामान्यवर्तमान—क्रिया के जिस रूप से बीतते हुए समय में सामान्यतया क्रिया का होना पाया जाय उसे सामान्यवर्तमान कहते हैं। जैसे—तू लिखता है, वह खाता है।

संदिग्धवर्तमान—क्रिया के जिस रूप से बीतते हुए समय में होने वाली क्रिया में सन्देह पाया जाय उसे संदिग्धवर्तमान कहते हैं। जैसे—गणेश पढ़ता होगा, जनेश सोता होगा।

भविष्यत्काल के दो भेद हैं—सामान्यभविष्यत् और सम्भाव्यभविष्यत्।

सामान्यभविष्यत्—क्रिया के जिस रूप से आने वाले समय में सामान्यतया क्रिया का होना पाया जाय उसे सामान्यभविष्यत् कहते हैं। जैसे—उमा आयगी, रमा लिखेगी।

सम्भाव्यभविष्यत्—क्रिया के जिस रूप से आने वाले समय में क्रिया के होने में सम्भावना या इच्छा पाई जाय उसे सम्भाव्यभविष्यत् कहते हैं। जैसे—सम्भव है आज वर्षा हो। वह आ जाय तो तुम्हें लड्डू खिलाऊँ।

प्रकार

क्रिया के प्रकट करने की रीतियों को प्रकार कहते हैं। क्रिया प्रकट करने के तीन ढङ्ग हैं, अर्थात् प्रकार के तीन भेद हैं—

साधारण, सम्भाव्य, प्रवर्तनार्थक ।

साधारण—क्रिया के जिस ढंग से निश्चय सूचित होता है, उसे साधारण या निश्चयार्थ प्रकार कहते हैं। जैसे—देव ने लिखा, देव लिखता है, देव लिखेगा।

सम्भाव्य—क्रिया के जिस ढंग से सम्भावना, इच्छा, कर्तव्य या सन्देह सूचित होता है उसे सम्भाव्य प्रकार कहते हैं। जैसे—वह आता ही होगा। तुम्हारा कार्य सफल हो। हमें सात बजे से पहले पहुंच जाना चाहिये। पता नहीं वह उत्तीर्ण हुआ है कि नहीं!

प्रवर्तनार्थक—क्रिया के जिस ढंग से प्रभाव से या प्रार्थना से या साधारणतया किसी काम में लगना या लगाना पाया जाय उसे प्रवर्तनार्थक प्रकार कहते हैं। जैसे—जा, दूध ले आ। पत्र अवश्य लिखना। कल हमारे यहां ही भोजन करना। आपके लिये कुछ मीठा लाऊँ? सच बोलो। झूठ कभी न बोलो।

लिङ्ग, वचन, पुरुष

संज्ञा के समान क्रिया के भी दो लिङ्ग होते हैं—पुलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग। जैसे—घोड़ा दौड़ता है, गौएं चरती हैं।

वचन भी दो होते हैं—एकवचन और बहुवचन। जैसे—मुन्ना रोता है, बच्चे हँसते हैं।

क्रिया के पुरुष तीन होते हैं—उत्तमपुरुष, मध्यमपुरुष, अन्यपुरुष।

'मैं' और 'हम' के साथ आने वाली क्रिया उत्तमपुरुष, 'तू' और 'तुम' के साथ आने वाली क्रिया मध्यमपुरुष और अन्य सब सर्वनामों और संज्ञाओं के साथ आने वाली क्रिया अन्यपुरुष होती है। जैसे—मैं जाता हूँ, हम जाते हैं (उत्तमपुरुष)। तू जाता है, तुम जाते हो, (मध्यम पुरुष); वह जाता है, वे जाते हैं, वृक्ष बढ़ता है, वृक्ष बढ़ते हैं (अन्यपुरुष)।

वाच्य

क्रिया के जिस रूपान्तर से यह जाना जाय कि वाक्य में क्रिया द्वारा किए गए विधान का प्रधान विषय कर्ता या कर्म या भाव है उसे वाच्य कहते हैं।

भाव शब्द से धातु का अर्थ लिया जाता है। जैसे—'चला नहीं जाता' इसमें 'चला' भाव है, जो 'चल' धातु का अर्थ है।

वाच्य तीन प्रकार के हैं—

कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य, भाववाच्य।

कर्तृवाच्य—क्रिया के जिस रूपान्तर से यह जाना जाय कि वाक्य में क्रिया द्वारा किए गये विधान का प्रधान विषय कर्ता है उसे कर्तृवाच्य कहते हैं। जैसे—सूर्य उदय हुआ, उसने जगाया नहीं, हमने घण्टी को सुना, तू पढ़ता है, कर्मेन्द्र सोता है, चन्द्र अस्त हो जायगा।

कर्तृवाच्य में कर्ता की प्रधानता होती है, इसलिए क्रिया के लिङ्ग वचन, पुरुष कर्ता के अनुसार होते हैं और कर्ता के साथ विभक्तिचिह्न नहीं लगता; परन्तु सामान्यभूत, आसन्नभूत, पूर्णभूत और संदिग्ध भूतकाल की सकर्मक क्रियाओं के लिङ्ग, वचन, पुरुष कर्म विभक्तिरहित होने पर कर्म के अनुसार और कर्म विभक्तिसहित होने पर पुल्लिङ्ग, एक वचन और अन्यपुरुष होते हैं, परन्तु कर्ता दोनों जगह विभक्तिसहित होता है। जैसे—

मैं गया, कान्ता आई; मैंने पुस्तक पढ़ी, उसने पानी पिया था; हमने पत्र को पढ़ा, हमने चिट्ठियों को पढ़ा।

कर्तृवाच्य सकर्मक और अकर्मक दोनों प्रकार की क्रियाओं में होता है। इसमें कर्ता अवश्य रहता है।

कर्मवाच्य—क्रिया के जिस रूपान्तर से यह जाना जाय कि वाक्य में क्रिया द्वारा किए गए विधान का प्रधान विषय कर्म है उसे कर्मवाच्य कहते हैं। जैसे—तुमसे पत्र पढ़ा गया, मुझसे चिट्ठी लिखी गई; नारंगी खाई गई, सेव खाया गया; नारंगी को खाया गया, सेव को खाया गया।

कर्मवाच्य में कर्म की प्रधानता रहती है, इसलिये क्रिया के लिङ्ग वचन, पुरुष कर्म के अनुसार होते हैं और कर्ता करणकारक में आता है या कर्ता की आवश्यकता नहीं होती; परन्तु कर्म विभक्तिसहित होने पर क्रिया पुलिंग, एकवचन और अन्यपुरुष में आती है और कर्ता की आवश्यकता नहीं होती। जैसे—मुझसे रोटी खाई गई, रोटी खाई गई; बालकों को भड़काया गया, तितलियों को उड़ाया गया।

कर्मवाच्य केवल सकर्मक क्रियाओं में होता है। इसमें कर्म अवश्य रहता है।

भाववाच्य—क्रिया के जिस रूपान्तर से यह जाना जाय कि वाक्य में क्रिया द्वारा किए गए विधान का प्रधान विषय भाव है उसे भाववाच्य कहते हैं। जैसे—उससे चला गया, आया नहीं जाता, उससे जाया जायगा।

भाववाच्य में धातु का अर्थ प्रधान होता है, कर्ता या कर्म नहीं। इसमें क्रिया सदा पुलिंग, एकवचन और अन्यपुरुष रहती है और कर्ता करणकारक में आता है या कर्ता की आवश्यकता नहीं होती। जैसे—उससे आया गया, आया नहीं जायगा।

यह केवल अकर्मक क्रियाओं में होता है।

उदाहरणों द्वारा यह स्पष्ट कर दिया गया है कि क्रिया के लिंग, वचन, पुरुष कर्तृवाच्य में कर्ता के अनुसार या कर्म के अनुसार या पुल्लिंग, एकवचन, अन्यपुरुष होते हैं, कर्मवाच्य में कर्म के अनुसार या पुल्लिंग, एकवचन, अन्यपुरुष होते हैं और भाववाच्य में केवल पुल्लिंग, एकवचन, अन्यपुरुष होते हैं; इसलिये—

प्रयोग

क्रिया के लिङ्ग, वचन, पुरुष को कर्ता या कर्म या भाव के अनुसार रखने को प्रयोग कहते हैं। प्रयोग तीन प्रकार का होता है—

कर्तरिप्रयोग, कर्मणिप्रयोग, भावेप्रयोग।

(१) कर्तरिप्रयोग केवल कर्तृवाच्य में होता है। जैसे—
मैं पढ़ता हूँ, वह लिखती है, तुम जाते हो (कर्तृवाच्य)

(२) कर्मणिप्रयोग कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य में होता है। जैसे—
मैंने पुस्तक पढ़ी, उसने पत्र पढ़ा, तुमने ग्रन्थ पढ़े (कर्तृवाच्य)
मुझसे पुस्तक पढ़ी गई, उससे पत्र पढ़ा गया (कर्मवाच्य)

(३) भावेप्रयोग तीनों वाच्यों में होता है। जैसे—
मैंने पुस्तक को पढ़ा, उसने पत्र को पढ़ा (कर्तृवाच्य)
पुस्तक को पढ़ा गया, पत्र को पढ़ा गया (कर्मवाच्य)
चला नहीं जाता, सोया जाता है (भाववाच्य)

(भावेप्रयोग में क्रिया पुल्लिंग, एकवचन और अन्यपुरुष होती है)

पूर्वकालिकक्रिया

जो क्रिया मुख्य क्रिया के व्यापार से पहले हो चुकने वाले किसी व्यापार का विधान करती है और मुख्य क्रिया

के अधीन होती है उसे पूर्वकालिकक्रिया कहते हैं। यह प्राय: मुख्य क्रिया से पहले आती है।

धातु के आगे 'कर' या 'के' लगाने से पूर्वकालिक क्रिया बनती है। जैसे—मैं पढ़कर खाता हूं, वह जाकर पत्र भेजेगा, तू सो के रहा न, कोलाहल कर के ही छोड़ा न।

अभ्यास

क्रियाओं में विकार किन किन कारणों से होता है? काल किसे कहते हैं? उसके कितने भेद हैं? भूतकाल के भेद सोदाहरण लिखो। हेतुहेतुमद्भूत किसे कहते हैं? आगे लिखों में काल बताओ—सोया था, सोता था, गया, गया है, खा रहा है, लिखता, लिखा होता। प्रकार किसे कहते हैं? उसके कितने प्रकार हैं? प्रवर्तनार्थक से क्या अभिप्राय है? पढ़, पढ़ेगा, अवश्य आना, जल ले आऊँ, शायद वर्षा हो, जाता क्यों नहीं, जा तो रहा हूं—इनमें प्रकार बताओ। 'वह' 'कौन' और 'हम' के साथ आने वाली क्रिया किस पुरुष की होती है? वाच्य किसे कहते हैं? इसके भेदों के लक्षण सोदाहरण लिखो। कर्तृवाच्य कितने प्रयोगों में होता है? प्रयोग किसे कहते हैं। निम्नलिखित वाक्यों में वाच्य और प्रयोग बताओ और वाच्य-परिवर्तन करो।

कुत्ते ने काट खाया। डण्डे से मारा नहीं! पीड़ा से कराह रहा हूं। अरे, मिर्च ले आ। वैद्य को बुलाया गया। पट्टी की गई। अब दर्द कम है। अब नहाना भी बन्द है। गर्मी बहुत पड़ रही है। रहा नहीं जाता। नहा ही लूँगा। पर आराम कैसे होगा? अच्छा, सोचा जायगा। तुझसे कहा भी न गया!

वैद्य ने बुरा माना होगा! किसी प्रकार कुत्ते को तो पकड़ ला। रमेश लिखता है। मैं पढ़ूंगा।

पूर्वकालिक क्रिया किसे कहते हैं? वह कैसे बनती है?

आठवां अध्याय

क्रियाओं की रूपरचना

सामान्यभूत—१. अकारान्त धातुओं के 'अ' को पुल्लिङ्ग के एकवचन में 'आ' और बहुवचन में 'ए' और स्त्रीलिङ्ग के एकवचन में 'ई' और बहुवचन में 'ईं' करने से सामान्यभूतकाल की क्रिया बनती है। जैसे—

(लिङ्ग)	(धातु)	(एकवचन)	(बहुवचन)
पुल्लिङ्ग	बोल	बोला	बोले
स्त्रीलिंग	बोल	बोली	बोलीं

२. आकारान्त, ईकारान्त, एकारान्त और ओकारान्त धातुओं के आगे पुल्लिग के एकवचन में 'या' और बहुवचन में 'ये' अथवा 'ए' और स्त्रीलिंग के एकवचन में 'ई' और बहुवचन में 'ईं' जोड़ देने से और धातु के अन्तिम 'ई' और 'ए' को 'इ' कर देने से। जैसे—

आकारान्त

पुल्लिंग	खा	खाया	खाये, खाए
स्त्रीलिंग	खा	खाई	खाईं

ईकारान्त

पुल्लिंग	पी	पिया	पिये, पिए

स्त्रीलिंग	पी	पी	पीं

(पी+ई=पी=दीर्घसन्धि)

एकारान्त

पुल्लिंग	दे	दिया	दिये, दिए
स्त्रीलिंग	दे	दी	दीं

ओकारान्त

पुल्लिंग	सो	सोया	सोये, सोए
स्त्रीलिंग	सो	सोई	सोईं

'कर' धातु को 'की' और 'जा' धातु को 'ग' हो जाता है।

३. हो धातु के 'ओ' को और ऊकारान्त धातुओं के 'ऊ' को 'उ' करके आगे पुल्लिंग के एकवचन में 'आ' और बहुवचन में 'ए' और स्त्रीलिंग के एकवचन में 'ई' और बहुवचन में 'ईं' जोड़ने से। जैसे—

पुल्लिङ्ग	हो	हुआ	हुए
स्त्रीलिंग	हो	हुई	हुईं
पुल्लिंग	छू	छुआ	छुए
स्त्रीलिंग	छू	छुई	छुईं

आसन्नभूत—सामान्यभूतकाल की क्रिया के आगे 'होना' क्रिया के निम्नलिखित रूप क्रम से लगाने से आसन्न भूतकाल की क्रिया बनती है—

होना क्रिया के रूप

उत्तमपुरुष	हूं	हैं
मध्यमपुरुष	है	हो
अन्यपुरुष	है	हैं

जैसे—मैं बोला हूं	हम बोले हैं
तू बोला है	तुम बोले हो
वह बोला है	वे बोले हैं

पूर्णभूत—सामान्यभूत काल की क्रिया के आगे था, थे, थी, थीं लगाने से पूर्णभूत काल की क्रिया बनती है। जैसे—

पुलिंग	बोला था	बोले थे
स्त्रीलिंग	बोली थी	बोली थीं

अपूर्णभूत—अपूर्णहेतुहेतुमद्भूत काल की क्रिया के आगे था, थे, थी, थीं रूप लगाने से अपूर्णभूत काल की क्रिया बनती है। जैसे—

पुलिंग	बोलता था	बोलते थे
स्त्रीलिंग	बोलती थी	बोलती थीं

संदिग्धभूत—सामान्यभूत काल की क्रिया के आगे हूंगा, होंगे, आदि 'होना' क्रिया के भविष्यत् काल के रूप जोड़ने से संदिग्धभूत काल की क्रिया बनती है। जैसे—

पुल्लिङ्ग

उत्तमपुरुष	मैं बोला हूंगा	हम बोले होंगे
मध्यमपुरुष	तू बोला होगा	तुम बोले होगे
अन्यपुरुष	वह बोला होगा	वे बोले होंगे

स्त्रीलिङ्ग

उत्तमपुरुष	मैं बोली हूंगी	हम बोली होंगी
मध्यमपुरुष	तू बं.ली होगी	तुम बोली होगी
अन्यपुरुष	वह बोली होगी	वे बोली होंगी

पूर्णहेतुहेतुमद्भूत—सामान्यभूत काल की क्रिया के आगे होता, होते, होती, होतीं रूप लगाने से पूर्णहेतुहेतुमद्भूत काल की क्रिया बनती है। जैसे—

पुल्लिङ्ग	सोया होता	सोये होते
स्त्रीलिंग	सोई होती	सोई होतीं

अपूर्णहेतुहेतुमद्भूत—धातु के आगे ता, ते, ती, तीं प्रत्यय लगाने से और होता, होती आदि रूप विकल्प से जोड़ने से अपूर्णहेतुहेतुमद्भूत काल की क्रिया बनतीहै। जैसे—

पुल्लिंग	जाता	जाते
स्त्रीलिंग	जाती	जातीं
पुल्लिंग	जाता होता	जाते होते
स्त्रीलिंग	जाती होती	जाती होतीं

सामान्यवर्तमान—अपूर्णहेतुहेतुमद्भूत काल की क्रिया के अकेले रूप के आगे हूँ, हैं आदि रूप लगाने से सामान्य वर्तमान काल की क्रिया बनती है। जैसे—

उत्तमपुरुष	मैं लिखता हूं	हम लिखते हैं
मध्यमपुरुष	तू लिखता है	तुम लिखते हो
अन्यपुरुष	वह लिखता है	वे लिखते हैं

संदिग्धवर्तमान—अपूर्णहेतुहेतुमद्भूत काल की क्रिया के अकेले रूप के आगे हूंगा, होंगे, हूंगी, होंगी आदि रूप लगाने से संदिग्धवर्तमान काल की क्रिया बनती है। जैसे—

उत्तमपुरुष	मैं लिखता हूंगा	हम लिखते होंगे

मध्यमपुरुष	तू लिखता होगा	तुम लिखते होगे
अन्यपुरुष	वह लिखता होगा	वे लिखते होंगे

सम्भाव्यभविष्यत्—ऊँ, एं, ए, ओ, ए, एं प्रत्यय अकारान्त धातु के 'अ' के बदले कर देने से और शेष धातुओं के आगे लगाने से सम्भाव्यभविष्यत् काल की क्रिया बनती है। जैसे—

उत्तमपुरुष	मैं पढ़ूँ, गाऊँ	हम पढ़ें, गाएँ
मध्यमपुरुष	तू पढ़े, गाए	तुम पढ़ो, गाओ
अन्यपुरुष	वह पढ़े, गाए	वे पढ़ें, गाएं

अकारान्तभिन्न धातुओं के आगे एँ, ए, ओ के बदले क्रमशः वें, वे, वो भी लगाए जाते हैं। जैसे—गावें, गावे, गावो।

आकारान्त धातुओं के आगे 'यँ' और 'य' भी लगाये जाते हैं। जैसे—जायँ, जाय।

प्रवर्तनार्थक—ऊँ, एँ, . . .,ओ, ए, एँ, प्रत्यय अकारान्त धातु के 'अ' के स्थान में कर देने से और शेष धातुओं के आगे लगाने से प्रवर्तनार्थक क्रियाएं बनती हैं। मध्यमपुरुष के एकवचन में कोई प्रत्यय नहीं लगता। जैसे—

उत्तमपुरुष	मैं बोलूँ, जाऊँ	हम बोलें, जाएं
मध्यमपुरुष	तू बोल, जा	तुम बोलो, जाओ
अन्यपुरुष	वह बोले, जाए	वे बोलें, जाएं

प्रवर्तनार्थक को विधि भी कहते हैं। इसके दो भेद हैं—प्रत्यक्ष और परोक्ष। प्रत्यक्षविधि के तीन भेद हैं—साधारणविधि, आदरविधि, विशेषादरविधि।

जैसे—बोल, बोलिये, बोलियेगा।

आदरविधि और विशेषादरविधि 'आप' शब्द के साथ होती है।

आदरविधि—अकारान्त धातु के 'अ' को 'इये' अथवा 'इए' करने से और शेष धातुओं के आगे 'इये' लगाने से आदरविधि बनती है। जैसे—बोलिये, बोलिए, जाइये।

विशेषादरविधि—आदरविधि के रूप के आगे 'गा' लगाने से विशेषादरविधि बनती है। जैसे—बोलियेगा।

परोक्षविधि में 'इये' के बदले 'इयो' प्रत्यय लगता है। जैसे—लिखियो, पढ़ियो, जाइयो।

परोक्षविधि के लिये क्रिया का सामान्यरूप भी प्रयुक्त होता है। जैसे—पत्र अवश्य लिखना। जाना।

कुछ रूप अनियमित होते हैं। जैसे—

कीजिए-ये	कीजियो
दीजिए-ये	दीजियो
लीजिए-ये	लीजियो

सामान्यभविष्यत्—सम्भाव्यभविष्यत् काल की क्रिया के आगे गा, गे, गी रूप जोड़ने से सामान्यभविष्यत काल की क्रिया बनती है। जैसे—

पढ़ेगा, जाएगा	पढ़ेंगे, जाएंगे
पढ़ेगी, जाएगी	पढ़ेंगी, जाएंगी

क्रियाओं की रूपावली

अकर्मक 'उठ' धातु कर्तृवाच्य

सामान्यभूत

कर्ता पुल्लिङ्ग			कर्ता स्त्रीलिङ्ग		
(पुरुष)	(एकवचन)	(बहुवचन)	(पुरुष)	(एकवचन)	(बहुवचन)
उ०	मैं उठा	हम उठे	उ०	मैं उठी	हम उठीं
म०	तू उठा	तुम उठे	म०	तू उठी	तुम उठीं
अ०	वह उठा	वे उठे	अ०	वह उठी	वे उठीं

आसन्नभूत

मैं उठा हूं	हम उठे हैं	मैं उठी हूं	हम उठी हैं
तू उठा है	तुम उठे हो	तू उठी है	तुम उठी हो
वह उठा है	वे उठे हैं	वह उठी है	वे उठी हैं

पूर्णभूत

मैं उठा था	हम उठे थे	मैं उठी थी	हम उठी थीं
तू उठा था	तुम उठे थे	तू उठी थी	तुम उठी थीं
वह उठा था	वे उठे थे	वह उठी थी	वे उठी थीं

अपूर्णभूत

मैं उठता था	हम उठते थे	मैं उठती थी	हम उठती थीं
तू उठता था	तुम उठते थे	तू उठती थी	तुम उठती थीं
वह उठता था	वे उठते थे	वह उठती थी	वे उठती थीं

संदिग्धभूत

मैं उठा हूंगा	हम उठे होंगे	मैं उठी हूंगी	हम उठी होंगी
तू उठा होगा	तुम उठे होगे	तू उठी होगी	तुम उठी होगी
वह उठा होगा	वे उठे होंगे	वह उठी होगी	वे उठी होंगी

पूर्णहेतुहेतुमद्भूत

मैं उठा होता	हम उठे होते	मैं उठी होती	हम उठी होतीं
तू उठा होता	तुम उठे होते	तू उठी होती	तुम उठी होतीं
वह उठा होता	वे उठे होते	वह उठी होती	वे उठी होतीं

अपूर्णहेतुहेतुमद्भूत

मैं उठता, उठता होता	हम उठते, उठते होते	मैं उठती, उठती होती	हम उठतीं, उठती होतीं
तू उठता, उठता होता	तुम उठते, उठते होते	तू उठती, उठती होती	तुम उठतीं उठती होतीं
वह उठता, उठता होता	वे उठते, उठते होते	वह उठती, उठती होती	वे उठतीं, उठती होतीं

सामान्यवर्तमान

मैं उठता हूं	हम उठते हैं	मैं उठती हूं	हम उठती हैं
तू उठता है	तुम उठते हो	तू उठती है	तुम उठती हो
वह उठता है	वे उठते हैं	वह उठती है	वे उठती हैं

संदिग्धवर्तमान

मैं उठता हूंगा	हम उठते होंगे	मैं उठती हूंगी	हम उठती होंगी

तू उठता होगा	तुम उठते होगे	तू उठती होगी	तुम उठती होगी
वह उठता होगा	वे उठते होंगे	वह उठती होगी	वे उठती होंगी

सामान्यभविष्यत्

मैं उठूंगा	हम उठेंगे	मैं उठूंगी	हम उठेंगी
तू उठेगा	तुम उठोगे	तू उठेगी	तुम उठोगी
वह उठेगा	वे उठेंगे	वह उठेगी	वे उठेंगी

सम्भाव्यभविष्यत्

मैं उठूं	हम उठें	मैं उठूं	हम उठें
तू उठे	तुम उठो	तू उठे	तुम उठो
वह उठे	वे उठें	वह उठे	वे उठें

प्रवर्तना प्रत्यक्ष साधारण

मैं उठूं	हम उठें	मैं उठूं	हम उठें
तू उठ	तुम उठो	तू उठे	तुम उठो
वह उठे	वे उठें	वह उठे	वे उठें

आदरविधि—उठिये। विशेषादरविधि—उठियेगा। परोक्षविधि—उठियो, उठना।

पूर्वकालिक—उठाकर, उठके।

अकर्मक 'उठ' धातु भाववाच्य

दोनों लिंगों में एक से रूप होते हैं

सामान्यभूत—मुझसे, हमसे, तुझसे, तुमसे, उससे, उनसे उठा गया।

आसन्नभूत—मुझसे, हमसे, तुझसे, तुमसे, उससे, उनसे, उठा गया है।

पूर्णभूत—मुझसे, हमसे, तुझसे, तुमसे, उससे, उनसे, उठा गया था।
अपूर्णभूत—मुझसे, हमसे, तुझसे, तुमसे, उससे, उनसे उठा जाता था।
संदिग्धभूत—मुझसे, हमसे, तुझसे, तुमसे, उससे, उनसे उठा गया होगा।
पूर्णहेतुहेतुमद्‌भूत—मुझसे, हमसे, तुझसे, तुमसे, उससे, उनसे उठा गया होता।
अपूर्णहेतुहेतुमद्‌भूत—मुझसे, हमसे, तुझसे, तुमसे, उससे, उनसे उठा जाता या उठा जाता होता।
सामान्यवर्तमान—मुझसे, हमसे, तुझसे, तुमसे, उससे, उनसे उठा जाता है।
संदिग्धवर्तमान—मुझसे, हमसे, तुझसे, तुमसे, उससे उनसे उठा जाता होगा।
सामान्यभविष्यत्—मुझसे, हमसे, तुझसे, तुमसे, उससे, उनसे उठा जायगा।
सम्भाव्यभविष्यत्, प्रवर्तना—मुझसे, हमसे, तुझसे, तुमसे उससे, उनसे उठा जाय।

सकर्मक 'लिख' धातु कर्तृवाच्य

सामान्यभूत

कर्म पुल्लिङ्ग

एकवचन—मैंने, हमने, तूने, तुमने, उसने, उन्होंने लिखा।
बहुवचन—मैंने, हमने, तूने, तुमने, उसने, उन्होंने लिखे।

कर्म स्त्रीलिङ्ग

एकवचन—मैंने, हमने, तूने, तुमने, उसने, उन्होंने लिखी।
बहुवचन—मैंने, हमने, तूने, तुमने, उसने, उन्होंने लिखीं।

आसन्नभूत

कर्म पुल्लिङ्ग

एकवचन—मैंने, हमने, तूने, तुमने, उसने, उन्होंने लिखा है।
बहुवचन—मैंने, हमने, तूने, तुमने, उसने, उन्होंने लिखे हैं।

कर्म स्त्रीलिङ्ग

एकवचन—मैंने, हमने, तूने, तुमने, उसने, उन्होंने लिखी है।
बहुवचन—मैंने, हमने, तूने, तुमने, उसने, उन्होंने लिखी हैं।

पूर्णभूत

कर्म पुल्लिङ्ग

एकवचन—मैंने, हमने, तूने, तुमने, उसने, उन्होंने लिखा था।
बहुवचन—मैंने, हमने, तूने, तुमने, उसने, उन्होंने लिखे थे।

कर्म स्त्रीलिङ्ग

एकवचन—मैंने, हमने, तूने, तुमने, उसने, उन्होंने लिखी थी।
बहुवचन—मैंने, हमने, तूने, तुमने, उसने, उन्होंने लिखी थीं।

अपूर्णभूत

कर्ता पुल्लिङ्ग		कर्ता स्त्रीलिङ्ग	
मैं लिखता था	हम लिखते थे	मैं लिखती थी	हम लिखती थीं
तू लिखता था	तुम लिखते थे	तू लिखती थी	तुम लिखती थीं
वह लिखता था	वे लिखते थे	वह लिखती थी	वे लिखती थीं

संदिग्धभूत

कर्म पुल्लिङ्ग

एकवचन—मैंने, हमने, तूने, तुमने, उसने, उन्होंने लिखा होगा।
बहुवचन—मैंने, हमने, तूने, तुमने, उसने उन्होंने लिखे होंगे।

कर्म स्त्रीलिङ्ग

एकवचन—मैंने, हमने, तूने, तुमने, उसने, उन्होंने लिखी होगी
बहुवचन—मैंने, हमने, तूने, तुमने, उसने, उन्होंने लिखी होंगी

पूर्णहेतुहेतुमद्भूत

कर्म पुल्लिङ्ग

एकवचन—मैंने, हमने, तूने, तुमने, उसने, उन्होंने लिखा होता
बहुवचन—मैंने, हमने, तूने, तुमने, उसने, उन्होंने लिखे होते

कर्म स्त्रीलिङ्ग

एकवचन—मैंने, हमने, तूने, तुमने, उसने, उन्होंने लिखी होती
बहुवचन—मैंने, हमने, तूने, तुमने, उसने, उन्होंने लिखी होतीं

अपूर्णहेतुहेतुमद्भूत

कर्ता पुल्लिङ्ग

मैं लिखता, लिखता होता	हम लिखते, लिखते होते
तू लिखता, लिखता होता	तुम लिखते, लिखते होते
वह लिखता, लिखता होता	वे लिखिते, लिखते होते

कर्ता स्त्रीलिङ्ग

मैं लिखती, लिखती होती	हम लिखतीं, लिखती होतीं
तू लिखती, लिखती होती	तुम लिखतीं, लिखती होतीं
वह लिखती, लिखती होती	वे लिखतीं, लिखती होतीं

सामान्यवर्तमान

कर्ता पुल्लिङ्ग		कर्ता स्त्रीलिङ्ग	
मैं लिखता हूँ	हम लिखते हैं	मैं लिखती हूँ	हम लिखती हैं
तू लिखता है	तुम लिखते हो	तू लिखती है	तुम लिखती हो
वह लिखता है	वे लिखते हैं	वह लिखती है	वे लिखती हैं

संदिग्धवर्तमान

कर्ता पुल्लिङ्ग		कर्ता स्त्रीलिङ्ग	
मैं लिखता हूंगा	हम लिखते होंगे	मैं लिखती हूंगी	हम लिखती होंगी
तू लिखता होगा	तुम लिखते होगे	तू लिखती होगी	तुम लिखती होगी
वह लिखता होगा	वे लिखते होंगे	वह लिखती होगी	वे लिखती होंगी

सामान्यभविष्यत्

कर्ता पुल्लिङ्ग		कर्ता स्त्रीलिङ्ग	
मैं लिखूँगा	हम लिखेंगे	मैं लिखूंगी	हम लिखेंगी
तू लिखेगा	तुम लिखोगे	तू लिखेगी	तुम लिखोगी
वह लिखेगा	वे लिखेंगे	वह लिखेगी	वे लिखेंगी

प्रवर्तना प्रत्यक्ष साधारण

दोनों लिङ्गों में

मैं लिखूं, हम लिखें; तू लिख, तुम लिखो; वह लिखे, वे लिखें।

आदरविधि—लिखिये। विशेषादरविधि—लिखियेगा। परोक्ष-विधि—लिखियो, लिखना।

सकर्मक 'लिख' धातु कर्मवाच्य

मुझसे, हमसे, तुझसे, तुमसे, उससे, उनसे सब के साथ लगेंगे—

सामान्यभूत

कर्म पुल्लिङ्ग		कर्म स्त्रीलिङ्ग	
मैं लिखा गया	हम लिखे गये	मैं लिखी गई	हम लिखी गईं
तू लिखा गया	तुम लिखे गए	तू लिखी गई	तुम लिखी गईं
वह लिखा गया	वे लिखे गए	वह लिखी गई	वे लिखी गईं

आसन्नभूत

मैं लिखा गया हूं	हम लिखे गये हैं	मैं लिखी गई हूं	हम लिखी गई हैं
तू लिखा गया है	तुम लिखे गये हो	तू लिखी गई है	तुम लिखी गई हो
वह लिखा गया है	वे लिखे गये हैं	वह लिखी गई है	वे लिखी गई हैं

पूर्णभूत

कर्म पुल्लिङ्ग

मैं लिखा गया था	हम लिखे गए थे
तू लिखा गया था	तुम लिखे गये थे
वह लिखा गया था	वे लिखे गये थे

कर्म स्त्रीलिङ्ग

मैं लिखी गई थी	हम लिखी गई थीं
तू लिखी गई थी	तुम लिखी गई थीं
वह लिखी गई थी	वे लिखी गई थीं

अपूर्णभूत

कर्म पुल्लिङ्ग

मैं लिखा जाता था	हम लिखे जाते थे
तू लिखा जाता था	तुम लिखे जाते थे
वह लिखा जाता था	वे लिखे जाते थे

कर्म स्त्रीलिङ्ग

मैं लिखी जाती थी	हम लिखी जाती थीं
तू लिखी जाती थी	तुम लिखी जाती थीं
वह लिखी जाती थी	वे लिखी जाती थीं

संदिग्धभूत

कर्म पुल्लिङ्ग

मैं लिखा गया हूँगा	हम लिखे गए होंगे
तू लिखा गया होगा	तुम लिखे गये होगे
वह लिखा गया होगा	वे लिखे गये होंगे

कर्म स्त्रीलिङ्ग

मैं लिखी गई हूँगी	हम लिखी गई होंगी
तू लिखी गई होगी	तुम लिखी गई होगी
वह लिखी गई होगी	वे लिखी गई होंगी

पूर्णहेतुहेतुमद्भूत

कर्म पुल्लिङ्ग

मैं लिखा गया होता	हम लिखे गये होते
तू लिखा गया होता	तुम लिखे गये होते
वह लिखा गया होता	वे लिखे गये होते

कर्म स्त्रीलिङ्ग

मैं लिखी गई होती	हम लिखी गई होतीं
तू लिखी गई होती	तुम लिखी गई होतीं
वह लिखी गई होती	वे लिखी गई होतीं

अपूर्णहेतुहेतुमद्भूत

कर्म पुल्लिङ्ग

मैं लिखा जाता	हम लिखे जाते
तू लिखा जाता	तुम लिखे जाते
वह लिखा जाता	वे लिखे जाते

कर्म स्त्रीलिङ्ग

मैं लिखी जाती	हम लिखी जातीं
तू लिखी जाती	तुम लिखी जातीं
वह लिखी जाती	वे लिखी जातीं

सामान्यवर्तमान

कर्म पुल्लिङ्ग

मैं लिखा जाता हूँ	हम लिखे जाते हैं
तू लिखा जाता है	तुम लिखे जाते हो
वह लिखा जाता है	वे लिखे जाते हैं

कर्म स्त्रीलिङ्ग

मैं लिखी जाती हूँ	हम लिखी जाती हैं
तू लिखी जाती है	तुम लिखी जाती हो
वह लिखी जाती है	वे लिखी जाती हैं

संदिग्धवर्तमान

कर्म पुल्लिङ्ग

मैं लिखा जाता हूंगा	हम लिखे जाते होंगे
तू लिखा जाता होगा	तुम लिखे जाते होगे
वह लिखा जाता होगा	वे लिखे जाते होंगे

कर्म स्त्रीलिङ्ग

मैं लिखी जाती हूंगी	हम लिखी जाती होंगी
तू लिखी जाती होगी	तुम लिखी जाती होगी
वह लिखी जाती होगी	वे लिखी जाती होंगी

सामान्यभविष्यत

कर्म पुल्लिङ्ग

मैं लिखा जाऊंगा	हम लिखे जाएंगे
तू लिखा जाएगा	तुम लिखे जाओगे
वह लिखा जाएगा	वे लिखे जाएंगे

कर्म स्त्रीलिङ्ग

मैं लिखी जाऊंगी	हम लिखी जाएंगी
तू लिखी जाएगी	तुम लिखी जाओगी
वह लिखी जाएगी	वे लिखी जाएंगी

सम्भाव्यभविष्यत्

कर्म पुल्लिङ्ग

मैं लिखा जाऊं	हम लिखे जाएं
तू लिखा जाए	तुम लिखे जाओ
वह लिखा जाए	वे लिखे जाएं

कर्म स्त्रीलिङ्ग

मैं लिखी जाऊँ	हम लिखी जाएं
तू लिखी जाए	तुम लिखी जाओ
वह लिखी जाए	वे लिखी जाएं

प्रवर्तना प्रत्यक्ष साधारण

कर्म पुल्लिङ्ग

मैं लिखा जाऊँ	हम लिखे जाएं
तू लिखा जा	तुम लिखे जाओ
वह लिखा जाए	वे लिखे जाएं

कर्म स्त्रीलिङ्ग

मैं लिखी जाऊँ	हम लिखी जाएँ
तू लिखी जा	तुम लिखी जाओ
वह लिखी जाए	वे लिखी जाएं

आदरविधि—लिखे जाइये, लिखी जाइये।

विशेषादरविधि—लिखे जाइयेगा, लिखी जाइयेगा।

परोक्षविधि—लिखा जाइयो, लिखे जाइयो; लिखी जाइयो, लिखी जाइयो। लिखे जाना, लिखी जाना।

इसीप्रकार अन्य क्रियाओं के रूप होते हैं।

'हो' धातु

'हो' धातु के दो अर्थ हैं—उत्पत्ति और विद्यमानता। जैसे—होता है, अर्थात् उत्पन्न होता है; है, अर्थात् विद्यमान है। इसके रूपों में केवल सामान्यभूत और सामान्यवर्तमान काल में भेद होता है। जैसे—

उत्पत्ति

सामान्यभूत—हुआ, हुए। आसन्नभूत—हुआ है, हुए हैं। पूर्णभूत—हुआ था, हुए थे। अपूर्णभूत—होता था, होते थे। संदिग्धभूत—हुआ होगा, हुए होंगे। पूर्णहेतुहेतुमद्भूत—हुआ होता, हुए होते। अपूर्णहेतुहेतुमद्भूत—होता, होते। सामान्यवर्तमान—होता है, होते हैं। संदिग्धवर्तमान—होता होगा, होते होंगे। सामान्यभविष्यत्—होगा, होंगे। सम्भाव्यभविष्यत्—होवे, होवें। प्रवर्तना प्रत्यक्ष साधारण—हो (म० पु०)। आदरविधि—होइये। विशेषादरविधि—होइयेगा। परोक्षविधि—होइयो, हूजियो, होना।

विद्यमानता

सामान्यभूत—था, थे। सामान्यवर्तमान—है, हैं। शेष उत्पत्त्यर्थक की तरह।

अभ्यास

सामान्यभूत आदि कालों की क्रियाएं कैसे बनती हैं? विधि कितने प्रकार की है? विधियों के बनाने की विधि उदाहरण-सहित लिखो। 'हो' धातु के कितने अर्थ हैं? 'तू पास होता है' और 'तू पास है' में क्या भेद है? चल और पढ़ धातुओं के सब वाच्यों और कालों के रूप लिखो।

नवां अध्याय

क्रियाविशेषण

जिन अविकारी शब्दों से क्रिया की विशेषता प्रकट होती है उन्हें क्रियाविशेषण कहते हैं। जैसे—'धीरे बोलो' में 'धीरे' शब्द 'बोलो' क्रिया की विशेषता प्रकट करता है, इसलिये 'धीरे' शब्द क्रियाविशेषण है।

क्रियाविशेषण की विशेषता प्रकट करने वाले शब्द भी क्रियाविशेषण ही कहलाते हैं, क्योंकि वे परम्परा से क्रिया की ही विशेषता प्रकट करते हैं। जैसे—'बहुत धीरे बोलो' में 'बहुत'।

क्रियाविशेषण चार प्रकार के हैं—

स्थानवाचक, कालवाचक, परिमाणवाचक, रीतिवाचक।

१. स्थानवाचक—यहां, वहां, कहां, जहां, नीचे, ऊपर, भीतर, बाहर, आगे, पीछे, साथ, पास, दूर, सर्वत्र, सामने, इधर, उधर, किधर, जिधर, दोनों ओर, इस ओर, आरपार आदि।

२. कालवाचक—अब, तब, कब, जब, आज, कल, परसों, तुरन्त, अभी, तभी, कभी, जभी, पीछे, सदा, सर्वदा, कदाचित्, प्रतिदिन, अहर्निश, रातदिन, आजकल, बारबार, घड़ीघड़ी, पलभर, क्षणक्षण, क्षणभर, बहुधा, आजन्म, आमरण, सवेरे आदि।

३. परिमाणवाचक—(माप या अनिश्चित संख्या) बहुत, अत्यन्त, अति, खूब, किञ्चित्, जरा, निपट, बिलकुल, सर्वथा, केवल, लगभग, काफी, पर्याप्त, अधिक, कम, इतना, उतना, कितना, जितना, बराबर, थोड़ा थोड़ा, बूंद बूंद, एक एक, दो दो आदि।

४. रीतिवाचक—ज्यों, त्यों, यों, ऐसे, जैसे, वैसे, यथा, तथा, धड़ाधड़, आप ही आप, एकाएक, साधारणतः, अवश्य, ठीक, सचमुच, विशेषतः, विशेषकर, यथासम्भव, सच, न, नहीं, मत, ही, तक, भर, मात्र, सो, तो आदि।

बहुत से वाक्यांश भी क्रियाविशेषण की तरह प्रयुक्त होते हैं। जैसे—कहीं न कहीं, जहां का तहां, सच मानो तो, बारी बारी से, एक एक करके, किसी प्रकार से आदि।

क्रियाविशेषणों की रचना

क्रियाविशेषण—संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया से, शब्दों की द्विरुक्ति से और भिन्न भिन्न शब्दों के मेल से बनते हैं। जैसे—

संज्ञा से—रातभर, वर्षोंतक, ध्यानपूर्वक, सवेरे, आजन्म।

सर्वनाम से—यहां, यहीं, इधर, अब, अभी, (यह से); वहां,

वहीं, उधर, तब, तभी, (वह से); जहां, जिधर, जब, जभी (जो से); तब, तभी, त्यों ही (सो से); कहां, किधर, कब (कौन से); कहीं, कभी (कोई से)।

विशेषण से—पहले, दूसरे, तीसरे, इतने में, चुपके से, ऐसे, वैसे, कैसे, जैसे।

क्रिया से—सोते, जागते, उठते, बैठते, आते, जाते, करते।

शब्दों की द्विरुक्ति से—वहां वहां, धीरे धीरे, साफ साफ, धड़ाधड़, हाथोंहाथ, दिनदिन, महीने महीने, एकाएक, क्षणक्षण, घड़ीघड़ी।

भिन्न भिन्न शब्दों के मेल से—सांझसवेरे, घरबाहर, एकदम, वर्षछमाही, एकसाथ, यथासमय, यथाविधि, यथासम्भव, दशानुसार।

संस्कृत के करण कारक एकवचन के रूप और तःप्रत्ययान्त भी क्रियाविशेषण होते हैं। जैसे—कृपया, साधारणतया, पूर्णतया, सामान्यतया; वस्तुतः, विशेषतः, मुख्यतः, पूर्णतः, सर्वतः।

अभ्यास

क्रियाविशेषण किसे कहते हैं? उसके कितने भेद हैं? प्रत्येक भेद के सात सात उदाहरण दो। आगे लिखे क्रियाविशेषण किस किस भेद के अन्तर्गत हैं—सचमुच, अवश्य, जरूर, धड़ाधड़, एकाएक, सर्वथा, लगभग, बहुत, राततक, वर्षभर, जहां, ऊपर, नीचे, आगे। क्रियाविशेषण किन किन शब्दों से बनते हैं? संस्कृत के दस क्रियाविशेषण लिखकर वाक्यों में प्रयुक्त करो। रात, दशा, आता, हाथ, जन्म, सामान्य, वार, सुख, यह, वह, कौन—इनसे क्रियाविशेषण बनाओ।

दसवां अध्याय

सम्बन्धबोधक

वाक्य के शब्दों का एक दूसरे से सम्बन्ध बताने

वाले अविकारी शब्द सम्बन्धबोधक कहलाते हैं। जैसे—मेरे बिना तुम क्या कर लोगे? इस वाक्य में 'मेरे' और 'तुम' शब्दों का सम्बन्ध बताने वाला शब्द 'बिना' है, अत: 'बिना' शब्द सम्बन्धबोधक है।

सम्बन्धबोधक अव्यय तीन प्रकार से प्रयुक्त होते हैं—

(१) कुछ विभक्तिसहित संज्ञा के बाद आते हैं, (२) कुछ विभक्तिरहित संज्ञा के बाद आते हैं और (३) कुछ दोनों तरह से आते हैं। जैसे—

(१) मनुष्य की अपेक्षा; भीतर, खातिर, सिवाय, अतिरिक्त, ओर, निकट, समीप, पास, अपेक्षा, वास्ते।

(२) टोपीसमेत, रसहीन, विभक्तिरहित; पर्यन्त, भर, मात्र।

(३) भोजन के बिना, भोजन बिना; नौकर के द्वारा, नौकर द्वारा; अनुसार, अनुकूल, योग्य, पीछे, आगे।

कई कालवाचक और स्थानवाचक अविकारी शब्द क्रियाविशेषण भी होते हैं और सम्बन्धबोधक भी। जैसे—

क्रियाविशेषण	सम्बन्धबोधक
तुम पहले आते हो	तुम मुझसे पहले आते हो
वह पीछे चला	वह जलूस के पीछे चला

जब इनका प्रयोग क्रिया के साथ होता है तब ये क्रियाविशेषण होते हैं और जब संज्ञा या सर्वनाम के साथ होता है तब ये सम्बन्धबोधक होते हैं।

सम्बन्धबोधकों की रचना

बिना, समेत, हीन आदि मूल सम्बन्धबोधक थोड़े हैं। शेष सम्बन्धबोधक दूसरे शब्दों से बनते हैं। जैसे—

संज्ञा से—अपेक्षा, लेखे, मार्फत, पलटे, बदले।

विशेषण से—तुल्य, समान, बराबर।

क्रिया से—करके, लिए, मारे।

क्रियाविशेषण से—ऊपर, भीतर, यहां, पीछे।

अभ्यास

सम्बन्धबोधक किसे कहते हैं? उसके कितने भेद हैं? अपेक्षा, समीप, द्वारा, पर्यन्त—ये विभक्तिसहित संज्ञा के बाद आते हैं या विभक्तिरहित? कौन कौन से अविकारी शब्द क्रियाविशेषण भी होते हैं और सम्बन्धबोधक भी? उनकी पहचान क्या है? सम्बन्धबोधक किन किन शब्दों से बनते हैं? सोदाहरण लिखो।

ग्यारहवां अध्याय

योजक

जो अविकारी शब्द पदों, वाक्यांशों और वाक्यों को मिलाते हैं वे योजक कहलाते हैं। जैसे—तुम और हम; कुछ खाकर या कुछ पीकर; तुम पढ़ लेते हो, परन्तु वह नहीं पढ़ता—इनमें 'और, या, परन्तु' क्रम से पदों, वाक्यांशों और वाक्यों को मिलाते हैं, अतः योजक हैं।

योजक दो प्रकार के हैं—संयोजक और विभाजक। जैसे—

संयोजक—और, तथा, एवं, कि, इससे, अर्थात, मानों, इसलिये, अतः, ताकि, इसीलिये।

विभाजक—या, वा, या···या, न कि, अथवा, क्या···क्या न, केवल, न···न, नहीं तो, चाहे···चाहे, चाहे···परन्तु, यदि···तो, पर, परन्तु, किन्तु, यद्यपि···फिर भी, यद्यपि···तो भी, यद्यपि···तथापि।

संयोजक शब्द मेल प्रकट करते हुए शब्दों, वाक्यांशों और वाक्यों को मिलाते हैं। जैसे—तुम और हम पढ़ेंगे। तुमने बहुत परिश्रम किया था, इसीलिये तुम पास हो गये। उसने कहा कि वह बड़ा गवैया है।

विभाजक शब्द भेद प्रकट करते हुए शब्दों, वाक्यांशों और वाक्यों को मिलाते हैं। जैसे—मोहन अथवा सोहन को बुलाओ। तुम यहां से चले जाओ, नहीं तो मार बैठूंगा। यद्यपि सुषमा अनुत्तीर्ण हो गई, फिर भी वह प्रसन्नचित्त दिखाई देती थी।

और, एवं, तथा, वा, या, चाहे, नहीं तो, परन्तु, किन्तु, पर, इसीलिये, इसलिये आदि योजक संयुक्तवाक्य को जोड़ते हैं और कि, ताकि, जो, तो आदि योजक मिश्रितवाक्य को जोड़ते हैं।

अभ्यास

योजक किसे कहते हैं? उसके कितने भेद हैं? प्रत्येक भेद के चार उदाहरण दो। संयुक्त वाक्य को जोड़ने वाले कौन से योजक हैं और मिश्रितवाक्य को जोड़ने वाले कौन से हैं?

बारहवां अध्याय

द्योतक

विस्मय, हर्ष, क्रोध, शोक, भय, ग्लानि, अनुमति

आदि हृदय के विकारों को प्रकट करने वाले अविकारी शब्द द्योतक या विस्मयादिबोधक कहलाते हैं। जैसे—

विस्मयबोधक—ओहो! ऐं! हैं! वाह! क्या! लो!

हर्षबोधक—वाह वाह! अहा! धन्य!

क्रोधबोधक—क्या! हट!

शोकबोधक—हा! आह! उफ्! हाय!

भयबोधक—ईश्वर! त्राहि त्राहि! बाप रे!

ग्लानिबोधक—छिः! अरे! धिक्! दुर! थू!

अनुमतिबोधक—ठीक! हां! अच्छा! साधु!

प्रायः सब प्रकार के शब्द द्योतक बन जाते हैं। जैसे—

संज्ञा—हरे हरे! ओम्! शिव शिव! राम राम! जगदीश!

सर्वनाम—कौन! क्या! कितना! कैसा!

विशेषण—भला! अच्छा! पहला! बीसवां!

क्रिया—चुप! जा! हट! लो!

क्रियाविशेषण—कहां! सर्वत्र! ऊपर! वहां! अब!

सम्बन्धबोधक—समीप! भीतर!

योजक—अर्थात्! किन्तु! इसीलिये! तो!

कहीं कहीं वाक्यांश और वाक्य भी द्योतक बन जाते हैं। जैसे—

आखिर क्षत्रिय ही तो है! ईश्वर न करे! क्यों न हो! आप थे क्या!

अभ्यास

द्योतक किसे कहते हैं? इसके भेदों को सोदाहरण लिखो। हा, धिक्, छिः, ओह, उफ्, वाह, लो, हट, ईश्वर, ऐं, बाप रे—ये किस किस मनोविकार को बतलाते हैं? इन्हें वाक्यों में प्रयुक्त करो।

तेरहवां अध्याय

शब्दों का भिन्न भिन्न प्रयोग

कई शब्द भिन्न भिन्न शब्द-भेदों की तरह प्रयुक्त होते हैं। जैसे—

पत्थर

संज्ञा—उसने कुत्ते को पत्थर मारा।

क्रियाविशेषण—तुम पत्थर पढ़ोगे। (कुछ नहीं पढ़ सकते)।

कोई

सर्वनाम—कोई पढ़ता है, कोई खेलता है।

विशेषण—उनमें कोई लड़की चतुर नहीं।

क्रियाविशेषण—वहां कोई बीस छात्र होंगे। (लगभग)।

बड़ा

संज्ञा—बड़ों का आदर करना चाहिये।

विशेषण—काल्लू के पास बड़ा रुपया है।

क्रिया—वह सोया सोया बड़ाता था।

क्रियाविशेषण—कुन्तल बड़ा रोया, पर सब व्यर्थ।

अच्छा

संज्ञा—सदा अच्छों की संगति करो।

विशेषण—अच्छे बालक दूसरों की वस्तुएं नहीं चुराते।

क्रियाविशेषण—तू अच्छा गाता है।

द्योतक—अच्छा! मेरा ही आश्रय और मेरी ही निन्दा!

हां

संज्ञा—उसकी हां पर मुझे विश्वास नहीं।

क्रियाविशेषण—मैंने हां कर दी है।

द्योतक—हां! तुम वृक्ष उखाड़ सकते हो!

कुछ

सर्वनाम—कुछ लेटे लेटे गा रहे थे।

विशेषण—कुछ रुपये हमें भी देना।

क्रियाविशेषण—अध्यापक ने कुछ लिखा और कुछ मिटाया।

अभ्यास

पत्थर, बहुत, क्या, हां, यह—इन्हें भिन्न भिन्न शब्द-भेदों की तरह प्रयोग में लाओ।

चौदहवां अध्याय

शब्द-रचना

शब्दों की रचना तीन प्रकार से होती है—शब्द के पहले कुछ रूप लगाने से, शब्द के पीछे कुछ रूप लगाने से और कई शब्दों के मेल से।

जो रूप शब्दों के आदि में जुड़कर उनके अर्थों को बदलते हैं उन्हें उपसर्ग कहते हैं। जो रूप शब्दों के अन्त में जुड़कर उनके रूपों को बदलते हैं उन्हें प्रत्यय कहते हैं। अनेक शब्दों के मेल से जो शब्द बनते हैं उन्हें समस्त या सामासिक शब्द कहते हैं। जैसे—

१. उपसर्ग—प्रहार, आहार, संहार, विहार, परिहार, उद्धार—इनमें प्र, आ, सम्, वि, परि, उत् उपसर्ग हैं।

२. प्रत्यय—खाया, उड़ाका, गायक, करनेवाला, बालकपन, मूर्खता, साधुत्व, आढ़तिया—इनमें या, आका, अक, वाला, पन, ता, त्व, इया प्रत्यय हैं।

प्रत्यय तीन प्रकार के हैं—क्रियाप्रत्यय, कृत्प्रत्यय, तद्धितप्रत्यय।

धातु के अन्त में जिन प्रत्ययों को लगाने से क्रियाएं बनती हैं उन्हें क्रियाप्रत्यय कहते हैं। जैसे—खाया, खाता है, खाएगा—इनमें या, ता है, एगा क्रियाप्रत्यय हैं।

धातु के अन्त में जिन प्रत्ययों को लगाने से क्रियाओं को छोड़ अन्य शब्द बनते हैं उन्हें कृत्प्रत्यय कहते हैं। जैसे—गायक, जानेवाला, लेन-देन—इनमें अक, वाला, न कृत्प्रत्यय हैं। कृत्प्रत्यय लगाने से जो शब्द बनते हैं उन्हें कृदन्त कहते हैं।

धातु को छोड़ अन्य शब्दों के अन्त में जिन प्रत्ययों को लगाने से क्रियाओं को छोड़ अन्य शब्द बनते हैं उन्हें

तद्धितप्रत्यय कहते हैं। जैसे—मनुष्यत्व, लकड़हारा, पानवाला——इनमें त्व, हारा, वाला तद्धितप्रत्यय हैं। तद्धितप्रत्यय लगाने से जो शब्द बनते हैं उन्हें तद्धितान्त कहते हैं।

उपसर्ग और प्रत्यय शब्दों में जुड़कर अन्य शब्दों को बनाते हैं, इसलिये इन्हें शब्दांश कहते हैं।

३. समस्तशब्द—रसोईघर, राजपुत्र, रातदिन। ये रसोई और घर, राज और पुत्र तथा रात और दिन शब्दों के मेल से बने हैं।

अभ्यास

शब्दों की रचना कितने प्रकार से होती है? उपसर्ग, प्रत्यय और समस्तशब्द किसे कहते हैं? उदाहरण सहित समझाओ। प्रत्यय कितने प्रकार के हैं? उनके भेदों के लक्षण-उदाहरण लिखो। क्रियाप्रत्यय और कृत्प्रत्यय में; कृत्प्रत्यय और तद्धितप्रत्यय में क्या भेद है? सोदाहरण लिखो। शब्दांश किसे कहते हैं?

———

पन्द्रहवां अध्याय

उपसर्ग

उपसर्ग शब्दों के आदि में जुड़कर उनके अर्थों को बदलते हैं। जैसे—कर्म शब्द का अर्थ है 'कार्य'। 'सु' उपसर्ग लगाने से 'सुकर्म' शब्द बनता है, जिसका अर्थ 'अच्छा कार्य' होता है। इसी प्रकार 'दुस्' उपसर्ग लगाने से 'दुष्कर्म' शब्द बनता है, जिसका अर्थ 'बुरा कार्य' होता है।

उपसर्ग एक से अधिक भी लगते हैं। जैसे—प्रतिविधान में 'प्रति' और 'वि'। विसंगति में 'वि' और 'सम्'। प्रत्युपकार में 'प्रति' और 'उप'।

१. संस्कृत के सब उपसर्ग तत्सम शब्दों के साथ हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं। संस्कृत उपसर्ग, उनके अर्थ और उदाहरण निम्नलिखित हैं—

प्र—अधिक, समर्थ। जैसे—प्रबल, प्रभाव, प्रगति।

परा—उलटा, पीछे, परे। जैसे—पराजय, पराभव, परास्त।

अप—बुरा, हीन, विरुद्ध। अपशब्द, अपमान, अपवाद।

सम्—अच्छी तरह, पूर्णतया, साथ। जैसे—संयोग, संग्रह, सन्तोष, संवाद, संस्कार, सम्मति, संहार।

अनु—समान, पीछे, अनुकूल। जैसे—अनुकरण, अनुचर, अनुवाद।

अव—विरुद्ध, रहित, नीचे। जैसे—अवगुण, अवमान, अवतार।

निस्, निर्—रहित, बाहर, अच्छी तरह। जैसे—निरपराध, निर्गत, निर्गुण, निर्णय, निश्चय।

दुस्, दुर्—बुरा, कठिन। जैसे—दुर्जन, दुराचार, दुर्बोध, दुष्कर।

वि—विशेष, अभाव, भिन्न, बुरा। जैसे—विज्ञ, विगुण, विदेश, विकार।

आ—तक, से लेकर, सीमा, उलटा। जैसे—आमरण, आजन्म, आसमुद्र, आगमन।

नि—अभाव, अधिक। जैसे—निरोध, निगम।

अधि—ऊपर, प्रधान। जैसे—अधिकार, अध्याहार, अधिपति।

अति—अधिक, बहुत, रहित। जैसे—अत्यन्त, अतिमूर्ख, अतिशय, अतिरिक्त।

सु—अच्छा, उत्तम, अधिक, सहज। जैसे—सुकर्म, सुसंवाद, सुबोध, सुगम।

उत्—ऊपर, अधिक, उत्कृष्ट। जैसे—उत्पत्ति, उन्माद, उत्तम।

अभि—पास, सामने, चारों ओर, मनोरथ। जैसे—अभ्यागत,

अभिमुख, अभिनय, अभिप्राय ।

प्रति—विरुद्ध, सामने, हर । जैसे—प्रतिकार, प्रत्यय, प्रत्यक्ष, प्रतिमास ।

परि—पूर्णतया, सब ओर, समीप । जैसे—परिमाण, परिक्रमा, परिजन ।

उप—समीप, सामान्य, छोटा । जैसे—उपकार, उपचार, उपवेद, उपमन्त्री ।

२. कई अव्यय और विशेषण भी उपसर्गों की तरह तत्सम शब्दों के आदि में लगते हैं । जैसे—

अ—उलटा, विरुद्ध । जिन शब्दों के आदि में व्यञ्जन हो उनके पहले लगता है । जैसे—असत्य, अगम, अतुल, अचर, अमन्त्र, अनित्य ।

अन्—उलटा, विरुद्ध । जिन शब्दों के आदि में स्वर हो उनके पहले लगता है । जैसे—अनन्त, अनुपम, अनकारान्त, अनैश्वर्य, अनादि ।

अधस्—नीचे । जैसे—अधोगति, अधःपतन, अधोमुख ।

पुरस्—सामने, आगे । जैसे—पुरस्सर, पुरस्कार, पुरोहित ।

तिरस्—छोटा, अपमान, लुप्त । तिरस्कार, तिरोभूत ।

सह, स—साथ । जैसे—सहकारी, सहचर, सहज; सफल, सपुत्र, सकलत्र, सपरिवार ।

अन्तर्—अन्दर । जैसे—अन्तर्गत, अन्तःकरण, अन्तर्नाद, अन्तरात्मा ।

पुनर्—फिर । जैसे—पुनर्जन्म, पुनरुक्त ।

बहिर्—बाहर । जैसे—बहिर्गत, बहिष्कार ।

पुरा—पहले । जैसे—पुरातन, पुराकल्प ।

कु, का—बुरा । जैसे—कुपुरुष, कुकर्म, कापुरुष ।

सत्—अच्छा । जैसे—सत्कर्म, सज्जन ।

स्व—अपना। जैसे—स्वदेश, स्वजन, स्वतन्त्र।

३. हिन्दी उपसर्ग प्रायः संस्कृत उपसर्गों के ही अपभ्रंश हैं। जैसे—

अ, अन—अभाव, विरुद्ध। जैसे—अकथ, अथाह; अनजान, अनबन।

अध—आधा। जैसे—अधकच्चा, अधपका, अधमरा। यह संस्कृत के अर्द्ध शब्द का अपभ्रंश है।

औ—उलटा, विरुद्ध। जैसे—औगुण, औघट। यह संस्कृत के 'अव' शब्द का अपभ्रंश है। आजकल इसका प्रयोग अधिक सम्मत नहीं।

नि—रहित। जैसे—निधड़क, निकम्मा, निडर, निपट।

सु, स—अच्छा। जैसे—सुजान, सुडौल, सपूत।

कु, क—बुरा। जैसे—कुटेव, कपूत।

भर—पूरा। जैसे—भरपूर, भरपेट।

बि—विशेष। जैसे—बिछुड़ना।

४. उर्दू उपसर्ग—

बे, ला, ना—रहित। जैसे—बेमिसाल, बेपरवाह, बेचारा; लाचार; नापसन्द।

बा—अनुसार, साथ। जैसे—बाक़ायदा, बातमीज।

बद—रहित, बुरा। जैसे—बदतमीज, बदजात, बदबख्त, बदनाम।

दर—में। जैसे—दरअसल।

हर—प्रत्येक। जैसे—हरएक, हरघड़ी, हरबात।

प्रत्यय

जो शब्दांश शब्दों के अन्त में लगकर उनके अर्थों को बदलते हैं उन्हें प्रत्यय कहते हैं। जैसे—करता है, खानेवाला, लड़कपन—इसमें ता है, वाला, पन प्रत्यय हैं।

प्रत्यय तीन प्रकार के होते हैं—क्रिया प्रत्यय, कृत्प्रत्यय, तद्धित-प्रत्यय। क्रियाप्रत्यय 'क्रियाओं की रूपरचना' में बतला दिए गए हैं।

कृत्प्रत्यय

कृत्प्रत्यय पांच प्रकार के हैं—कर्तृवाचक, कर्मवाचक, करणवाचक, भाववाचक, क्रियाद्योतक।

कर्तृवाचक—कर्तृवाचक वे हैं जिनके लगने से क्रिया करने वाले का बोध होता है। कर्तृवाचक कृदन्त निम्न-लिखित प्रकार से बनते हैं—

(१) क्रिया के सामान्यरूप के 'ना' को 'ने' करके आगे 'वाला' प्रत्यय लगाने से। जैसे—पढ़नेवाला।

(२) क्रिया के सामान्यरूप के 'ना' को 'न' करके आगे 'हार' और 'सार' प्रत्यय लगाने से। जैसे—होनहार, मिलनसार।

(३) धातु के अन्तिम स्वर के स्थान में अक्कड़, आऊ, आक, आका, आड़ी, इयल, ऊ, एरा, ऐत, ओड़, ओड़ा, अक आदि प्रत्यय लगाने से। जैसे—बुझक्कड़, उड़ाऊ, तैराक, उड़ाका, खिलाड़ी, सड़ियल, भग्गू, लुटेरा, लठैत, हंसोड़, भगोड़ा, पालक।

कर्मवाचक—कर्मवाचक वे हैं जिनके लगने से कर्म का बोध होता है। जैसे—ना, नी, औना आदि से ओढ़ना, ओढ़नी, बिछौना आदि।

करणवाचक—करणवाचक वे हैं जिनके लगने से

क्रिया के साधन का बोध होता है। जैसे——आ, ई, ऊ, न, ना, नी, आनी आदि से झूला, रेती, झाड़ू, झूलना, धौंकनी, मथानी आदि।

कर्मवाचक से कर्म का बोध होता है। जैसे—जिसको ओढ़ा जाय वह ओढ़ना, ओढ़नी। करणवाचक से करण का बोध होता है, जैसे——जिससे झूला जाय वह झूलना, जिससे कतरा जाय वह कतरनी।

भाववाचक——भाववाचक वे हैं जिनके लगने से क्रिया के अर्थ का बोध होता है। जैसे——अ, आ, आई, आन, आप, आव, आवट, आवा, आहट, ई, एरा, औता, औती, त, ती, न, ना, नी आदि से समझ, मेला, लड़ाई, मिलान, मिलाप, चढ़ाव, मिलावट, बुलावा, घबराहट, बोली, बसेरा, समझौता, मनौती, लिखत-पढ़त, बढ़ती, चलन, उठना, मिलनी आदि।

क्रियाद्योतक——क्रियाद्योतक या क्रियार्थक वे हैं जिनके लगने से भूत या वर्तमान काल की क्रियाओं की तरह के विशेषण या अव्यय बनते हैं। जैसे——आ, या, तो आदि से मरा, गया, सोता आदि। इनके आगे कहीं कहीं हुआ भी लगता है। जैसे—गुजरा हुआ जमाना, खोया हुआ बालक; दौड़ता हुआ कुत्ता।

क्रियाद्योतक कृदन्तों के अन्तिम 'आ' को 'ए' कर देने से अव्यय बन जाते हैं। जैसे—उसने लेटे-लेटे तलवार चलाई। सोते-जागते तुम्हारा ही ध्यान है।

कर्तृवाचक प्रत्ययों से संज्ञाएं और विशेषण बनते हैं; कर्मवाचक, करणवाचक और भाववाचक प्रत्ययों से केवल संज्ञाएं बनती हैं और क्रियाद्योतक से विशेषण और अव्यय बनते हैं।

तद्धितप्रत्यय

धातु को छोड़ अन्य शब्दों के आगे जिन प्रत्ययों को लगाने से क्रिया के अतिरिक्त अन्य शब्द बनते हैं उन्हें तद्धितप्रत्यय कहते हैं। जैसे—पानवाला में 'वाला'।

तद्धितप्रत्यय बहुत अधिक हैं। इन प्रत्ययों के लगने पर प्राय: शब्दों में भी विकार हो जाता है।

तद्धितप्रत्ययों से तीन प्रकार के शब्द बनते हैं।

(१) संज्ञाओं, सर्वनामों और अव्ययों में प्रत्यय लगाने से विशेषण। जैसे—टोपी+वाला=टोपीवाला; वह+सा=वैसा; पीछे+ला=पिछला।

(२) संज्ञाओं और विशेषणों में प्रत्यय लगाने से क्रमश: संज्ञाएं और भाववाचक संज्ञाएं। जैसे—लोहा+आर=लोहार; खट्टा+आई=खटाई।

(३) संज्ञाओं, सर्वनामों और विशेषणों में प्रत्यय लगा कर अव्यय। जैसे—बदला+ए=बदले; यह+ओं=यों;

बहुत+एरा=बहुतेरा।

मुख्य तद्धितप्रत्यय

कर्तृवाचक—आर, इयल, इया, एरा, गर, वाला। जैसे—सोनार, दढ़ियल, आढ़तिया, संपेरा, कलईगर, झाड़ूवाला।

व्यापारवाचक—ई, उआ, एरा, वाला, हारा। जैसे—तेली, मछुआ, कसेरा, दूधवाला, लकड़हारा।

सम्बन्धवाचक—एरा, जा, ओई। जैसे—ममेरा, चचेरा; भानजा, भतीजा; ननदोई।

भाववाचक—आ, आई, आका, आटा, आन, आपा, आयत, आस, आहट, ई, औती, त, ता, पन। जैसे—आपा, ऊंचाई, धमाका, झन्नाटा, ऊंचान, बुढ़ापा, बहुतायत, मिठास, चपलाहट, चालाकी, बपौती, रंगत, मूर्खता, बालकपन।

ऊनतावाचक—आ, इया, ई, ड़ा, ड़ी, री। जैसे—मनुआ, कुतिया, मण्डली, चमड़ा, टंगड़ी, कोठरी।

क्रमवाचक या पूरणवाचक—ला, रा, था, ठा, वां। जैसे—पहला, दूसरा, चौथा, छठा, सातवां।

सादृश्यवाचक—सा, हरा, हला। जैसे—पीला सा, मुझसा, सुनहरा, सुनहला।

तद्धितान्त अव्यय—ए, ओं, ब। जैसे—वैसे, यों, अब।

यह बात ध्यान में रखनी चाहिये कि धातुओं को छोड़ अन्य शब्दों के पीछे प्रत्यय लगने से यदि क्रिया के अतिरिक्त अन्य शब्द बनें तो वे तद्धितान्त होते हैं और यदि क्रियाएं बनें तो वे नामधातु होती हैं।

उपसर्ग और प्रत्यय में क्या भेद है ? संस्कृत, हिन्दी और उर्दू के चार चार उपसर्ग अर्थ और उदाहरण सहित लिखो। प्रतिदिन, प्रमाण, परिणाय, सोत्साह, वियोग, अपमान, बेमिसाल, प्रत्युपकार, अनदेखे इनमें उपसर्ग और उनके अर्थ बताओ। कृत्प्रत्यय कितने प्रकार के हैं ? कर्तृवाचक कृदन्त किस प्रकार बनते हैं ? ओढ़नी, झूलना, गानेवाला, मिलनसार, लिखावट, भागना में कौन कौन से कृत्प्रत्यय किस किस अर्थ को बतलाते हैं ? जा, बोल, मथ, सूंघना—इनसे कृदन्त बनाओ। तद्धितप्रत्ययों से कितने प्रकार के शब्द बनते हैं ? उदाहरण सहित लिखो। मुख्य मुख्य दस तद्धितप्रत्यय अर्थ और उदाहरण सहित बतलाओ। सुनार, कसेरा, बहनोई, मूर्खता, लुटिया, पांचवां, कालासा—इनमें तद्धितप्रत्यय और उनके अर्थ बताओ। टोपीवाला, पढ़नेवाला, होनहार, लुहार, संपेरा, लुटेरा, चपलाहट, घबराहट, लम्बाई, पढ़ाई, ऊंचान, मिलान, मरियल, दढ़ियल—इनमें कौन से तद्धितान्त हैं तथा कौन से कृदन्त और क्यों ? तद्धितप्रत्यय और नामधातुप्रत्यय में क्या भेद है ?

सोलहवां अध्याय

समास

परस्पर सम्बन्ध रखने वाले अनेक शब्दों के मेल को समास कहते हैं। जैसे—गंगा का तट=गंगातट । राजा की माता = राजमाता । रसोई के लिये घर = रसोईघर ।

समास में एक दूसरे के सम्बन्ध को बतलाने वाली विभक्ति का लोप हो जाता है । जैसे—गंगातट में 'का', राजमाता में 'की' और रसोईघर में 'के लिये' विभक्ति का लोप हुआ है।

समास से बनने वाले शब्द समस्त या सामासिक कहलाते हैं। गंगातट, राजमाता और रसोईघर शब्द समस्त या सामासिक हैं।

समस्त शब्द जिन शब्दों के मेल से बनता है, उन शब्दों को खण्ड कहते हैं। गंगातट में गंगा और तट, राजमाता में राजा और माता तथा रसोईघर में रसोई और घर खण्ड हैं।

समस्त शब्द के खण्डों को पृथक् करके बतलाने की रीति को विग्रह कहते हैं। जैसे—गंगातट का विग्रह 'गंगा का तट', राजमाता का विग्रह 'राजा की माता' और रसोईघर का विग्रह 'रसोई के लिये घर' होता है।

१. कुछ समस्त शब्दों का पहला खण्ड प्रधान होता है । जैसे—यथासमय=समय के अनुसार, प्रतिदिन=प्रत्येक दिन, बेखटके=खटका रहित । इनमें यथा, प्रति और बे खण्ड प्रधान हैं ।

२. कुछ समस्त शब्दों का दूसरा खण्ड प्रधान होता है । जैसे—मुनिबालक=मुनि का बालक, दिनमान=दिन का मान, वेदाङ्ग=वेद का अङ्ग । इनमें बालक, मान और अङ्ग खण्ड प्रधान हैं ।

३. कुछ समस्त शब्दों के दोनों खण्ड प्रधान होते हैं । जैसे—दालरोटी=दाल और रोटी, मांबाप=मां और बाप, रुपयापैसा=रुपया और पैसा । इनमें दोनों खण्ड प्रधान हैं ।

४. कुछ समस्त शब्दों का कोई भी खण्ड प्रधान नहीं होता । जैसे—बारहसिंगा=बारह हैं सींग जिसके, जितेन्द्रिय=जीत ली हैं इन्द्रियां जिसने, दशानन=दश हैं आनन जिसके । इनमें प्रत्येक शब्द का कोई भी खण्ड प्रधान नहीं ।

उक्त भेदों के कारण समास के मुख्य चार भेद हैं—१. अव्ययीभाव, २. तत्पुरुष, ३. द्वन्द्व, ४. बहुव्रीहि ।

तत्पुरुष का उपभेद कर्मधारय और कर्मधारय का उपभेद द्विगु—ये दो समास और हैं ।

इस प्रकार समास छः प्रकार के हैं—अव्ययीभाव, तत्पुरुष, कर्मधारय, द्विगु, द्वन्द्व, बहुव्रीहि ।

अव्ययीभाव

जिस समास में प्रायः पहला खण्ड प्रधान होता है और समस्त शब्द अव्यय बन जाता है उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं । जैसे—आजन्म, हाथोंहाथ, प्रतिदिन, यथासंख्य, बीचोंबीच, धड़ाधड़, यथामति, साफ़साफ़ ।

तत्पुरुष

जिस समास में दूसरा खण्ड प्रधान होता है और पहले खण्ड की कर्ताभिन्न-कारक की विभक्ति का लोप हो जाता है उसे तत्पुरुष समास कहते हैं । जैसे—राजा का पुरुष = राजपुरुष । कर्म आदि कारकों की विभक्तियों के लोप के अनुसार तत्पुरुष के कर्मतत्पुरुष आदि भेद होते हैं । जैसे—

कर्मतत्पुरुष—ग्राम को गया हुआ = ग्रामगत ।

करणतत्पुरुष—हर्ष से लिखा हुआ = हर्षलिखित । प्रकाश से युक्त=प्रकाशयुक्त । मन से मानी= मनमानी । रेखा से अङ्कित=रेखाङ्कित ।

सम्प्रदानतत्पुरुष—राह के लिये खर्च=राहखर्च । हवन के लिये सामग्री=हवनसामग्री । युद्ध के लिये भूमि= युद्धभूमि ।

अपादानतत्पुरुष—भय से भीत=भयभीत । जन्म से रोगी=जन्मरोगी । मद से मत्त=मदमत्त ।

सम्बन्धतत्पुरुष—ऋषि की कन्या=ऋषिकन्या । चन्द्र का प्रकाश=चन्द्रप्रकाश । कूप का जल=कूपजल । नगर का सेठ=नगरसेठ । अमृत की धारा=अमृतधारा ।

अधिकरणतत्पुरुष—आनन्द में मग्न=आनन्दमग्न ।

जल में मग्न=जलमग्न। वन में वास=वनवास। सिर पर बीती=सिरबीती।

कर्मधारय

जिस समास में समस्त शब्द के खण्ड विशेष्य-विशेषण या उपमान-उपमेय होते हैं उसे कर्मधारय समास कहते हैं। जैसे—पीतवस्त्र, लालमिरच, भलामानस, सत्यवचन, सद्धर्म, उपरिलिखित, अधोलिखित—इनमें दोनों खण्ड विशेष्य और विशेषण हैं। भव रूपी सागर=भवसागर, विद्या रूपी धन=विद्याधन, मुख रूपी चन्द्र=मुखचन्द्र—इनमें दोनों खण्ड उपमान और उपमेय हैं।

द्विगु

जिस समास में समस्त शब्द का पहला खण्ड संख्या-वाचक होता है उसे द्विगु समास कहते हैं। जैसे—चौराहा, इकन्नी, पंसेरी, छप्पय, चौथाई, चारपाई, दोपहर, अठन्नी, त्रिलोकी, सतसई, अष्टपदी, नवग्रह, तीनपात।

द्वन्द्व

जिस समास में समस्त शब्द के सब खण्ड प्रधान होते हैं तथा जिसका विग्रह करने पर बीच में 'और' अथवा 'या' लगता है उसे द्वन्द्व समास कहते हैं। जैसे—रातदिन, मांबाप, दालरोटी, रुपयापैसा, हाथमुंह, धनीमानी,

अन्नजल, पापपुण्य, खट्टामीठा, ऊंचनीच। इनका विग्रह रात और दिन, मां आर बाप, दाल और रोटी आदि होता है।

द्वन्द्व समास के जिन समस्त शब्दों से एक मिश्रित वस्तु का बोध होता है वे एकवचन में प्रयुक्त होते हैं। जैसे—मैंने दालरोटी खा ली है, उसके पास रुपयापैसा कुछ नहीं है, इसी बात में तो ऊँचनीच है। जिनसे एक मिश्रित वस्तु का बोध नहीं होता वे बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं। जैसे—राम-लक्ष्मण बड़े वीर थे। सब धनी-मानी चल दिए।

बहुव्रीहि

जिस समास में समस्त शब्द का कोई भी खण्ड प्रधान नहीं होता और जिससे 'वाला, वाली' या 'जो' शब्द के 'जिसका, जिसकी' आदि अर्थ पता चलते हैं उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं। जैसे—दो रंगों वाली=दोरंगी। चतुर् (चार) भुजाओं वाला=चतुर्भुज। दश हैं आनन जिसके =दशानन। महान् है आत्मा जिसकी=महात्मा। सुन्दर है मुख जिसका=सुमुख, सुमुखी स्त्री। नहीं है दया जिसमें= निर्दय। कमल के समान हैं नेत्र जिसके= कमलनेत्र। घन की तरह है श्याम जो=घनश्याम। नहीं है धन जिसके= निर्धन। नहीं है पुत्र जिसके=अपुत्र। लाल है कुर्ती जिसकी =लालकुर्ती। बुरी है बुद्धि जिसकी=दुर्बुद्धि।

तत्पुरुष का एक भेद अलुक्समास भी होता है। जैसे—मनसिज, युधिष्ठिर, वाचस्पति। इनमें संस्कृत की विभक्तियों का लुक् (लोप) नहीं हुआ।

तत्पुरुष का एक और भेद नञ्तत्पुरुष भी होता है। जैसे—अनित्य, असत्य, अनुदार, अनिष्ट इनमें शब्दों के पहले नञ् (व्यञ्जनों के पहले 'अ' और स्वरों के पहले 'अन्') लगा हुआ है।

कर्मधारय का एक भेद मध्यमपदलोपी भी होता है। जैसे—दही में डूबा बड़ा = दहीबड़ा। घृतमिश्रित अन्न = घृतान्न। पानी से भरे बतासे = पानीबतासे। इनमें बीच वाले पद (खण्ड) का लोप हो जाता है।

कुछ समस्त शब्दों में अर्थभेद से समासभेद होता है। जैसे—

नीलाम्बर—नीला+अम्बर, नीला कपड़ा = कर्मधारय।

नीलाम्बर—नीला है अम्बर जिसका = बहुव्रीहि।

चन्द्रमुख—चन्द्र जैसा मुख = कर्मधारय।

चन्द्रमुख—चन्द्र के समान है मुख जिसका = बहुव्रीहि।

कुमति—कु+मति, बुरी मति = कर्मधारय।

कुमति—बुरी है मति जिसकी=बहुव्रीहि।

अभ्यास

समास किसे कहते हैं ? समस्त या सामासिक शब्द से क्या अभिप्राय है ? खण्ड और विग्रह के लक्षण और उदाहरण लिखो। किस किस समास में कौन कौन सा खण्ड प्रधान होता है ? समास के भेदों के नाम लक्षण उदाहरण सहित बतलाओ। यथामति, दुर्बुद्धि, दुनाली, चौराहा, रसोईघर, धूर्तमण्डली, साहित्यरत्न, दुरात्मा, महामहोपाध्याय, उपमन्त्री, खटमल—इनका विग्रह करो और इनमें समास बताओ। अलुक्समास, नञ्तत्पुरुष और मध्यमपदलोपी किसे कहते हैं ? सोदाहरण समझाओ। अर्थभेद से समास में किस प्रकार भिन्नता होती है ?

सत्रहवां अध्याय

सन्धि

वर्णों के पास पास होने के कारण मेल होने से उनमें जो विकार होता है उसे सन्धि कहते हैं। जैसे— विद्या+आलय=विद्यालय।

वाक्यगत दो शब्दों के वर्णों में उनके पास पास होने पर भी विकार नहीं होता। जैसे—वनमाली ईश्वर का ध्यान करता है। यहां 'वनमालीश्वर' रूप नहीं बनता।

सन्धि तीन प्रकार की है—स्वरसन्धि, व्यञ्जनसन्धि, विसर्गसन्धि।

स्वरसन्धि

स्वरों के पास पास होने से उनमें जो विकार होता है उसे स्वरसन्धि कहते हैं। इसके छः भेद हैं—दीर्घ, गुण, वृद्धि, पररूप, पूर्वरूप, यण्।

दीर्घसन्धि—अ,आ से परे अ,आ हो तो दोनों के मेल से आ; इ,ई से परे इ,ई हो तो ई; उ,ऊ से परे उ,ऊ हो तो ऊ हो जाता है। जैसे—

अ+अ =आ—सत्य+अर्थ =सत्यार्थ
अ+आ =आ—परम+आनन्द=परमानन्द
आ+अ =आ—परा+अस्त =परास्त
आ+आ =आ—कृपा+आलु =कृपालु
इ+इ =ई—कवि+इन्द्र =कवीन्द्र

इ+ई=ई—कपि+ईश =कपीश

ई+इ=ई—मही+इन्द्र =महीन्द्र

ई+ई=ई—नदी+ईश =नदीश

उ+उ=ऊ—साधु+उपदेश =साधूपदेश

उ+ऊ=ऊ—लघु+ऊर्मि =लघूर्मि

ऊ+उ=ऊ—वधू+उत्सव =वधूत्सव

ऊ+ऊ=ऊ—वधू+ऊकार =वधूकार

गुणसन्धि—अ,आ से परे इ,ई हो तो दोनों के मेल से ए; उ,ऊ हो तो ओ; ऋ,ॠ हो तो अर् हो जाता है। जैसे—

अ+इ=ए —देव+इन्द्र =देवेन्द्र

अ+ई=ए —सुर+ईश =सुरेश

आ+इ=ए —महा+इन्द्र =महेन्द्र

आ+ई=ए —रमा+ईश =रमेश

अ+उ=ओ—देव+उत्सव =देवोत्सव (सूर्योदय)

आ+उ=ओ —महा+उत्सव =महोत्सव (महोदय)

अ+ऋ=अर्—देव+ऋषि =देवर्षि

आ+ऋ=अर्—महा+ऋषि =महर्षि (ब्रह्मर्षि, राजर्षि)

वृद्धिसन्धि—अ,आ से परे ए,ऐ हो तो दोनों के मेल से ऐ; ओ,औ हो तो औ हो जाता है। जैसे—

अ+ए=ऐ—एक+एक =एकैक

आ+ए=ऐ—तथा+एव =तथैव

अ+ऐ=ऐ—लठ+ऐत =लठैत

आ+ऐ=ऐ—महा+ऐश्वर्य=महैश्वर्य

अ+ओ=औ—जल+ओघ =जलौघ

अ+ओ=औ—महा+ओषधि=महौषधि

अ+औ=औ—परम+औषध=परमौषध

आ+औ=औ—महा+औदार्य=महौदार्य

पररूपसन्धि—कहीं कहीं 'अ' और 'आ' से परे 'ए' और 'ओ' हो तो 'अ' और 'आ' 'ए' और 'ओ' के रूप में मिल जाते हैं। जैसे—

अ+ए=ए—सप+एरा =सपेरा

आ+ए=ए—फुफा+एरा =फुफेरा

अ+ओ=ओ—बहिन+ओई =बहिनोई

दन्त+ओष्ठ=दन्तोष्ठ

कोस+ओं =कोसों

पूर्वरूपसन्धि—कहीं कहीं 'ओ' से परे 'अ' हो तो 'अ' 'ओ' में मिल जाता है। जैसे—

ओ+अ=ओ—मनो+अवधान=मनोवधान

यशो+अधिकार=यशोधिकार

यण्सन्धि—भिन्न स्थान और प्रयत्न वाला स्वर परे होने पर ह्रस्व या दीर्घ 'इ' को 'य्'; 'उ' को 'व्' और 'ऋ' को 'र्' हो जाता है। जैसे—

इ+अ=य—यदि+अपि =यद्यपि

इ+आ=या—इति+आदि=इत्यादि

इ+उ=यु—प्रति+उपकार=प्रत्युपकार

इ+ए =ये —प्रति+एक =प्रत्येक

उ+अ =व —अनु+अर्थ =अन्वर्थ

उ+आ=वा —सु +आगत =स्वागत

उ+ए =वे —अनु+एषण =अन्वेषण

ऋ+आ=रा —मातृ+आनन्द=मात्रानन्द

व्यञ्जनसन्धि

व्यञ्जन के साथ व्यञ्जन या स्वर की सन्धि को व्यञ्जनसन्धि कहते हैं। इसके निम्नलिखित कई भेद हैं—

(अ) त् या द् के स्थान में च् या छ् परे हो तो च्; ज् या झ् परे हो तो ज्; ट् या ठ् परे हो तो ट्; ड् या ढ् परे हो तो ड् और ल् परे हो तो ल् हो जाता है। जैसे—

उत् +चारण=उच्चारण

सत् +छत्र =सच्छत्र

सत् +जन =सज्जन

विपद्+जाल =विपज्जाल

बृहत् +टीका=बृहट्टीका

उत् +डयन=उड्डयन

उत् +लास=उल्लास

तत् +लीन=तल्लीन

(आ) त् से परे कोई स्वर या ग्, घ्, द्, ध्, ब्, भ्, य्, र् अथवा व् हो तो त् को द् हो जाता है। जैसे—

सत्+ आनन्द=सदानन्द

उत्+ गार =उद्गार

सत् +धर्म =सद्धर्म

भगवत्+भक्ति=भगवद्भक्ति

तत् +रूप =तद्रूप

(इ) त् से परे श् हो तो दोनों को 'च्छ्'; ह् हो तो दोनों को 'द्ध' हो जाता है। जैसे—

उत्+श्वास=उच्छ्वास

सत्+शास्त्र=सच्छास्त्र

तत्+हित =तद्धित

उत्+हार =उद्धार

उत्+हत =उद्धत

(ई) क्, च्, ट्, प् को कोई स्वर, वर्गों का तीसरा या चौथा अक्षर, य् र् ल् व् परे रहते अपने वर्ग का तीसरा अक्षर हो जाता है। जैसे—

वाक् + ईश = वागीश

दिक् + गज = दिग्गज

अच् + अन्त = अजन्त

षट् + दर्शन = षड्दर्शन

अप् + ज = अब्ज

(उ) क्, च्, ट्, त्, प् के स्थान में न् या म् परे रहते अपने अपने वर्ग का पाँचवां अक्षर हो जाता है। जैसे—

वाक् + मय = वाङ्मय

दिक् + नाग = दिङ्नाग

षट् + मास = षण्मास

जगत् + नाथ = जगन्नाथ

(ऊ) स्वर से परे छ् हो तो बीच में च् लग जाता है। जैसे—

परि + छेद = परिच्छेद

स्व + छन्द = स्वच्छन्द

(ए) म् के स्थान में कोई स्पर्श वर्ण परे हो तो परले वर्ण के वर्ग का पाँचवां अक्षर या अनुस्वार हो जाता है; अन्तस्थ या ऊष्म वर्ण परे हो तो अनुस्वार ही होता है; राट् शब्द या स्वर परे हो तो म् ही रहता है। जैसे—

(क) सम् + कल्प = सङ्कल्प, संकल्प

सम् + जय = सञ्जय, संजय

सम् + ध्या = सन्ध्या, संध्या

सम् + भव = सम्भव, संभव

(ख) सम् + योग = संयोग

सम् + वाद = संवाद

सम् + लग्न = संलग्न

सम् + शय = संशय

सम् + सार = संसार

सम् + हार = संहार

(ग) सम् + राट् = सम्राट्

सम् + अस्त = समस्त

(ऐ) स्वर, कवर्ग, पवर्ग, य्, र्, व्, ह् इनकी रुकावट होने पर भी र् या ष् से परे न् को ण् हो जाता है। जैसे—

परि +नाम =परिणाम

विष् + नु =विष्णु

व्याकर+ न =व्याकरण

प्रमा + न =प्रमाण

(ओ) कहीं कहीं अ, आ को छोड़ किसी भी स्वर से परे स् को ष् हो जाता है। जैसे—

वि + सम = विषम

सु + सुप्ति = सुषुप्ति

कहीं नहीं भी होता—

अनु+ स्वार=अनुस्वार
अनु+ सार =अनुसार
वि +स्मरण =विस्मरण

(औ) नमस् शब्द को छोड़ अन्य सकारान्त शब्दों के अन्तिम स् का लोप हो जाता है कोई भी वर्ण परे न होने पर।

मनस्=मन रजस् =रज

यशस्=यश तमस् =तम

तपस्=तप छन्दस्=छन्द

तेजस्=तेज पयस्=पय

नमस्=नमः

(अं) 'क' 'कर' 'कार' 'कान्त' और 'वी' को छोड़ अन्य कुछ भी परे रहते स् को र् हो जाता है। जैसे—

निस्+गुण=निर्गुण

दुस् +गुण=दुर्गुण

'क' 'कर' 'कार' 'कान्त' और 'वी' परे होने पर—

यशस् + क	= यशस्क		तिरस् + कार	= तिरस्कार	
भास् + कर	= भास्कर		अयस् + कान्त	= अयस्कान्त	
पुरस् + कार	= पुरस्कार		यशस् + वी	= यशस्वी	
नमस् + कार	= नमस्कार		मनस् + वी	= मनस्वी	

(अ:) ह्रस्व स्वर के बाद र् से परे यदि र् हो तो पहले र् का लोप हो जाता है और वह ह्रस्व स्वर दीर्घ हो जाता है। जैसे—

निर् + रस = नीरस निर् + रोग = नीरोग

विसर्गसन्धि

विसर्ग के साथ स्वर या व्यञ्जन की सन्धि को विसर्गसन्धि कहते हैं। इसके भी निम्नलिखित कई भेद हैं—

(अ) कुछ भी परे न रहने पर या वर्गों का पहला दूसरा अक्षर परे रहने पर शब्दों के अन्तिम र् को तथा नमस् शब्द के स् को विसर्ग हो जाता है। जैसे—

प्रातर् = प्रात:
पुनर् = पुन:
नमस् = नम:
अन्तर् + करण = अन्त:करण
प्रातर् + काल = प्रात:काल

अधस् + पतन = अधर् + पतन = अध:पतन
छन्दस् + प्रभाकर = छन्दर् + प्रभाकर = छन्द:प्रभाकर
तेजस् + पुञ्ज = तेजर् + पुञ्ज = तेज:पुञ्ज

अन्य अक्षर परे रहने पर—

पुनर् + उक्ति = पुनरुक्ति

पुनर् + जन्म = पुनर्जन्म

दुर् + गुण = दुर्गुण

(आ) अ या कोई घोष व्यञ्जन परे हो तो 'अ'-पूर्वक विसर्ग को (अः को) ओ हो जाता है। जैसे—

यशः + अधिकार = यशोऽधिकार

अधः + गति	= अधोगति	मनः + विकार	= मनोविकार
पयः + निधि	= पयोनिधि	मनः + हर	= मनोहर
मनः + रथ	= मनोरथ	रजः + गुण	= रजोगुण
तपः + वन	= तपोवन	तमः + गुण	= तमोगुण

(इ) विसर्ग से पहले अ, आ को छोड़ कोई दूसरा स्वर हो तो विसर्ग को र् हो जाता है। जैसे—

निः + आश = निराश

निः + गुण = निर्गुण

दुः + दशा = दुर्दशा

(ई) यदि विसर्ग से पहले अ हो और परे अ को छोड़ कोई दूसरा स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है और संधि नहीं होती। जैसे—

अतः + एव = अतएव

(उ) विसर्ग को च् या छ परे होने पर श्; ट् या ठ् परे होने पर ष्; त या थ् परे होने पर स् हो

जाता है। जैसे—

नि: + चिन्त = निश्चिन्त
नि: + छल = निश्छल
धनु: + टंकार = धनुष्टंकार
दु: + तर = दुस्तर
नि: + तार = निस्तार

(ऊ) श् (ष्) स् परे होने पर विसर्ग को विकल्प से परे का वर्ण हो जाता है। जैसे—

दु: + शासन = दुश्शासन, दु:शासन
नि: + संदेह = निस्संदेह, नि:संदेह

(ए) क्, प्, फ् परे होने पर नि: और दु: के विसर्ग को ष् हो जाता है। जैसे—

नि: + कलङ्क = निष्कलङ्क
नि: + पाप = निष्पाप
नि: + फल = निष्फल
दु: + कर = दुष्कर
दु: + प्रकृति = दुष्प्रकृति
दु: + फल = दुष्फल

अभ्यास

सन्धि किसे कहते हैं? सन्धि और समास में क्या भेद है? सन्धि कितने प्रकार की है? स्वरसंधि के भेद लक्षण और उदाहरण सहित लिखो। आगे लिखे शब्दों में सन्धि-च्छेद करो और नियम बताओ—सद्धर्म, अतएव, निष्फल,

निःसंदेह, नमस्ते, निराशा, नीरस, प्रातः, मन, सुषुप्ति, संशय, जगन्नाथ, वागीश, अब्ज, सपेरा, बहनोई, गणेश। आगे लिखों में नियम बतलाते हुए सन्धि करो—अनु + इत, दिक्+ गज, रमा + ईश, पयस् + वी, सम् + जय, तत् + हित, सत् + जन, वाक् + मय, रामाय + न, स्व + छन्द, पयस् + द, अधस् + लिखित। सत् + गति। प्रति + उपकार। प्रायः + चित्।

अठारहवां अध्याय

पदपरिचय

वाक्यगत पदों के भेद आदि बतलाने की विधि को पदपरिचय कहते हैं।

पदपरिचय को शब्दनिरुक्ति या शब्दबोध भी कहते हैं।

संज्ञा, सर्वनाम आदि शब्दों के पदपरिचय में नीचे लिखी बातें बतलाई जाती हैं—

संज्ञा—भेद, लिङ्ग, वचन, कारक, दूसरे शब्दों के साथ सम्बन्ध।

सर्वनाम—भेद, पुरुष, लिङ्ग, वचन, कारक, वह संज्ञा जिसके स्थान में प्रयुक्त हुआ हो, दूसरे शब्दों के साथ सम्बन्ध।

विशेषण—भेद, लिङ्ग, वचन, विशेष्य।

क्रिया—भेद, काल, लिङ्ग, वचन, पुरुष, वाच्य, प्रयोग, प्रकार, कर्ता, सकर्मक क्रियाओं में कर्म।

क्रियाविशेषण—भेद, क्रिया।

सम्बन्धबोधक—भेद, वे शब्द जिनका सम्बन्ध बताया गया हो।

योजक—भेद, जोड़े गए शब्द या वाक्यांश या वाक्य।

द्योतक—भेद।

नीचे कुछ उदाहरण दिये जाते हैं—

(क) छिः! तुम बड़े कायर हो।

छिः—द्योतक, घृणाबोधक।

तुम—सर्वनाम, पुरुषवाचक, मध्यमपुरुष, पुल्लिंग, बहुवचन, कर्ताकारक, हो क्रिया का कर्ता।

बड़े—विशेषण, अनिश्चितपरिमाणवाचक, पुल्लिंग, बहुवचन, विशेष्य 'कायर'।

कायर—विशेषण, गुणवाचक, पुल्लिंग, बहुवचन, अपूर्ण-अकर्मक क्रिया 'हो' की पूर्ति करने से कर्तृपूरक।

हो—क्रिया, अपूर्णअकर्मक, सामान्यवर्तमानकाल, पुल्लिंग, बहु-वचन, मध्यमपुरुष, कर्तृवाच्य, कर्तरिप्रयोग, सामान्यप्रकार कर्ता 'तुम'।

(ख) निताईराम ने काले कुत्ते की पीठ पर ऐसा डण्डा जमाया कि वह दुम दबाकर तेजी से भाग गया, परन्तु उसके बिना भोंदू रोने लगा।

निताईराम ने—संज्ञा, व्यक्तिवाचक, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता-कारक, 'जमाया' क्रिया का कर्ता।

काले—विशेषण, गुणवाचक, पुल्लिंग, एकवचन, विशेष्य 'कुत्ता'।
कुत्ते की—संज्ञा, जातिवाचक, पुल्लिंग, एकवचन, सम्बन्ध, कारक, सम्बन्धी शब्द 'पीठ पर'।
पीठ पर—संज्ञा, जातिवाचक, स्त्रीलिंग, एकवचन, अधिकरण कारक, आधेय 'डण्डा'।
ऐसा—विशेषण, निर्देशक, पुल्लिंग, एकवचन, विशेष्य 'डण्डा'।
डण्डा—संज्ञा, जातिवाचक, पुल्लिंग, एकवचन, निर्विभक्तिक कर्म, क्रिया 'जमाया'।
जमाया—क्रिया, सकर्मक, सामान्यभूतकाल, पुल्लिंग, एकवचन, अन्यपुरुष, कर्तृवाच्य, कर्मणिप्रयोग, सामान्यप्रकार, कर्ता 'निताईराम ने', कर्म 'डण्डा'।
कि—योजक, संयोजक, पहले और दूसरे वाक्य को मिलाता है।
वह—सर्वनाम, पुरुषवाचक, अन्यपुरुष, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता कारक, 'कुत्ता' संज्ञा के स्थान में प्रयुक्त, 'भाग गया' क्रिया का कर्ता।
दुम—संज्ञा, जातिवाचक, स्त्रीलिंग, एकवचन निर्विभक्तिक कर्म-कारक, 'दबाकर' पूर्वकालिकक्रिया का कर्म।
दबाकर—पूर्वकालिकक्रिया, सकर्मक, 'भाग गया' से पहले हुई है।
तेजी से—क्रियाविशेषण, क्रिया 'भाग गया'।
भाग गया—संयुक्तक्रिया, पूर्णतावाचक, अकर्मक, सामान्यभूतकाल, पुल्लिंग, एकवचन, अन्यपुरुष, कर्तृवाच्य, कर्तरिप्रयोग, सामान्य प्रकार, कर्ता 'वह'।
परन्तु—योजक, विभाजक, अर्थ-भेद प्रकट करता हुआ दूसरे और तीसरे वाक्य को मिलाता है।

उसके—सर्वनाम, पुरुषवाचक, अन्यपुरुष, पुल्लिंग, एकवचन, 'बिना' के योग से सम्बन्धकारक, 'कुत्ता' संज्ञा के स्थान में प्रयुक्त ।

बिना—सम्बन्धबोधक, मूल, 'उस' का और 'भोंदू' का सम्बन्ध बतलाता है ।

भोंदू—संज्ञा, व्यक्तिवाचक, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ताकारक 'रोने लगा' क्रिया का कर्ता ।

रोने लगा—संयुक्तक्रिया, आरम्भबोधक, अकर्मक, सामान्यभूतकाल, पुल्लिंग, एकवचन, अन्यपुरुष, कर्तृवाच्य, कर्तरिप्रयोग, सामान्यप्रकार, कर्ता 'भोंदू' ।

(ग) अरे ! तुम्हारे सारे रुपये डाकू ने लूट लिये, पर तुमने चिट्ठी भी न लिखवाई !

अरे—द्योतक, विस्मयबोधक ।

तुम्हारे—सर्वनाम, पुरुषवाचक, मध्यमपुरुष, पुल्लिंग, बहुवचन, सम्बन्ध कारक, सम्बन्धी शब्द 'रुपये' ।

सारे—विशेषण, अनिश्चितसंख्यावाचक, पुल्लिंग, बहुवचन, विशेष्य 'रुपये' ।

रुपये—संज्ञा, जातिवाचक, पुल्लिंग, बहुवचन, निर्विभक्तिक कर्म-कारक, क्रिया 'लूट लिये' ।

डाकू ने—संज्ञा, जातिवाचक, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ताकारक, 'लूट लिये' क्रिया का कर्ता ।

लूट लिये—क्रिया, सकर्मक, सामान्यभूतकाल, पुल्लिंग, बहुवचन, अन्यपुरुष, कर्तृवाच्य, कर्मणिप्रयोग, सामान्यप्रकार, कर्ता 'डाकू ने', कर्म 'रुपये' ।

पर—योजक, विभाजक, अर्थ-भेद प्रकट करता हुआ पहले और दूसरे वाक्य को मिलाता है।

तुमने—सर्वनाम, पुरुषवाचक, मध्यमपुरुष, पुल्लिंग, बहुवचन, कर्ताकारक, 'लिखवाई' क्रिया का कर्ता।

चिट्ठी—संज्ञा, जातिवाचक, स्त्रीलिंग, एकवचन, निर्विभक्तिक कर्म-कारक, क्रिया 'लिखवाई'।

भी—योजक, संयोजक, 'चिट्ठी' और सम्भावित 'तार' आदि को मिलाता है।

न—क्रियाविशेषण, 'लिखवाई' क्रिया की विशेषता प्रकट करता है।

लिखवाई—प्रेरणार्थक क्रिया, सामान्यभूतकाल, स्त्रीलिंग, एकवचन, अन्यपुरुष, कर्तृवाच्य, कर्मणिप्रयोग, सामान्यप्रकार, प्रेरक कर्ता 'तुमने', प्रेरित कर्ता लुप्त है, कर्म 'चिट्ठी'।

अभ्यास

पदपरिचय किसे कहते हैं ? संज्ञा, सर्वनाम और क्रिया के पदपरिचय में क्या क्या बातें बतलाई जाती हैं ? निम्नलिखित वाक्यों का पदपरिचय लिखो—

वाह वाह ! दो पैसे सेर बिकती है, ले लो, दूध पीकर क्या करोगे ? सन् '५७ का गदर बड़ा भयङ्कर था। उसने कहा कि रमेश के सिर पर जो टोपी पड़ी है वह मैं तुम्हें दे दूंगा।

उन्नीसवां अध्याय

शब्द-ज्ञान

किसी भाषा की अच्छी योग्यता प्राप्त करने के लिये तद्भव-तत्सम, अनेकार्थक, भिन्नार्थक, विपरीतार्थक, पर्याय-वाचक, वाक्यांश-प्रकाशक और ध्वनिसूचक शब्दों का ज्ञान आवश्यक होता है, इसलिये यहां कुछ शब्द दिये जाते हैं—

तद्भव-तत्सम शब्द

(तद्भव)	(तत्सम)	(तद्भव)	(तत्सम)
अन्धा	अन्ध	किवाड़	कपाट
अम्मा	अम्बा	कुल्हाड़ी	कुठार
आग	अग्नि	कूआं	कूप
आठ	अष्ट	कौआ, काग	काक
आज	अद्य	गदहा	गर्दभ
आधा	अर्द्ध	घर	गृह
आम	आम्र	घी	घृत
आसरा	आश्रय	घोड़ा	घोटक
आंसू	अश्रु	चांद	चन्द्र
उनानवे	ऊननवति	चिड़िया	चटका
उनासी	ऊनाशीति	चून	चूर्ण
ऊँट	उष्ट्र	जग	जगत्
ओठ	ओष्ठ	जीभ	जिह्वा
काठ	काष्ठ	जेठ	ज्येष्ठ
कायर	कातर	तुरन्त, तुरत	त्वरित

थन	स्तन	मक्खी	मक्षिका
थल	स्थल	मा	माता
दस	दश	माथा	मस्तक
दीया	दीपक	मीत	मित्र
धूआं	धूम्र	मुंह	मुख
नया	नव	मिट्टी	मृत्तिका
नींद	निद्रा	रिस	रोष
नून, लूण	लवण	रूखा	रुक्ष
नेह	स्नेह	लाख	लक्ष, लाक्षा
नौ	नव	लोग	लोक
पक्का	पक्क	बीठ, बींठ	विष्ठा
पत्ता	पत्र	सच	सत्य
पत्थर	प्रस्तर	सरसों	सर्षप
पानी	पानीय	सलाई	शलाका
पाँच	पञ्च	ससुर	श्वशुर
पांधा, पाधा	उपाध्याय	साईं	स्वामी
पूत	पुत्र	साग	शाक
पूरा	पूर्ण	सात	सप्त
प्यास	पिपासा	साँपिन	सर्पिणी
बहिन	भगिनी	साँवला	श्यामल
बहू	वधू	सीख	शिक्षा
बात	वार्ता	सुपना, सपना	स्वप्न
ब्याह	विवाह	सुहाग	सौभाग्य
भीख	भिक्षा	सूखा	शुष्क
भौंरा	भ्रमर	सेज	शय्या

सेत,(सफेद)	सित,श्वेत	हाथ	हस्त
सौ	शत	हाथी	हस्ती
सौत,सौतिन	सपत्नी	हिय	हृदय

अनेकार्थक शब्द

अक्षर—ककार से 'क' अक्षर का बोध होता है। (वर्ण)

परमात्मा सर्वज्ञ, सच्चिदानन्द, अनादि और अक्षर है। (अविनाशी)

अङ्क—९ का अङ्क बड़ा रहस्य-पूर्ण है। (हिन्दी)

पल पल जिसको मैं अङ्क में नाथ लेके। (गोदी)

निज सकल कुअंकों की क्रिया कीलती थी। (भाग्य-लेख)

अज—प्रभु अज है, सर्वशक्तिमान् है। (जन्म न लेने वाला)

अज की बलि देना महा पाप है। (बकरा)

अम्बर—भूमि तथा अम्बर में छाया जयनिनाद है भारी। (आकाश)

कृष्ण के पीले कपड़े को पीताम्बर कहते हैं। (कपड़ा)

अर्थ—इस काम में अर्थ की प्राप्ति नहीं। (धन)

विश्व शब्द का अर्थ है संसार। (व्याख्या)

आराम—कुछ आराम कर लो, थक गए होगे। (विश्राम)

शीला को अब तक आराम नहीं हुआ। (रोग से मुक्ति)

बहुत दंगा करते हो, आराम से बैठो। (शान्ति)

ग्राम, धाम, आराम न छोड़े। (बाग)

उत्तर—ध्रुवतारा सदा उत्तर दिशा की ओर होता है। (दिशा विशेष)

इस प्रश्न का उत्तर शीघ्र दो। (जवाब)

और—तुम और हम युद्ध करेंगे। (तथा)

युद्ध करने वाले कोई और ही होते हैं। (विरला, भिन्न)

खाइये न, और खाइये। (अधिक)

कनक—कनक के आभूषण अधिक मत पहनो। (सोना)

कनक के खाने से मृत्यु तक हो सकती है। (धतूरा)

कर—आजकल कर बहुत बढ़ा दिये गए हैं। (टैक्स)

यह काम अभी कर। (करने की आज्ञा)

'कर' के कारण हाथी को करी कहते हैं। (सूंड)

अपने कर-कमलों से हार पहनाइये। (हाथ)

रवि-कर-निकर-प्रकाशित भूमि। (किरण)

कल—गर्मी के मारे कल नहीं पड़ती। (चैन)

मैं कल आया था। (बीता हुआ दिन)

आज की बात कल पर मत छोड़ो। (आने वाला दिन)

अब तो आटे की कल से ही आटा पिसवा लेते हैं। (मशीन)

कोयल की कल-ध्वनि मन मोह लेती है। (मीठी)

कहीं झरना कलकल निनाद। (ध्वनि का अनुकरण)

काम—तुम्हें यहां क्या काम है ? (कार्य)

काम के मदन, मन्मथ आदि कई नाम हैं। (कामदेव)

काम की बात करो। (मतलब, लाभ)

प्रभु की भक्ति से मनुष्य निष्काम बनता है। (लालसा 'रहित')

काल—रावण का काल आगया। (मृत्यु)

भूतकाल की बात मत करो। (समय)

ग्रहण—भिक्षा ग्रहण करके प्रभु भक्ति करो। (लेना)

आज चन्द्र-ग्रहण है। (परछाईं से चन्द्रमा का काला दिखना)

गिरा—गिरा, सरस्वती, वाक् आदि वाणी के नाम हैं। (वाणी)

वृक्ष से पत्ता गिरा। (गिर पड़ा)

गुण—चञ्चलता भी एक गुण है। (खूबी)

धनुष पर गुण चढ़ाकर तीर चलाओ। (डोरी, प्रत्यञ्चा)

गुरु—'ए' अक्षर गुरु है। (दो मात्राओं वाला)

दयानन्द के गुरु विरजानन्द थे। (शिक्षक)

गुरुजनों का आदर करना चाहिये (बड़ा)

गो—गो-पालन मनुष्य-मात्र का कर्तव्य है। (गाय)

एक बालक गोस्वामी जी के दृष्टि-गोचर हुआ। (इन्द्रिय)

घट—वह तुम से घट कर नहीं है। (कम)

घट घट वासी प्रभु को प्रणाम है। (देह, आत्मा)

कुम्हार घट बनाता है। (घड़ा)

घटा—सौ में से पचास घटा कर लिखो। (कम करना)

काली घटा छा गई। (बादल)

जड़—जड़ को पानी दो, पत्तों को सींचने से क्या। (मूल)

जड़ और चेतन सब प्रभु के गीत गाते हैं। (अचेतन)

बड़ा जड़ व्यक्ति है। (मूर्ख)

द्विज—द्विज वेद पढ़ें। (ब्राह्मण या ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य)

(पक्षी और दाँत; पर इन अर्थों में विशेषत: प्रयुक्त नहीं होता)

धातु—मंगलधातु बहु-मूल्य होता है। (द्रव्य)

पढ़ धातु के भूतकाल के रूप लिखो। (क्रिया का मूल रूप)

धातु क्षीण होने पर मनुष्य की मृत्यु तक हो जाती है। (वीर्य)

नव—नव रस में वीर रस बहुत महत्त्वपूर्ण है। (नौ)

नवयुवकों के उत्साह का क्या ठिकाना! (नए)

नाक—कान्ता की नाक तोते के समान है। (नासिका)

इतना दिखावा न करने से नाक तो न कट जायगी! (मान)

नाकलोक में देवता रहते हैं। (स्वर्ग)

पक्ष—वह किसी के पक्ष की बात नहीं करता। (तरफ)

पक्ष कट जाने से पक्षी उड़ नहीं सकते। (पँख)

मास में दो पक्ष होते हैं—कृष्ण और शुक्ल। (पन्द्रह दिन)

पञ्च—बिछुड़े पञ्च तत्त्व की रचना। (पाँच)

पञ्चों ने मिलकर निर्णय कर दिया। (चुने हुए मुखिया)

पतंग—अधिक पतंग न उड़ाया करो। (गुड्डी आदि)

पतंग दीपक पर गिरने लगे। (कीट-विशेष)

भृगुकुल-कमल-पतंग आये। (सूर्य)

पत्र—यह पत्र किसने लिखा है? (चिट्ठी)

वृक्ष से पत्र झड़ने लगे। (पत्ता)

पद—तुम परमपद पाओगे। (स्थान)

उसने गुरु के पद-कमलों में प्रणाम किया। (पाँव)

बहुव्रीहि समास में कोई भी पद प्रधान नहीं होता। (शब्द)

सूरदास के पद बड़े मधुर हैं। (गीत, कविता)

पय—माता के पय को लजाते हो! (दूध)

पयोनिधि में जहाज चलने लगे। (पानी) [समुद्र]

पृष्ठ—एक पृष्ठ और पढ़ लो। (सफा)

मेरी पृष्ठ पर बोझ नहीं है। (पीठ)

पानी—आँखों में पानी नहीं तो जीवन व्यर्थ है। (लज्जा)

हम पानी पीकर फिर चलने लगे। (जल)

इस मोती पर पानी नहीं। (कान्ति, आब)

पूर्व—पूर्व दिशा की ओर मुख करो (दिशा विशेष)

पूर्वकाल में ऋषि वनों में रहते थे। (पहले)

भाग—६५० को ५ पर भाग दो। (विभक्त करना, तकसीम)

सब अपना अपना भाग प्राप्त करें। (हिस्सा)

अरे! जल्दी भाग जा। (दौड़)

भूत—भूत वास्तव में मन का डर है। (काल्पनिक जीव)

भूत की चिन्ता छोड़कर वर्तमान की सुधि लो। (बीता हुआ समय)

मान—मान न मान मैं तेरा महान। (स्वीकार करना)

बड़ों का मान करना चाहिये। (आदर)

मित्र—विपत्ति में मित्र काम आता है। (दोस्त)

मित्र की मयूखों से कमल खिल गए। (सूर्य)

रक्त—अरे! कितना रक्त निकल गया है। (लहू)

उस रक्त पुष्प को तोड़ लाओ। (लाल)

वर्ण—वर्णव्यवस्था के क्या लाभ हैं? (जाति)

हम वर्ण वर्ण के वस्त्र पहने हुए थे। (रंग)

इ वर्ण स्वर है या व्यञ्जन? (अक्षर)

विधि—तुमने किस विधि से परीक्षा पास की? (ढंग)

विधि की गति को कौन जाने! (विधाता)

विहार—वे वन में विहार करते थे। (भ्रमण आदि)

विहार के प्रधान-मन्त्री ने पत्र लिखा। (देश-विशेष)

व्याज—देखा! मैंने किस व्याज से उसे ठीक किया। (बहाना)

व्याज बहुत बढ़ गया है। (सूद)

सारंग—जलाशय में सारंग खिले हैं। (कमल)

सारंग के तट पर मत जाना। (तालाब)

सारंग ने चौकड़ी भर ली। (मृग)

सोना—प्रातःकाल नहीं सोना चाहिये। (नींद लेना)

भारत का सोना-चांदी कम हो रहा है। (धातु विशेष)

हंस—हंस की चाल से चलो। (पक्षी-विशेष)

उनका हंस परमात्मा में लीन हो गया। (आत्मा)

भिन्नार्थक शब्द

समान-रूप-स्पष्ट-भिन्नार्थक

(शब्द)	(अर्थ)	(शब्द)	(अर्थ)	(शब्द)	(अर्थ)
अचल	पर्वत	अवलेह	चटनी	कर्म	काम
अचला	पृथ्वी	अवहेलना	अनादर	क्रम	सिलसिला
अतीत	बीता हुआ	अस्त	छिपा	कलि	कलियुग
अतीव	बहुत	अस्तु	अच्छा	कली	फूल की डोडी
अदृश्य	जो न दीखे	अशक्त	असमर्थ	कांचन	सोना
अदृष्ट	भाग्य	आसक्त	अनुरक्त	कांच	शीशा
अनल	अग्नि	अंश	भाग	कुलिश	वज्र
अनिल	वायु	अंशुक	चोला	कुशल	चतुर
अन्न	अनाज	आकर	खान	कृतार्थ	सफल
अन्य	दूसरा	आकार	सूरत	कृतान्त	मृत्यु
अपमान	निरादर	आतप	धूप	कृति	रचना
उपमान	समान	आपत्	आपत्ति	कृती	सफल
अपवर्ग	मोक्ष	उधार	ऋण	खनक	खोदने वाला
पवर्ग	प,फ,ब,भ,म	उद्धार	मुक्ति	क्षणिक	पलभर का
अपर	दूसरा	उपचय	वृद्धि	गृह	घर
अपार	पार रहित	अपचय	हानि	ग्रह	नक्षत्र
अपशब्द	बुरा शब्द	ओर	तरफ	चिर	देरी
अशब्द	चुपचाप	और	तथा	चीर	वस्त्र

अपेक्षा	बनिस्बत	कल्प	युग	छत्र	छाता
उपेक्षा	लापरवाही	कल्पित	खयाली	छात्र	विद्यार्थी
अवध	(देश)	करण	साधन	जलद	बादल
अवध्य	न मारने योग्य	करुण	शोकवाला	जलधि	समुद्र
तथा	और	पुरुष	मनुष्य	लत	आदत
तथागत	बुद्ध	परुष	कठोर	लात	टाँग
तरणि	सूर्य	प्रकार	ढंग	लोटना	लेटना
तरणी १	नौका	प्राकार	खाई	लौटना	वापिस आना
दम	दमन, रोब	प्रणाम	नमस्कार	वर्ण	रंग, अक्षर, जाति
दम्भ	ढोंग	परिणाम	नतीजा	वरण	स्वीकार करना
दश	दस	प्रभाव	असर	वसन	कपड़ा
दंश	डंक	पराभव	हार, अनादर	व्यसन	बुरी आदत
द्विप	हाथी	प्रमाण	सबूत	विजन	निर्जन
द्वीप २	टापू	परिमाण	नाप	व्यजन ३	पंखा
दोषी	अपराधी	प्रसाद	प्रसन्नता	विवर्ण	रंग उड़ना
दोषा	रात्रि	प्रासाद	महल	विवरण	ब्योरा
नग	पर्वत, नगीना	बलि	भेंट, बलिहारी	सकल	सारा
नाग	साँप, हाथी	बली	बलवान्	शकल ४	टुकड़ा
पथ	मार्ग	बिना, विना	रहित	समान	तरह
पथ्य	परहेज	वीणा	(वाद्य)	सम्मान ५	आदर

१. तरणी—युवती। २. दीप—दीपक। ३. व्यंजन—भोज्य-पदार्थ, वर्ण-विशेष। ४. शक्ल—सूरत। ५. सामान—(चीजें)।

पानी	जल	मत	सिद्धान्त,न,मजहब	समिति	सभा
पाणि	हाथ	मति	बुद्धि	सम्मति	सलाह
परिषद्	सभा	मूल	जड़,असली	सर	तालाब
पारिषद्	सभासद्	मूल्य	कीमत	शर	बाण
पिता	बाप	युगल	दोनों	सर्ग	सृष्टि
पितर	पूर्वज	युग्म	जोड़ा	स्वर्ग	देवलोक
पित्त	गर्मी	लक्ष	लाख	सुत	पुत्र
पीत	पीला	लक्ष्य	उद्देश्य	सूत	सारथि

असमान-रूप-सूक्ष्म-भिन्नार्थक

अबला, निर्बला—अबला प्रत्येक स्त्री को कहा जाता है, भले ही वह बहुत बलवती हो। निर्बला केवल बलरहित स्त्री को कहा जाता है।

अभिमान, अहंकार—सच्चे गर्व को अभिमान कहते हैं, जैसे—जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है। झूठे घमण्ड को अहंकार कहते हैं।

अलौकिक, अस्वाभाविक—जो सामान्य मनुष्य की शक्ति से बाहर हो उसे अलौकिक कहते हैं, जैसे—शिवाजी में अलौकिक वीरता थी। जो प्रकृति के विरुद्ध हो उसे अस्वाभाविक कहते हैं, जैसे—वह पागलों की भांति अस्वाभाविक बातें करता है।

ईर्ष्या, द्वेष—ईर्ष्या का अर्थ है किसी की उन्नति देखकर जलना। द्वेष शत्रुता को कहते हैं।

उद्योग,उपाय—परिश्रम या प्रयत्न को उद्योग कहते हैं,जैसे—उद्योग करो, कुछ काम मिल ही जायगा। उपाय का अर्थ है तरीका या ढंग, जैसे—युद्ध से बचने का कोई उपाय नहीं सूझता।

कृपा, दया, अनुग्रह—किसी के लिये सहायता की भावना को कृपा कहते हैं, साधारण शिष्टाचार में भी कृपा का प्रयोग होता है। दीन-दुःखी के दुःख से पिघल जाने को दया कहते हैं। प्रसन्न होकर सहायता करने के भाव को अनुग्रह कहते हैं।

कर्म, काम—कर्म का अर्थ है कार्य और मनुष्य के किये हुए काम। तत्सम काम शब्द का अर्थ है कामदेव। कर्म का तद्भव रूप काम शब्द प्राय: कार्य अर्थ में प्रयुक्त होता है। पर सकर्मक, कर्मकारक, कर्मण्य, नित्यकर्म आदि में कर्म ही लगता है; सकामक, कामकारक, न्यायाम, नित्यकाम आदि रूप नहीं बनते।

खेद, शोक, दुःख, कष्ट—सामान्य व्यवहार में अप्रसन्नता प्रकट करने के लिये खेद शब्द का प्रयोग होता है, जैसे—खेद से लिखना पड़ता है कि आपने अब तक घड़ी नहीं लौटाई, यहां 'शोक से लिखना पड़ता है' अशुद्ध है। प्रियजन की मृत्यु से उत्पन्न हुए दुःख को शोक कहते हैं। साधारण अर्थ में दुःख शब्द आता है। अधिक पीड़ा या दुःख के लिये कष्ट शब्द का प्रयोग होता है।

देखना, दर्शन करना—सामान्यतया चक्षु-संयोग को देखना कहते हैं। बड़ों को देखने में या शिष्टाचार में दर्शन करना प्रयुक्त होता है।

निर्णय, न्याय—निर्णय का अर्थ है फैसला, भले ही वह सच्चा हो या झूठा। जाँच करके सच को सच और झूठ को झूठ प्रकट करने को न्याय कहते हैं।

पाप, अपराध—ईश्वर, प्रकृति और समाज के नियमों के विरुद्ध आचरण को पाप कहते हैं। अपराध का अर्थ है राज्य-नियम के विरुद्ध आचरण।

प्रेम, स्नेह, वात्सल्य, श्रद्धा, भक्ति—प्रेम शब्द साधारण अर्थ में प्रयुक्त होता है। स्नेह छोटों पर होता है, मित्रता में भी स्नेह होता है। शिशु पर किये जाने वाले प्रेम को वात्सल्य कहते हैं। युवक-युवती या

पति-पत्नी के प्रेम को प्रणय कहते हैं। पूज्यों, बड़ों और गुणियों में श्रद्धा होती है। भक्ति ईश्वर में होती है।

भिन्न, विपरीत—भिन्न का अर्थ है पृथक्; जैसे—पढ़ना और खेलना दो भिन्न बातें हैं। विपरीत का अर्थ है विरुद्ध, प्रतिकूल; जैसे—दुःख का विपरीत सुख है, संयोग का वियोग।

भ्रम, सन्देह—भ्रम निश्चय अर्थ में आता है, जैसे—उसे साँप का भ्रम हुआ है और वह डर गया है। सन्देह अनिश्चय अर्थ में आता है, जैसे—उसे सन्देह है कि रुपये मिलेंगे या नहीं।

मत, धर्म—कुछ व्यक्तियों के सिद्धान्त को मत या मजहब कहते हैं। मनुष्य-मात्र के कर्तव्य को धर्म कहते हैं। जैसे—दाढ़ी रखना मत है, सच बोलना धर्म।

मूर्ख (मूढ़), अनभिज्ञ—नासमझ को मूर्ख या मूढ़ कहते हैं। समझदार होने पर भी जो किसी बात को न जानता हो उसे अनभिज्ञ कहते हैं, जैसे—अध्यापक महोदय हमारी लड़ाई से अनभिज्ञ थे।

वंश, बाँस—वंश के दो अर्थ हैं—कुल और बाँस। बाँस का कुल अर्थ नहीं होता।

स्त्री, पत्नी—प्रत्येक महिला को स्त्री कहते हैं। किसी की विवाहित स्त्री को पत्नी कहते हैं।

विपरीतार्थक या विरुद्धार्थक शब्द

अनुकूल	प्रतिकूल	उदार	संकीर्ण	ज्ञानी	मूर्ख
अल्प	अधिक	उन्नति	अवनति	तीक्ष्ण	कुंठित
आकाश	पाताल	उपकार	अपकार	दयालु	निर्दय
आज्ञा	अवज्ञा	उपचय	अपचय	धनी	निर्धन
आदि	अन्त	कृतज्ञ	कृतघ्न	निर्मल	मलिन

आभ्यन्तर	बाह्य	कोमल	कठोर	नूतन	पुरातन
आय	व्यय	क्रय	विक्रय	पक्ष	विपक्ष
आयात	निर्यात	गमन	आगमन	पंडित	मूर्ख
आशा	निराशा	गहरा	छिछला	पालतू	जंगली
उऋण	ऋणी	गुण	दुर्गुण	पुण्य	पाप
उत्कर्ष	अपकर्ष	चेतन	जड़	पूर्ण	रिक्त
उत्तमर्ण	अधमर्ण	जय	पराजय	प्रत्यक्ष	परोक्ष
उत्थान	पतन	जंगम	स्थावर	बलिष्ठ	निर्बल
उदय	अस्त	जीवन	मरण	मान	अपमान
मितव्यय	अपव्यय	शान्त	उद्धत, क्रुद्ध	सामान्य	विशेष
मुख्य	गौण	शीत	उष्ण	सुकर	दुष्कर
मौखिक	लिखित	सज्जन	दुर्जन	सुबोध	दुर्बोध
यश	अपयश	सभ्य	बर्बर	सृष्टि	प्रलय
राग	द्वेष	सम	विषम	स्वतन्त्र	परतन्त्र

आदि में 'अ' या 'अन्' लगाने से अनेक विपरीतार्थक बनते हैं। जैसे—

अन्त—अनन्त। अर्थ—अनर्थ। आदि—अनादि। आर्य—अनार्य। उत्साह—अनुत्साह। इष्ट—अनिष्ट। एक—अनेक। धर्म—अधर्म। न्याय—अन्याय। पवित्र—अपवित्र। पूर्ण—अपूर्ण। प्रधान—अप्रधान। प्रसन्न—अप्रसन्न। लौकिक—अलौकिक। शान्त—अशान्त। सत्य—असत्य। सभ्य—असभ्य। स्वस्थ—अस्वस्थ। स्वीकृत—अस्वीकृत।

पर्यायवाचक शब्द

आँख = चक्षु, दृग, नयन, नेत्र, लोचन।

आकाश = अन्तरिक्ष, अम्बर, गगन, नभ, व्योम।

आनन्द = आह्लाद, मोद, हर्ष।

इन्द्र = देवेन्द्र, मघवा, शक्र, शतक्रतु, सुरेन्द्र, सुरेश।

कमल = अब्ज, अम्बुज, जलज, पद्म, राजीव, वारिज, सरोज ।
कामदेव = अनंग, कन्दर्प, पञ्चबाण, पुष्पसायक, प्रद्युम्न, मदन, मनसिज, मनोज, मन्मथ, मार, मीनकेतन, रतिपति ।
घोड़ा = अश्व, तुरग, तुरंगम, वाजि, हय ।
चन्द्र = इन्दु, निशाकर, मृगलांछन, विधु, शशि, सुधाकर, सोम ।
तालाब = ताल, तड़ाग, सर, सरोवर, ह्रद ।
देवता = अमर, देव, निर्जर, विबुध, सुर ।
पहाड़ = अचल, गिरि, नग, पर्वत, भूधर, महीधर ।
पानी = उदक, जल, तोय, नीर, पय, वन, वारि ।
पुत्र = आत्मज, तनय, तनुज, सुत, सूनु ।
पृथ्वी = अचला, अवनि, क्षौणी, धरणी, धरा, भूमि, मही, वसुधा ।
फूल = कुसुम, पुष्प, प्रसून, सुमन ।
बादल = घन, जलद, जलधर, नीरद, मेघ, पयोद, वारिद ।
बिजली = चपला, चंचला, तड़ित्, दामिनी, विद्युत् ।
ब्राह्मण = द्विज, भूदेव, भूसुर, विप्र ।
भौंरा = अलि, द्विरेफ, भृंग, भ्रमर, मधुकर, मधुप, षट्पद ।
राजा = अवनिप, नरपति, नरेश, नृप, नृपति, भूपति, भूपाल, महीप ।
रात = क्षपा, निशा, यामिनी, रजनी, रात्रि, विभावरी ।
समुद्र = उदधि, जलधि, जलनिधि, रत्नाकर, वारिधि, सागर, सिन्धु ।
सूर्य = अंशुमाली, आदित्य, दिनकर, दिनमणि, दिनेश, दिवाकर, प्रचंडांशु, प्रभाकर, भानु, भास्कर, मार्तण्ड, सविता, सहस्रांशु, हरि ।
स्त्री = अबला, नारी, महिला, रमणी, ललना ।
हाथी = करी, गज, गयन्द, नाग, हस्ती ।

वाक्यांश-प्रकाशक शब्द

बड़ा भाई	अग्रज	छोटा भाई	अनुज
दूर की न सोचने वाला	अदूरदर्शी	उपमा रहित	अनुपम

दिखाई न देने वाला	अदृश्य
ऋण लेने वाला	अधमर्ण
नीचे लिखा हुआ	अधोलिखित
जिसका अन्त न हो	अनन्त
जिसका आदि न हो	अनादि
ईश्वर को मानने वाला	आस्तिक
ऋण देने वाला	उत्तमर्ण
सहायक मन्त्री	उपमन्त्री
ऊपर कहा हुआ	उपर्युक्त
बर्तन बेचने वाला	कसेरा
जिसे कर्तव्य न सूझे	किंकर्तव्यविमूढ़
उपकार न मानने वाला	कृतघ्न
उपकार मानने वाला	कृतज्ञ
चार भुजाओं वाला	चतुर्भुज
वर्षा के चार महीने	चौमासा
जानने की इच्छा	जिज्ञासा
जानने का इच्छुक	जिज्ञासु
अग्नि वाला पर्वत	ज्वालामुखी
देर तक रहने वाला	टिकाऊ
तीनों लोकों का समूह	त्रिलोकी
तीन महीने का	त्रैमासिक
स्त्री-पुरुष का जोड़ा	दम्पती
देखने वाला	दर्शक
समझने के लिये कठिन	दुर्बोध
करने के लिये कठिन	दुष्कर

थोड़ा जानने वाला	अल्पज्ञ
वेतन बिना कार्यकर्ता	अवैतनिक
जीवन भर	आजीवन
अपने को मारने वाला	आत्मघाती
मरने तक	आमरण
मांस न खाने वाला	निरामिषभोजी
विष रहित	निर्विष
न्याय-शास्त्र का ज्ञाता	नैयायिक
चारों ओर चक्कर	परिक्रमा
जो सामने न हो	परोक्ष
पन्द्रह दिन का	पाक्षिक
पढ़ने वाला	पाठक
हाथ का लिखा	पाण्डुलिपि
लेख की नकल	प्रतिलिपि
जो सामने हो	प्रत्यक्ष
फल खाने वाला	फलीहारी
जो मुक्त होना चाहे	मुमुक्षु
शक्ति के अनुसार	यथाशक्ति
चांदी का या जैसा	रुपहला
जिसके नीचे लकीर हो	रेखांकित
लेने की इच्छा	लिप्सा
वर्ष का	वार्षिक
व्याकरण का ज्ञाता	वैयाकरण
विष्णु का उपासक	वैष्णव
शिव का उपासक	शैव

प्रतिदिन का	दैनिक	परिवार सहित	सपरिवार
जो ईश्वर को न माने	नास्तिक	सह सकने वाला	सहिष्णु
लज्जारहित	निर्लज्ज	सात दिन का	साप्ताहिक
नीचे लिखा हुआ	निम्नलिखित	साफ कहने वाला	स्पष्टवक्ता

ध्वनि-सूचक शब्द

कली चटाख से फूट गई। कोयल कूकू करने लगी। कौए ने काँ काँ बन्द कर दी। गाड़ी घड़घड़ाती हुई आई। गीदड़ हुआँ हुआँ करते थे। एक गोली सनसनाती हुई आई। घड़ी टक टक कर रही थी। घोड़े हिनहिनाने लगे। चारपाई चर्राती या चूँ चूँ करती थी। चिड़ियां चहचहा रही थीं या चीं चीं कर रही थीं। झरने झरझर करते थे। दाँत कटकटा रहे थे। नाक घुर्घुरा रही थी। पताका फर्फराती थी। सूखे पत्ते मर्मराते थे। पक्षी पंख फटफटाते थे। बकरी में में करती थी। बादल गर्जने लगे। बिजली कड़कने लगी। बिल्ली म्याऊँ म्याऊँ करने लगी। भौंरे गुंजारने लगे। मक्खियां भिनभिनाती थीं। मेंढक टर्राते थे। मोटर भों भों करती हुई आई। वायु सर्सर करके चलने लगी। शेर गर्जने या दहाड़ने लगे। हाथी चिंघाड़ने लगे।

अभ्यास

आँसू और जीभ के तत्सम लिखो। अम्बर, कर, पक्ष, भाग इनके कितने अर्थ हैं ? वाक्य बनाओ। अपेक्षा, उपेक्षा; उधार, उद्धार—इनमें क्या भेद है ? वाक्य बनाओ। अलौकिक-अस्वाभाविक, निर्णय-न्याय में क्या भेद है ? कृतज्ञ, ऋणी, क्रय के विरोधी शब्द लिखो। इन्द्र और पृथ्वी वाचक शब्द लिखो। जो ईश्वर को मानता हो, जानने की इच्छा—इनको प्रकट करने वाले शब्द लिखो। गीदड़, दाँत, पक्षी—इनके ध्वनि-सूचक लिखो।

———

वाक्यविचार

पहला अध्याय

वाक्यरचना

पदों का परस्पर ठीक सम्बन्ध रखने से ही शुद्ध वाक्य-रचना होती है। पदों का सम्बन्ध परस्पर ठीक रखने के लिये अन्वय, क्रम और वाक्य-प्रयोग को ध्यान में रखना आवश्यक है।

अन्वय

वाक्यगत पदों का परस्पर लिङ्ग, वचन, पुरुष आदि के अनुसार जो सम्बन्ध होता है उसे अन्वय या मेल कहते हैं। जैसे—राधा लिखती है—इस वाक्य में 'लिखना' क्रिया के लिङ्ग, वचन, पुरुष 'राधा' कर्ता के अनुसार हैं, क्रिया और कर्ता का अन्वय है।

अन्वय या मेल क्रिया का कर्ता से, सर्वनाम का संज्ञा से, सम्बन्ध का सम्बन्धी से और विशेषण का विशेष्य से होता है।

क्रिया का कर्ता से अन्वय

(१) कर्ता विभक्तिरहित हो तो क्रिया कर्ता के अनुसार होती है। जैसे—मैं लिखता हूं, तू लिखता है, रुद्र लिखता है, सरला लिखती है, विमला लिखेगी।

(२) एक से अधिक एकवचन के कर्ता होने पर क्रिया बहुवचन में आती है। जैसे—कान्ता और किशोरी पढ़ रही हैं।

अप०—अनेक शब्दों से यदि एक ही अर्थ प्रतीत होता हो तो क्रिया एकवचन में ही आती है। जैसे—इसमें भला और बुरा यही है। मेरे

पास धन और सम्पत्ति पर्याप्त है। गाय का रूप और रंग अच्छा है।

(३) विभक्तिरहित अनेक कर्ताओं के बाद यदि समुदायवाचक शब्द आए तो क्रिया उसी के अनुसार आती है। जैसे—इस नगर के बाल, युवा, वृद्ध, स्त्री, पुरुष सब के सब बलवान् हैं। कुबड़े, लंगड़े, अंधे, बहरे, कोढ़ी समुदाय का समुदाय आगे बढ़ रहा था। साधु, संन्यासी, यती, तपस्वी, ब्रह्मचारी, वानप्रस्थी भीड़ की भीड़ यज्ञ-मण्डप की ओर जा रही थी।

(४) आदर के लिये बहुवचन की क्रिया आती है। जैसे—कालिदास लिखते हैं कि।

(५) एक वाक्य में अनेक कर्ता बहुवचन में हों अथवा मिश्रित हों तो क्रिया के लिङ्ग, वचन, पुरुष अन्तिम कर्ता के अनुसार होते हैं। एक बालक, पांच पुरुष और सात बालिकाएं रामायण पढ़ रही हैं। एकवचन में हों तो क्रिया पुलिङ्ग और बहुवचन में आती है। जैसे—जुलाहा, बनिया, तेलिन, संपेरा, घसियारा और धोबिन गांव को जा रहे हैं।

(६) तीनों पुरुषों के मेल में, उत्तमपुरुष और मध्यमपुरुष के मेल में तथा उत्तमपुरुष और अन्यपुरुष के मेल में क्रिया उत्तमपुरुष में आती है। जैसे—हम, तुम और वह जाते हैं। हम और तुम चलेंगे। हम और वह बैठेंगे। मध्यमपुरुष और अन्यपुरुष के मेल में मध्यमपुरुष में आती है। जैसे—वह और तुम जाओगे।

(७) अनेक क्रियाओं का यदि एक ही कर्ता हो तो वह एक ही बार आता है और यदि उन क्रियाओं में लगे हुए सहायक क्रिया के रूप समान हों तो वे अन्तिम क्रिया के साथ ही लगाए जाते हैं। जैसे—सुरेश पत्र लिखता, पान चबाता, नौकर को डांटता और पैर पटकता था। मोहन गाता-बजाता और नाचता-कूदता भी है। असमान सहायक क्रिया

के रूप अपनी अपनी क्रिया के साथ लगते हैं। जैसे—रुद्र किसी से भी न डरता था, पर अब कालू कुम्हार के सामने कांप रहा है और सम्भवतः भविष्य में और भी कायर हो जाय।

(८) कर्ता विभक्तिरहित होने पर ही क्रिया कर्ता के अनुसार आती है। जैसे—लता जाती है, प्रेमचन्द्र लिखता है। अन्यत्र नहीं। जैसे—रमेश ने पत्र लिखा। (देखिये वाच्य और प्रयोग)

क्रिया और कर्म का अन्वय

क्रिया कर्मणिप्रयोग में कर्म के अनुसार और भावेप्रयोग में पुल्लिङ्ग, एकवचन, अन्यपुरुष में आती है। जैसे—मैंने पत्र लिखा, मैंने रोटी खाई, मुझसे दूध पिया गया, मुझसे दवाई पी गई। मैंने पत्र को पढ़ा, मुझसे लिखा नहीं जाता। (देखिये क्रियाप्रकरण में वाच्य और प्रयोग)।

संज्ञा और सर्वनाम का अन्वय

सर्वनाम के लिङ्ग, वचन उसी संज्ञा के समान होते हैं जिसके बदले वह आता है। जैसे—जिस धोबिन को आपने बुलाया था, वह आ गई है। देवेन्द्र अनुत्तीर्ण हो जायगा, क्योंकि वह पढ़ता लिखता कुछ नहीं।

सम्बन्ध और सम्बन्धी का अन्वय

(१) सम्बन्धी के जो लिङ्ग वचन होते हैं सम्बन्धकारक के रूप भी उसी लिंग, वचन में आते हैं, परन्तु यदि सम्बन्धी सविभक्तिक हो तो एकवचन में भी सम्बन्धकारक के रूपों के अन्तिम 'आ' को 'ए' हो जाता है। जैसे—मेरी घड़ी। आपका घोड़ा। उसके रुपये। मेरे कोट में से घड़ी ले आना। उसके कुत्ते ने काट खाया।

(२) अनेक सम्बन्धी होने पर सम्बन्धकारक के रूप पहले सम्बन्धी के अनुसार होते हैं। जैसे—उसकी पगड़ी और कोट उठा

लाओ। मेरा पात्र और छड़ी लेते आना। हमारे नौकरों को और दासी को कुछ भी पता नहीं।

विशेष्य और विशेषण का अन्वय

(१) विशेषण के लिंग, वचन विशेष्य के अनुसार होते हैं। जैसे—गीली चादर। पीले धागे। (देखिये विशेषण-प्रकरण)

(२) एक विशेषण के अनेक विशेष्य हों तो विशेषण के रूप उसके समीप वाले विशेष्य के अनुसार होते हैं। जैसे—पीले कपड़े और चादरें। पुरानी चिट्ठियां और लेख।

क्रम

वाक्य द्वारा विवक्षित अर्थ को ठीक ठीक प्रकट करने के लिये शब्दों को जो यथास्थान रक्खा जाता है उसे क्रम कहते हैं। जैसे—वह चावल पका रहा है। इस वाक्य में कर्ता आदि यथास्थान रक्खे हुए हैं, इसीलिये इस वाक्य का विवक्षित सामान्य अर्थ ठीक ठीक प्रकट हो रहा है।

(१) सामान्य वाक्य में पहले कर्ता, फिर कर्म या पूरक और अन्त में क्रिया रखी जाती है। जैसे—छात्रा पत्र पढ़ती है। वह बालक बनता है। द्विकर्मक क्रियाओं में गौणकर्म पहले और प्रधान कर्म पीछे आता है। जैसे—उसने मुझे चावल दिये।

(२) सम्बोधन वाक्य के आरम्भ में आता है, परन्तु कभी कभी अन्त में भी आता है। जैसे—पिता जी, मुझे धनुष ले दो। पढ़ो बच्चो।

(३) सम्बन्ध सम्बन्धी से पहले, विशेषण विशेष्य से पहले, क्रिया-विशेषण क्रिया से पहले और पूरक भी क्रिया से पहले आता है। जैसे—साधु की माला। कड़वी औषधि। धीरे लिखो। तुम न माने! वह नहीं

चलता, अभी मत बोलो। वह विद्वान् है, उसने मुझे चतुर बनाया।

(४) नहीं और मत क्रियाविशेषण क्रिया के पीछे भी आते हैं। जैसे—वह चलता नहीं। अभी बोलो मत।

(५) प्रश्नवाचक सर्वनाम जिसके विषय में प्रश्न किया गया हो उससे पहले आते हैं, अन्यथा वाक्य के अर्थ में भिन्नता हो जाती है। जैसे—तुम क्या लिख रहे थे? क्या तुम लिख रहे थे? कभी कभी वाक्य के अन्त में भी आते हैं। जैसे—आप लिख रहे थे क्या? वह था कौन?

(६) सम्बन्धबोधक अव्यय सम्बन्धी शब्द के अन्त में आते हैं। जैसे—पाठशाला के सामने। कार्य के अनुसार। सामने पाठशाला के आदि रूप अशुद्ध हैं।

(७) केवल, विशेषत:, प्रधानत: आदि शब्द जिनका अवधारण प्रकट करते हैं उनसे पहले आते हैं, अन्यथा वाक्यार्थ में भिन्नता हो जाती है। जैसे—केवल मोहन दौड़ रहा था। मोहन केवल दौड़ रहा था। पहले वाक्य का अर्थ है मोहन के अतिरिक्त और कोई नहीं दौड़ रहा था। दूसरे वाक्य का अर्थ है मोहन दौड़ने के अतिरिक्त और कुछ नहीं कर रहा था।

(८) ही, भी, तो, मात्र, तक आदि शब्द जिनका अवधारण प्रकट करते हैं उन्हीं के अन्त में आते हैं, अन्यथा वाक्यार्थ में उलट-फेर हो जाता है। जैसे—मैं भी पत्र लिखूंगा (तुमने भी लिखा है)। मैं पत्र लिखूंगा भी (फाड़ूंगा भी)।

(९) जब-तब, जहां-वहां आदि सम्बन्धवाचक क्रियाविशेषण वाक्य के आरम्भ में आते हैं। जब तुम आओगे तब मैं यहां से चलूंगा। जहां बुरे व्यक्ति हों वहां कभी भूल कर भी न जाना।

(१०) पूर्वकालिकक्रिया मुख्य क्रिया से पहले आती है। जैसे—तू लेटकर पढ़ता है। वागीश डरकर भाग गया।

(११) योजक अव्यय जिन शब्दों, वाक्यांशों या वाक्यों को जोड़ते हैं उनके बीच में आते हैं। जैसे तुम और हम चलेंगे। घर के भीतर और घर के बाहर उनका एक सा वर्ताव है। वे पढ़ते जाते थे और हम लिखते जाते थे।

(१२) द्योतक अव्यय वाक्य के आरम्भ में आते हैं, परन्तु कभी कभी अन्त में भी आ जाते हैं। जैसे—छिः! तुम तो रोने लगे। बहुत पीड़ा है, आह!

वाक्य-प्रयोग

शब्दों को वाक्य में रोजमर्रा, मुहावरे और लोकोक्तियों के अनुसार प्रयुक्त करने को वाक्य-प्रयोग करते हैं।

रोजमर्रा

अपनी रोज की बोलचाल के अनुसार पदों का प्रयोग रोजमर्रा कहलाता है। जैसे—सात-आठ रुपये दे दीजिये। बारह-तेरह दिनों में छुट्टियां होंगीं। रोज की बोलचाल में सात-आठ, बारह-तेरह, आठ-दस, पांच-सात आदि प्रयुक्त होते हैं। छः-आठ, ग्यारह-तेरह, सात-दस, चार-सात आदि रोजमर्रा के विरुद्ध होने के कारण प्रयुक्त नहीं होते।

मुहावरे

जो वाक्यांश अपने सामान्य अर्थ को न बताकर किसी विशेष अर्थ को बतलाता है और प्रायः क्रिया का काम देता है उसे वाग्धारा या मुहावरा कहते हैं। जैसे—डण्डा हाथ में देखकर उसने सब कुछ उगल दिया। जरा सा रुपया पाकर

वह आसमान पर चढ़ गया है। इन वाक्यों में उगल देना और आसमान पर चढ़ना ये दो मुहावरे हैं। इनके सामान्य अर्थ उलटी कर देना और आकाश के ऊपर पहुंचना है; परन्तु यहां इनके विशेष अर्थ 'भेद कह देना' और 'घमण्ड करना' लिये जाते हैं। मुहावरे जिस प्रकार प्रसिद्ध हैं उसी प्रकार प्रयुक्त होते हैं, अन्यथा नहीं। उगल देना के स्थान पर उलटी कर देना आदि प्रयुक्त नहीं किये जा सकते।

मुहावरे प्रायः स्वतन्त्र रूप से प्रयुक्त नहीं होते।

लोकोक्तियां

मनुष्य समाज के प्रसिद्ध अनुभव के सार को लोकोक्ति या कहावत कहते हैं। यह थोड़े से शब्दों का एक स्वतन्त्र वाक्य होता है। इसका अर्थ गम्भीर, रोचक और प्रभावोत्पादक होता है।

नीचे प्रसिद्ध प्रसिद्ध मुहावरे और लोकोक्तियां अर्थ सहित दी जाती हैं—

मुहावरे

अंग अंग ढीला होना—थक जाना।

अंग अंग मुस्कराना—बहुत प्रसन्न होना।

अंग छूना—सौगन्ध खाना।

अंगार उगलना—क्रुद्ध होकर कठोर वचन बोलना।

अंगूठा दिखाना—वस्तु देने या काम करने से इन्कार करना।

अंट संट बकना—ऊटपटांग जो जी में आए कह देना।

अन्त करना—मार डालना, समाप्त करना।

अन्त पाना—रहस्य समझना।

अन्त बनाना—परलोक सुधारना।

अन्त बिगाड़ना—परलोक बिगाड़ना।

अंधेरे घर का उजाला—एक मात्र पुत्र।

अंधे की लकड़ी—एक मात्र आश्रय।

अक्ल का दुशमन—मूर्ख।

अक्ल के घोड़े दौड़ाना—कई प्रकार की कल्पना करना।

अक्ल चरने जाना—बुद्धि भ्रष्ट होना।

अक्ल पर पत्थर पड़ना—बुद्धि भ्रष्ट होना।

अगर मगर करना—टालमटोल करना।

अच्छे दिन आना—बुरा भाग्य बदला जाना।

अठखेलियां करना—खेलना-कूदना।

अड़चन डालना—रुकावट डालना।

अड्डा जमाना—प्रतिदिन रहने लगना।

अड़ियल टट्टू—हठी।

अपना आप सम्भालना—बुरे कामों से बचना।

अपना उल्लू सीधा करना—अपना मतलब निकालना।

अपना घर समझना—संकोच न करना।

अपना सा मुंह लेकर रह जाना—शर्मिन्दा होकर चुप रह जाना।

अपना राग अलापना—अपनी ही बात या बड़ाई कहना।

अपनी खिचड़ी अलग पकाना—सब से पृथक् रहना।

अपने पांव पर कुल्हाड़ी मारना—अपनी हानि करना।

अपने मुँह मियां मिट्ठू बनना—अपनी प्रशंसा स्वयं करना।

अबे तबे करना—अनादर से बुलाना।

आँख उठाना—हानि पहुँचाने का यत्न करना, सामने देखना।

आँख उठाकर न देखना—परवाह न करना।

आँख खुलना— जागना। आँखें खुलना—होश आना।

आँख चुराना—सामने आने पर बचा जाना।

आँख मारना—इशारा करना।

आँख लगाना—प्रेम करना।

आँखें खुली रह जाना—मृत्यु होना।

आँखें चार होना—देखादेखी होना।

आँखें दिखाना—क्रोध से देखना।

आँखें नीची होना—लज्जित होना।

आँखें फेरना—बदल जाना।

आँखें बिछाना—प्रेम से स्वागत करना।

आँखों का तारा—बहुत प्यारा।

आँखों में धूल झोंकना—धोखा देना।

आँखों में रात काटना—सारी रात जागते रहना।

आँखों में समाना—सदा ध्यान में रहना।

आँखों से गिरना—आदर कम होना।

आँच न आने देना—हानि न होने देना।

आँसू पोछना—ढारस बँधाना।

आकाश पर चढ़ना—बहुत घमण्ड करना।

आकाश पर थूकना—अच्छे व्यक्ति को अपमानित करने का प्रयत्न करना; पर उसका कुछ बिगाड़ न सकना, स्वयं ही हानि उठाना।

आकाश पाताल का अन्तर—बहुत भेद।

आकाश पाताल एक करना—बहुत परिश्रम करना।

आकाश से बातें करना—बहुत ऊँचा होना।

आग में घी डालना—किसी के गुस्से को बढ़ाना।
आगा पीछा सोचना—परिणाम सोचना।
आगे पीछे फिरना—खुशामद करना।
आटा गीला होना—कठिनता में फँसना।
आटे दाल का भाव मालूम होना—कठिनाई का अनुभव होना।
आड़े हाथों लेना—खरी खरी सुनाना।
आपा धापी पड़ना—अपनी अपनी फिक्र में लगना।
आपे से बाहर होना काबू में न रहना।
आसमान पर चढ़ना—अभिमान करना।
आसमान पर चढ़ाना—किसी को उचित से अधिक प्रशंसा करना।
आसमान सिर पर उठाना—बहुत शोर करना।
इधर उधर का हाँकना—गप्पें लगाना।
इने गिने—थोड़े से।
ईंट से ईंट बजाना—नष्ट कर देना।
ईद का चाँद—बहुत देर बाद दर्शन देने वाला।
उंगली उठना—निन्दा या प्रशंसा होना।
उंगली उठाना—हानि पहुंचाने का यत्न करना।
उंगली पर नचाना—वश में रखना।
उगल देना—भेद कह देना।
उठना बैठना—मिलना जुलना।
उड़ती चिड़िया पहचानना—हृदय की बात समझ लेना।
उधार खाए बैठना—शत्रुता के लिए सदा तत्पर रहना।
उधेड़ बुन—सोच विचार।
उलटी गंगा बहाना—उलटी बात करना।
उलटे छुरे से मूंडना—दूसरे को बुद्धू बनाकर स्वार्थ साधना।

एड़ी चोटी का पसीना एक करना--कठोर परिश्रम करना।
कट जाना--लज्जित होना।
कमर कसना- तैयार होना।
कमर टूटना—बल घटना, निराश होना।
कमर बांधना--तैयार होना।
करवटें बदलना—शय्या पर चैन न पड़ना।
कल न पड़ना--चैन न पड़ना।
कलेजा मुँह को आना--अत्यन्त दुःख होना।
कलेजे पर साँप लोटना—ईर्ष्या से जलना।
कसौटी पर कसना—खूब जाँचना।
कहीं का न छोड़ना—अपमानित करना, भ्रष्ट करना।
कांटा दूर होना—रुकावट दूर होना, शत्रु नष्ट होना।
कांटे बिछाना—दूसरे को हानि पहुँचाने का प्रयत्न करना।
कांटे बोना—पाप करना, अनिष्ट करना।
कान कतरना—बड़ा चालाक होना।
कान खाना—कोलाहल करना, एक बात की रट लगाना।
कान खुलना—होश आना।
कान न देना—ध्यान न देना।
कान पकड़ना—फिर बुरा काम न करने का निश्चय करना।
कान भरना—चुगली करना।
कान पर जूँ तक न रेंगना—कुछ ध्यान न देना।
काफूर होना, कपूर होना—दूर होना, लुप्त होना।
काम आना—लड़ाई में मारा जाना, उपयुक्त होना।
कायापलटना—परिवर्तन होना।

किनारा करना—पृथक् होना ।

कुआं खोदना—हानि पहुंचाने की चेष्टा करना ।

कुछ उठा न रखना—कसर न छोड़ना ।

कोरा उत्तर—साफ इनकार ।

कोरा रखना—अशिक्षित रखना ।

कोल्हू का बैल—बहुत काम करने वाला ।

कोसों दूर रहना—बच रहना ।

कौड़ी को न पूछना—कुछ भी इज्जत न करना ।

खटाई में पड़ना—संशय में पड़ना ।

खरी खरी सुनाना—सच्ची सच्ची कहना, चाहे दूसरे को बुरी लगे ।

खरी खोटी सुनाना—बुरे वचन कहना ।

खाने को पड़ना, खाने को दौड़ना—क्रुद्ध होकर बोलना ।

खाला जी का घर—सहज काम ।

खिचड़ी पकना—गुप्त मन्त्रणाएं होना ।

खून का प्यासा—मारने के लिये सदा तत्पर ।

खून खौलना—जोश आना ।

खून पसीना एक करना—कठिन उद्योग करना ।

खून सूखना—बहुत डर जाना ।

खेत रहना—लड़ाई में मरना ।

गड़ जाना—लज्जित होना ।

गड़े मुर्दे उखाड़ना—बीती हुई बातों को छेड़ना ।

गत बनाना—पीटना, बहुत हँसी उड़ाकर लज्जित करना ।

गरम होना—क्रुद्ध होकर कठोर वचन बोलना ।

गला घोंटना—जबरदस्ती करना, गला दबा कर मार डालना ।

गला फँसाना—बन्धन में पड़ना ।

गले का हार होना—बहुत प्यारा बनना।

गले पड़ना—गला पकना, हठ करना।

गले मढ़ना—जबरदस्ती देना।

गहरी छनना—इकट्ठे हंसना-खेलना और खाना-पीना।

गाँठ में बांधना—अच्छी तरह स्मरण रखना।

गाल बजाना—आत्मप्रशंसा करना।

गिन गिन कर पैर रखना—धीरे धीरे चलना, देखभाल कर व्यवहार करना।

गिरगिट की तरह रंग बदलना—एक बात पर पक्का न रहना।

गुड़ गोबर कर देना—बनी बनाई बात बिगाड़ देना।

गूंगे का गुड़—ऐसा सुख जिसका वर्णन न हो सके।

घड़ों पानी पड़ जाना—बहुत लज्जित होना।

घर में गंगा बहना—बिना प्रयत्न के इष्ट वस्तु का मिलना।

घर सिर पर उठाना—अत्यन्त कोलाहल करना।

घाट घाट का पानी पीना—देश विदेश में घूम घूम कर अनुभव प्राप्त करना।

घात में रहना—किसी का बुरा करने के लिये मौका ढूंढते रहना।

घाव पर नमक छिड़कना—दुःखी को और सताना।

घाव हरा करना—दुःख याद कराना।

घास काटना—निकम्मा फिरना, बेगार टालना।

घास खोदना—व्यर्थ समय गंवाना।

घी के दिए जलाना—सम्पत्ति वाले होना।

घुमा फिरा कर बातें करना—फेर से बातें करना।

घोड़े बेचकर सोना—निश्चिन्त होकर सोना।

चम्पत होना—चुपचाप खिसक जाना।

चट कर जाना—समाप्त कर जाना।

चल निकलना—काम में सफल होने लगना।

चल बसना—मरना।

चलता करना—टालना।

चलती गाड़ी में रोड़ा अटकाना—हो रहे काम में बाधा डालना।

चादर से बाहर पैर फैलाना—आय से अधिक खर्च करना।

चार पैसे होना—कुछ धन होना।

चाल चलना—धोखा देने का यत्न करना।

चाल सुधारना—आचरण ठीक करना।

चिकना घड़ा—जिस पर कुछ असर न हो।

चिकनी चुपड़ी बातें करना—धोखा देने के लिये मीठी मीठी बातें करना।

चुंगल में फँसना—किसी की बातों में आना।

चूं तक न करना—विरोध में कुछ भी न करना।

चूड़ियां पहनना—कायर बनना।

चेहरे पर हवाइयां उड़ना—डर जाना।

चोटी से एड़ी तक पसीना बहाना—बहुत प्रयत्न करना।

चोली दामन का साथ होना—सदा साथ होना।

छक्के छूटना—घबरा जाना।

छटी का दूध याद आना—घोर संकट का अनुभव होना।

छाती ठोकना—उत्साहित होना

छाती पर मूंग दलना—दुःख देना।

छाती पर साँप लोटना—किसी को सुखी देख कर जलना।

जलती आग में घी डालना—लड़ाई बढ़ाना, क्रोधित का क्रोध बढ़ाना।

जल भुनकर कोयला होना—बहुत क्रुद्ध होना ।

जले पर नमक छिड़कना—दुःखी को और दुखाना ।

जान के लाले पड़ना—बहुत विपत्ति में पड़ना ।

जान देना—मारना, बहुत अधिक चाहना ।

जान पर खेलना—खुशी खुशी प्राण देना, मृत्यु की परवाह न करते हुए संकट में पड़ना ।

जान हथेली पर रखना—मरने की परवाह न करना ।

जी उचाट होना—मन न लगना ।

जीती मक्खी निगलना—सह लेना, बेईमानी करना ।

जूतियां चटकाते फिरना—व्यर्थ घूमना ।

जूतियां चाटना—खुशामद करना ।

टका सा जवाब देना—स्पष्ट इन्कार करना ।

टका सा मुँह लेकर रह जाना—लज्जित हो जाना ।

टक्कर का होना—मुकाबले का होना ।

टट्टी की ओट में शिकार खेलना—किसी बहाने से काम करना ।

टपक पड़ना—अचानक आ जाना ।

टस से मस न होना—जरा न हिलना ।

टांग अड़ाना—रुकावट डालना, दखल देना ।

टांग तोड़ना—जो काम पूरी तरह न आता हो उसे अपनी खूब जानकारी दिखाते हुए करना ।

टांग पसार कर सोना—निश्चिन्त होना ।

टेढ़े अंगुली से घी निकालना—चालाकी से काम निकालना ।

टेढ़ी खीर—कठिन काम ।

टोह लगाना—पता करना ।

टोपी उछालना—अपमान करना ।

ठिकाने लगाना—मारना, नष्ट कर देना।

ठंडा होना—मर जाना।

ठोक बजाकर—भली भांति परखकर।

ठोकरें खाना—कष्ट झेलना।

डंका बजाना—प्रभाव होना, अधिकार होना।

डकार न लेना—चुपचाप हजम कर जाना।

डींग मारना—अपनी झूठी बड़ाई करना।

डूबती नैय्या पार लगाना—विपत्ति से छुड़ाना।

डूबते को तिनके का सहारा होना—आपति में थोड़ी सहायता होना।

ढेर करना—मार डालना।

तलवे चाटना—चापलूसी करना।

तवे की बूंद होना—शीघ्र नष्ट होना।

तान कर सोना—निश्चिन्त होकर सोना।

तार टूटना—चलता हुआ काम रुकना।

तारे तोड़ लाना—कठिन कार्य कर दिखाना।

तिनका सिर पर रखना—विनय करना।

तिल का ताड़ बनाना—ज़रा सी बात को बहुत बढ़ा देना।

तिल धरने की जगह न होना—बहुत भीड़ होना।

तिलों में तेल न होना—काम की आशा न होना।

तीन-पांच करना—हुज्जत करना।

तूती बोलना—प्रभाव होना।

तू तू मैं मैं करना—जबानी लड़ाई करना।

तेवर बदलना—क्रुद्ध होना।

तोते की तरह रटना—अर्थ समझे बिना कण्ठस्थ करना।

थाह लेना—भेद पता करना।

थूक कर चाटना—अपने वचन से फिरना।

दंग रह जाना—चकित रह जाना।

दबे पांव निकल जाना—चुपचाप चले जाना।

दम घुटना—साँस न आना, घबराना।

दम भरना—अभिमानपूर्वक जिम्मेवारी लेना।

दम मारना—परिश्रम करना, धैर्य रखना, आराम से साँस लेना।

दम के दम में—बहुत जल्दी।

दाँत खट्टे करना—हराना, नीचा दिखाना।

दाँत गड़ाना—प्राप्त करने की ताक में रहना।

दाँतों तले अंगुली दबाना—चकित होना।

दाँत निकालना—व्यर्थ हँसना, गिड़गिड़ाना।

दाँत पीस कर रह जाना—क्रोध करके चुप रह जाना।

दाँत से दाँत बजना—बड़ी सर्दी पड़ना।

दाई से पेट छिपाना—जानकार से बात छिपाना।

दाने दाने को तरसना—गरीब होना।

दाल न गलना—कुछ वश न चलना।

दाल में कुछ काला होना—कोई गुप्त बात होना।

दाहिना हाथ—सहायक।

दिन फिरना—भाग्य अच्छा होना।

दीया लेकर ढूँढ़ना—अच्छी तरह खोज करना।

दुनिया की हवा लगना—संसार के भले बुरे कामों में चालाक होना।

दुम दबाकर भागना—डरकर भागना।

दूध का दूध और पानी का पानी—सच-झूठ का ठीक न्याय।

दूध के दाँत न टूटना—अबोध बालक होना।

दो कौड़ी का—तुच्छ।

दो टूक बात—थोड़े शब्दों में साफ बात।

दो नावों पर पैर रखना—दो का आश्रय लेना।

दौड़ धूप करना—खूब परिश्रम करना।

धज्जियां उड़ाना—दोष निकालकर निकृष्ट सिद्ध करना।

धता बताना—धोखा देना।

धाँधली करना—अपनी कुछ हानि होते देख गड़बड़ी मचाना!

धूप में बाल सफेद न करना—अनुभव होना।

धोखे की टट्टी—कपट-वस्तु।

नमक मिर्च लगाना—छोटी बात को बढ़ाकर कहना।

नया गुल खिलना—नई घटना घटना।

नाक कटना—मान नष्ट होना।

नाक भौं चढ़ाना—अप्रसन्नता प्रकट करना।

नाक पर मक्खी न बैठने देना—अपने पर ज़रा सी भी बात न आने देना।

नाक में दम करना—बहुत तंग करना।

नाक रखना—मान बचा लेना।

नाक रगड़ना—दीन बनना।

नाकों चने चबवाना—खूब तंग करना।

नाच नचाना—इच्छानुसार काम लेना।

नानी याद आना—घबराना।

नाम कमाना—प्रसिद्ध होना।

नाम करना—बहुत जरा सा काम करना।

नाम पैदा करना—कीर्ति प्राप्त करना।

नाव पार लगा देना—कार्य पूरा कर देना।

निन्यानवे के फेर में पड़ना—रुपये जोड़ने की चिन्ता में पड़ना।

नीचा दिखाना—हराना।

नौ दो ग्यारह होना—भाग जाना।

पगड़ी उतारना, पगड़ी उछालना—अपमानित करना।

पगड़ी संभालना—आत्माभिमान की रक्षा करना।

पट्टी पढ़ाना—बुरी सम्मति देकर सहमत कर लेना।

पते की कहना—भेद की बात कहना।

पत्थर की लकीर होना—अमिट होना।

परछाईं से डरना—बहुत अधिक डरना।

परदा डालना—छिपाना।

पसीना पसीना होना—घबरा जाना, थक जाना।

पहाड़ टूट पड़ना—अधिक बोझ पड़ना।

पहाड़ से टक्कर लेना—शक्तिशाली से वैर ठानना।

पाँचों घी में होना—बहुत लाभ होना।

पाँव धो धो कर पीना—बहुत सत्कार करना।

पाँव भारी होना—गर्भ रहना।

पाँव में बेड़ी पड़ना—स्वतन्त्रता जाती रहना।

पानी का बुलबुला—शीघ्र नष्ट होने वाला।

पानी की तरह बहाना—लापरवाही से खर्च करना।

पानी पानी होना—अत्यन्त लज्जित होना।

पानी पी घर पूछना—स्वार्थ पूरा कर के दूसरे की बात या परिचय पूछना।

पानी पी पी कर कोसना—हर समय कोसना।

पानी भरना—नौकर की तरह होना।

पाप कटना--बंधन दूर होना ।

पार पाना--भेद जानना ।

पाला पड़ना – मुकाबला होना ।

पिण्ड छुड़ाना—पीछा छुड़ाना ।

पीठ ठोंकना—साहस बढ़ाना ।

पीठ दिखाना--हारकर भाग जाना ।

पीठ पर होना—सहायक होना ।

पीठ फेरना—उपेक्षा करना ।

पेट काटना —कम खाना ।

पेट में चूहे दौड़ना—बहुत भूख लगना ।

पैरों के नीचे से ज़मीन निकलना—बहुत हैरान होना या घबराना ।

पोल खोलना – भेद प्रकट करना ।

फूँक फूँक कर कदम रखना--सोच विचार कर काम करना ।

फूला न समाना –बहुत प्रसन्न होना ।

बगल में मुँह डालना—शर्माना, अपना आप परखना ।

बगला भगत--कपटी ।

बगलें झाँकना--उत्तर न दे सकना ।

बढ़ बढ़ कर बातें बनाना—डींग मारना ।

बन्दर घुड़की—दिखावे की धमकी ।

बरस पड़ना – क्रुद्ध होकर डाँटना ।

बहती नदी में हाथ धोना—मौके पर काम निकालना ।

बाँह देना, बाँह पकड़ना—सहायता देना ।

बाएँ हाथ का खेल—अत्यन्त सरल काम ।

बात का धनी होना—प्रण का पक्का होना ।

बातों में उड़ाना—हँसी में टालना।

बाल की खाल उतारना—जरा सी बात की आलोचना करना।

बाल पकना—बूढ़ा हो जाना।

बालू की भीत—जल्दी नष्ट होने वाली, कच्ची।

बीड़ा उठाना—जिम्मेवारी लेना।

बोल बाला होना—प्रसिद्धि होना, नाश होना।

बोली मारना—ताना देना।

भण्डा फूटना—रहस्य खुलना।

भनक पड़ना—थोड़ी सी सूचना मिलना।

भांजी मारना—रुकावट डालना।

भाड़ झोंकना—व्यर्थ समय खोना।

भिड़ के छत्ते को छेड़ना—झगड़ालू व्यक्ति को छेड़ना।

भेड़ाचाल, भेड़ियाधसान—परिणाम सोचे बिना नकल।

मक्खियां मारना—खाली रहना।

मक्खी पर मक्खी मारना—लेख की पूरी नकल उतारना।

मन के लड्डू खाना—मनोरथ बनाना।

मन खट्टा होना—मन फिर जाना।

माथा ठनकना—आशंका होना।

मारा मारा फिरना—व्यर्थ घूमना, इधर-उधर फिरना।

मिट्टी का माधो—मूर्ख, सीधा-सादा।

मीठी छुरी होना—ऊपर से मित्र भीतर से शत्रु होना।

मुँह की खाना—बुरी तरह हारना।

मुँह ताकना, मुँह देखना—दूसरे का सहारा देखना, लिहाज करना।

मुँहतोड़ उत्तर देना—खरा उत्तर देना।

मुँह धोना—आशा न रखना।

मुँह पर हवाइयाँ उड़ना—भय या लज्जा के कारण मुँह की रंगत बदल जाना।

मुँहफट—प्रत्येक बात कहे बिना न रहने वाला।

मुँह में पानी भर आना—ललचाना।

मुँह लगाना—उद्दण्ड बनाना।

मुट्ठी गर्म करना—घूस देना।

मुट्ठी में करना वश में करना।

मैदान मारना—जीतना।

मोम होना—नर्म होना।

रंग चढ़ना—असर पड़ना।

रंग ढंग बदलना—परिवर्तन आना।

रंग लाना—असर दिखाना।

रंगा सियार—ढोंगी।

राई का पर्वत बनाना—तुच्छ बात को बढ़ा देना।

रुपये पानी में डालना—निकम्मी वस्तु मोल लेना।

लकीर का फकीर होना—पहली बात पर पूरी तरह चलना।

लट्टू होना—मुग्ध होना।

लहू के घूंट पीकर रह जाना—क्रोध को दबाकर रह जाना।

लंका दाह होना—सब कुछ नष्ट हो जाना।

लम्बी चौड़ी हांकना—डींग मारना।

लाड लड़ाना—बहुत लाड-प्यार करना।

लाल पीला होना—क्रुद्ध होना।

लुटिया डुबोना—काम बिगाड़ना।

लेने के देने पड़ जाना—लाभ की जगह हानि होना।

लोहा मानना—अपने से प्रबल स्वीकार करना।

लोहे के चने चबाना—बहुत कठिन काम करना।
विष उगलना—कठोर वचन बोलना।
शेर के कान कतरना—चालाक होना।
सटपटाते फिरना—घबराए हुए फिरना।
समझ पर पत्थर पड़ना—बुद्धि नष्ट होना।
सात घाट का पानी पीना—अनुभवी होना।
सिक्का बैठाना—धाक जमाना, प्रभाव जमाना।
सिर आंखों के बल जाना—अत्यन्त आदर करना।
सिर उठाना—विरोध में उठना।
सिर ऊँचा होना—जीत होने पर मान होना।
सिर तलो पर धरना—मरने की परवाह न करना।
सिर पर चढ़ाना—उद्दण्ड को कुछ न कहना।
सिर धुनना—शोक करना, पछताना।
सिर पटकना—प्रत्यन करना।
सिर पर आ जाना—समीप आना।
सिर पर भूत सवार होना—आपे से बाहर होना।
सिर से पाँव तक आग लगना—बहुत क्रुद्ध होना।
सूरज को दीपक दिखाना—प्रसिद्ध व्यक्ति का परिचय देना।
सोने की चिड़िया—बहुत लाभ देने वाली वस्तु।
स्वाहा करना—नष्ट करना, जलाना।
हँसी में उड़ाना—ध्यान न देना।
हड़प कर लेना—दूसरे की वस्तु हजम कर जाना।
हथियार डाल देना—पराजय स्वीकार कर लेना।
हवा उड़ना—खबर फैलना, बुरी खबर फैलना।
हवा पलटना—समय बदलना, दशा बदलना।

हवा लगना—संगति का प्रभाव पड़ना।

हवा से बातें करना—बहुत तेज चलना।

हवा से लड़ना—बिना बात के लड़ना।

हवा हो जाना—तेजी से भाग जाना।

हाथ उठाना—मारना।

हाथ कटाना—लिखकर दे देना और बाध्य हो जाना।

हाथ खींचना—सहायता बन्द कर देना।

हाथ डालना—शुरू करना।

हाथ तंग होना—खर्चने के लिये धन कम होना।

हाथ धोकर पीछे पड़ना—पूरी तरह पीछे पड़ना।

हाथ पकड़ना—सहायता देना।

हाथ पर हाथ रखकर बैठना—खाली बैठना।

हाथ पांव फूल जाना—डर से घबरा जाना।

हाथ पाँव मारना—यत्न करना।

हाथ फैलाना—मांगना।

हाथ बँटाना—कार्य में सहायता देना।

हाथ मलना—पछताना।

हाथों की मैल—तुच्छ।

हाथों के तोते उड़जाना—होश उड़ना।

हाथों हाथ—शीघ्र।

होश सम्भालना—सयाना होना।

लोकोक्तियाँ

अण्डा सिखावे बच्चे को कि चीं चीं मत कर—छोटा बड़े को उपदेश देवे।

अन्त गता सो मता—जिसका परिणाम अच्छा हो वह अच्छा है।

अन्त भले का भला—भले व्यक्ति की अन्त में भलाई होती है।

अंधा क्या चाहे दो आंखें—आवश्यक वस्तु अपने आप ही मिल रही हो तो और क्या चाहिये।

अंधी पीसे कुत्ता चाटे—सीधे सादे की कमाई धूर्त उड़ाते हैं।

अंधेर नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा—प्रबन्ध कर्ता के अयोग्य होने पर सब बातों में गड़बड़ी है।

अंधों में काने राजा—मूर्खों में एक साधारण व्यक्ति उच्च व्यक्तियों सा मान पाता है।

अधजल गगरी छलकत जाय—अल्प-ज्ञानी दिखावा बहुत करता है।

अधेला न दे अधेली दे थोड़ी वस्तु नहीं देता, फँसने पर अधिक देता है।

अपना लाल गँवाय के दर दर मांगे भीख—अपनी वस्तु यों ही खोकर दूसरे के आगे हाथ फैलाता है।

अपनी अपनी डफली अपना अपना राग—सब का भिन्न मत है।

अपनी करनी पार उतरनी—अपने ही कर्मों का फल मिलता है।

अपनी आँख का शहतीर किसी को नहीं सूझता—अपनी बुराई या भूल किसी को नहीं सूझती।

अब पछताए होत क्या जब चिड़ियां चुग गईं खेत—समय बीत जाने पर पछताने से क्या लाभ।

आँख और कान में चार अंगुल का फर्क है—देखने-सुनने में भेद।

आँख का अंधा नाम नैनसुख—नाम अच्छा, पर काम बुरा।

आँख के अंधे गांठ के पूरे—मूर्ख परन्तु खूब खर्च करने वाले।

आँधी के आम—सस्ती चीज।

आगे कुआँ पीछे खाई—सब ओर आपत्ति।

आटे का चिराग घर रखूँ तो चूहा खाय बाहर रखूं तो कौआ ले जाय - किसी प्रकार भी बचाव नहीं हो सकता।

आधी छोड़ सारी को धावे, आधी रहे न सारी पावे—अधिक लोभ से हानि होती है।

आ बैल मुझे मार—जान बूझ कर आपत्ति सिर पर लेना।

आम के आम गुठलियों के दाम—दूना लाभ।

आये थे हरिभजन को ओटन लगे कपास—कोई अच्छा काम करने आये थे, व्यर्थ के काम करने लगे।

उखली में सिर दिया तो मूसलों का क्या डर—जब कठिन काम करना आरम्भ कर दिया तो रुकावटों से क्या डरना।

उतर गई लोई तो क्या करेगा कोई—मान नष्ट होने पर मनुष्य ढीठ हो जाता है।

उतावला सो बावला—शीघ्रता में मनुष्य घबरा जाता है।

उलटा चोर कोतवाल को डांटे—अपराधी अपना अपराध स्वीकार करने के स्थान पर पूछने वाले को धमकाता है।

ऊँची दुकान फीका पकवान—तत्व कुछ नहीं दिखावा बहुत।

एक अकेला दो का मेला—एक से अधिक व्यक्ति होने पर ही समय आनन्द से बीतता है।

एक अनार सौ बीमार—चीज थोड़ी लेने वाले अधिक।

एक तो करेला कड़वा दूसरे नीम चढ़ा—पहले से ही दोषयुक्त था, एक बड़ा दोष और लग गया।

एक पंथ दो काज—परिश्रम एक और फल दो।

एक मछली सारे तालाब को गन्दा कर देती है—एक बुरा व्यक्ति सारे कुटुम्ब, समाज या साथियों को बुरा बना देता है।

ओस चाटे प्यास नहीं बुझती—अधिक की आवश्यकता होने पर जरा सी वस्तु मिले तो कुछ लाभ नहीं होता।

कढ़ाई से निकला चूल्हे में गिरा—एक आपत्ति से बचकर दूसरी आपत्ति में फँस गया।

कभी नाव गाड़ी पर, कभी गाड़ी नाव पर—समय पर एक दूसरे की सहायता करना।

कमली ओढ़ने से फकीर नहीं होता—वेष बदलने से स्वभाव नहीं बदलता।

कहां राजा भोज कहां गंगू तेली—एक उच्च है और दूसरा मामूली है, दोनों की तुलना नहीं हो सकती।

काम जो आवे कामरी का ले करे कुमांच—साधारण वस्तु से काम चल जाय तो विशेष वस्तु को क्या करना।

का वर्षा जब कृषि सुखाने—समय बीतने पर सहायता देनी व्यर्थ है।

काला अक्षर भैंस बराबर—बिलकुल अपठित।

कुएं की मिट्टी कुएं में ही लग जाती है—जहां से आय होती है वहीं खर्च हो जाता है।

कुत्ते को घी हजम नहीं होता—ओछा आदमी सम्पत्ति पाकर छिपा नहीं सकता।

कुम्हारी अपना ही भाण्डा सराहती है—अपनी ही वस्तु को सब अच्छा कहते हैं।

कोयलों की दलाली में मुँह काला—कुसंगति से कलंक लगता है।

खग जाने खग ही की भाषा—जो जिन के साथ रहता है उन्हीं का हाल जानता है।

खोदा पहाड़ निकली चुहिया—परिश्रम बहुत, लाभ थोड़ा।

गए ऊन को लेन पर आए बाल मुँडाय—लाभ के लिए यत्न किया था, उलटी हानि हो गई।

गंगा गए तो गंगादास, जमुना गए तो जमुनादास—कच्चे विचारों का व्यक्ति।

गाडर पाली ऊन को लागी चरन कपास—किसी को रक्षा या लाभ के लिए रखा था, वह उलटा हानि पहुंचाने लगा।

गाय न वच्छी नींद आवे अच्छी—जिसके पास कुछ न हो वह निश्चित रहता है।

गुड़ न दे गुड़ की सी बात तो करे—कुछ न दे, पर मीठा बोले।

गेहूँ के साथ घुन भी पिस जाता है—बड़े व्यक्ति के साथ छोटे या आश्रित व्यक्ति को भी हानि होती है।

गोद में बैठकर आंख में उंगली—भलाई करने वाले से बुराई।

घर का जोगी जोगना आन गांव का सिद्ध—घर के योग्य-व्यक्ति का उतना मान नहीं करते जितना कि बाहर के साधारण व्यक्ति का।

घर का भेदी लंका ढावे—फूट से हानि होती है।

चिकने घड़े पर पानी नहीं ठहरता—निर्लज्ज पर असर नहीं होता।

चोर की दाढ़ी में तिनका—अपराधी व्यक्ति अन्य बातों को भी अपनी बात समझ लेता है और उसका भेद प्रगट हो जाता है।

छछूँदर के सिर में चमेली का तेल—अयोग्य व्यक्ति को उत्तम वस्तु देनी व्यर्थ है।

छोटा मुंह बड़ी बात—अवस्था से बढ़कर बातें बनाना।

जब तक साँस तब तक आस—जीने तक आशा बँधी रहती है।

जल में रह कर मगर से बैर—एक स्थान पर रहते हुए वहां के अधिकारी से ही शत्रुता।

जस दूल्हा तस बनी बराता—एक से साथी।

जहाँ गुड़ होगा वहीं मक्खियां होंगी—गुणी के पास ही लोग आते हैं अथवा जहाँ लाभ हो लोग वहीं आते हैं।

जहां न पहुंचे रवि वहां पहुंचे कवि—कवि बड़ी दूर की कल्पना कर लेते हैं।

जाकी रही भावना जैसी प्रभु मूरत देखी तिन तैसी—जिसके जैसे विचार होते हैं वह दूसरों को वैसा ही समझता है।

जाके पाँव न फटी बिवाई सो क्या जाने पीर पराई—जिसने कभी कष्ट नहीं सहा वह दूसरों के कष्ट को क्या जाने।

जाको राखे साइयां मार न सकिहै कोय—प्रभु रक्षक हो तो कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

जितने मुँह उतनी बातें—अनेक अफवाहें फैली हुई हैं।

जिसकी लाठी उसकी भैंस—बलवान् ही अधिकार जमाता है।

जिसके हाथ डोई उसका सब कोई—सब दाता के पक्ष में होते हैं।

जैसी करनी वैसी भरनी—कर्म के अनुसार फल मिलता है।

जैसी बहै बयार पीठ तब तैसी दीजै—जैसा समय हो वैसा ही बन जाना चाहिये।

जो गरजते हैं वे बरसते नहीं—डींग मारने वाले कुछ करते नहीं।

जो तोको कांटा बोवै ताहि बोव तू फूल—बुरा करने वाले के साथ भी भला करना चाहिये।

ठोकर लगी पहाड़ की तोड़े घर की सिल—नुकसान बाहर किसी ने किया, गुस्सा घर वालों पर उतारने लगे।

तबेले की बला बन्दर के सिर—दोषी कोई, फँसा कोई।

तीन में न तेरह में मृदंग बजावे डेरे में—किसी भी पक्ष में न।

तू डार डार मैं पात पात—एक चालाक, दूसरा उससे भी अधिक।

तेते पांव पसारिये जेती लम्बी सौर—अपनी सामर्थ्य के अनुसार

कार्य करना चाहिए।

थोथा चना बाजे घना—दिखावा अधिक सार कुछ भी नहीं।

दान की बछिया के दाँत नहीं देखे जाते—मुफ्त की वस्तु की जांच-पड़ताल नहीं की जाती।

दिये तले अंधेरा—पास ही कार्य होने पर भी ज्ञान न होना अथवा अपराध रोकने वाले के होने पर भी अपराध का होना।

दूध का जला छाछ फूंक फूंक कर पीता है—एक बार हानि उठाने वाला बड़ा सावधान रहता है।

दूर के ढोल सुहावने—निस्सार परन्तु आकर्षक वस्तुएं, जब तक अनुभव न हो, तब तक ही अच्छी लगती हैं।

देखें ऊंट किस करवट बैठता है—देखें क्या परिणाम निकलता है।

धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का—दो कामों में पांव फँसाने वाला अव्यवस्थित-चित्त व्यक्ति कहीं का नहीं रहता।

नदी किनारे रूखड़ा जब तब होय विनास—भयानक आदमी के पास बसने पर नष्ट होने की आशंका लगी रहती है।

नदी में रहकर मगर से बैर—आश्रय-दाता से वैर।

न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी—न असम्भव शर्त पूरी होगी, न कार्य पूरा होगा।

नया नौ दिन पुराना सौ दिन—पुरानी वस्तु या पुराना व्यक्ति ही अच्छा होता है, नये का विश्वास नहीं होता।

न रहेगा बांस न बजेगी बांसुरी—न कारण रहेगा, न कार्य होगा।

नाच न जाने आंगन टेढ़ा—काम आता नहीं, बहाने बनाता है।

नाम बड़े पर दर्शन छोटे—प्रसिद्धि बहुत, तत्त्व कुछ नहीं।

नौ नकद न तेरह उधार—उधार की अधिक बचत से नकद की कम बचत अच्छी।

नौ सौ चूहे खाय के बिलारी बैठी तप के—अनेक पाप करके पुण्य करने का दिखावा या यत्न करने लगा।

पराधीन सुपने सुख नाहीं—परतन्त्र व्यक्ति सदा दुःखी रहता है।

बगल में छुरी मुंह में राम राम—ऊपर से मित्र, भीतर से शत्रु।

बाप बड़ा न भैया सब से बड़ा रुपैया—धनी ही उच्च गिना जाता है।

बिल्ली के भागों छिक्का टूटा—अचानक काम बन गया।

भई गति साँप छछूंदर केरी—काम करे या न करे हानि ही होगी।

भागते चोर की लंगोटी ही सही—सारी हानि के समय जो कुछ मिल जाय या बच जाय वही अच्छा है।

भेड़ जहाँ जायगी वहीं मुंडेगी—सीधा सादा व्यक्ति सब जगह ठगा जाता है।

भेड़ पूंछ भादों नदी को गहि उतरे पार—अत्यन्त विपत्ति में तुच्छ व्यक्ति से कुछ लाभ नहीं होता।

भौंर न छांड़े केतकी तीखे कंटक जान—प्रेम होने पर प्रेमी बाधाओं की परवाह नहीं करते।

मर्ज बढ़ता गया ज्यों ज्यों दवा की—सुधारने की चेष्टा करने पर और भी बिगड़ता गया।

मान न मान मैं तेरा मेहमान—हठात् गले पड़ना।

यह मुँह और मसूर की दाल—योग्यता से अधिक वस्तु को पाने की इच्छा!

रस्सी जल गई बल न गया—हानि हो गई, पर घमण्ड न गया।

लकड़ी के बल बंदरी नाचे—दण्ड से धूर्त भी वश में हो जाते हैं।

लातों के भूत बातों से नहीं मानते—दुष्ट लोग दण्ड बिना काबू में नहीं आते।

वा सोने को जारिये जासे टूटे कान—जिससे हानि पहुंचे उस

सुन्दर वस्तु को भी त्याग देना चाहिये।

समय पाय तरुवर फल केतिक सींचो नीर—चाहे कितना प्रयत्न किया जाय, समय आने पर ही कार्य पूर्ण होता है।

सहज पके सो मीठा होय—धीरे धीरे किया जाने वाला कार्य दृढ़ और फलदायक होता है।

सावन हरे न भादों सूखे—सदा एक सी ही दशा रहती है।

सांप मरे न लाठी टूटे—दुष्ट का नाश हो जाय अथवा काम बन जाय और अपनी हानि भी न हो।

सिर मुंडाते ओले पड़े—काम आरम्भ करते ही विघ्न हुआ।

सूरदास यह कारी कामरि चढ़े न दूजो रंग—दुष्ट व्यक्ति को चाहे कितना समझाओ, वह अपनी दुष्टता नहीं छोड़ता।

सौ सुनार की एक लुहार को—बलहीन या निर्धन व्यक्ति थोड़ा थोड़ा करता है, शक्तिमान् या धनी एक बार ही कर डालता है।

हाथ कंगन को आरसी क्या—प्रत्यक्ष चीज के लिये प्रमाण क्या।

हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और—प्रकट कुछ करना और करना कुछ और।

होनहार बिरवान के होत चीकने पात—महान् बनने वाले के लक्षण बचपन में ही दिखाई देने लगते हैं।

अभ्यास

शुद्ध करो—साथ के साहस बड़े किया का मुकावला आसफ़खाँ ने दुर्गावती रानी। में तोड़ भीमसेन अन्त ने पीठ टेक कर घुटना की राक्षस पर दी कमर उसकी। बहुत सी मनुष्य और पशु घूम रही थी, किन्तु प्रभु की ध्यान में मग्न ध्रुव रुका न। पीठ दिखाना, दूर के ढोल सुहावने— इनके अर्थ लिखकर इन्हें वाक्यों में प्रयुक्त करो। मन नष्ट होना का मुहावरा और दूना लाभ की लोकक्ति लिखो।

दूसरा अध्याय

वाक्यखण्ड

वाक्य के दो खण्ड होते हैं—उद्देश्य और विधेय। जिसके सम्बन्ध में कुछ कहा जाय उसे उद्देश्य कहते हैं। उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहा जाय उसे विधेय कहते हैं। जैसे—बालक खेलता है। इस वाक्य में 'बालक' उद्देश्य है और बालक के सम्बन्ध में कहा गया 'खेलता है' विधेय है।

उद्देश्य

उद्देश्य में कर्ता और कर्ता का विस्तार होता है। संज्ञा या संज्ञा के स्थान में प्रयुक्त होने वाले शब्द कर्ता होते हैं। जैसे—

संज्ञा—'लक्ष्मण' दौड़ता है।

सर्वनाम—'वह' गाता है।

बिशेषण—'भले' किसी का बुरा नहीं करते।

क्रिया का सामान्यरूप—'पढ़ना' सब से आवश्यक काम है।

कर्ता को स्पष्ट करने वाले विशेषण आदि कर्ता-विस्तार कहलाते हैं। जैसे—चञ्चल बच्चा गिर पड़ा—इस वाक्य में 'चञ्चल'; दशरथ के पुत्र राम ने रावण को मारा—इस

वाक्य में 'दशरथ के पुत्र'; तथा कुरुवंशी महाराज युधिष्ठिर के प्यारे भतीजे और अर्जुन के प्राणों की तरह प्यारे पुत्र षोडशवर्षीय वीर अभिमन्यु ने चक्रव्यूह तोड़ दिया—इस वाक्य में 'कुरुवंशी महाराज युधिष्ठिर के प्यारे भतीजे और अर्जुन के प्राणों की तरह प्यारे पुत्र षोडशवर्षीय वीर' कर्ता-विस्तार हैं।

विधेय

विधेय में क्रिया और विधेयविस्तारक पूरक, कर्म, कर्मविस्तार, क्रियाविशेषण आदि होते हैं। जैसे—

क्रिया—वह 'पढ़ता है'।

पूरक—मैंने उसे 'अपना' समझा।

कर्म—तू 'गोली' चलाता है।

कर्म-विस्तार—राम ने 'तीक्ष्ण' बाण मारे।

क्रियाविशेषण आदि—'आह !' दुष्ट ने 'धीरे धीरे और तड़पा तड़पा कर' मारा।

निष्कर्ष यह कि कर्ता और कर्ताविस्तारक उद्देश्य और शेष सब कुछ विधेय होता है।

वाक्य-भेद

वाक्य तीन प्रकार के होते हैं—साधारण, मिश्रित और संयुक्त।

साधारणवाक्य

जिस वाक्य में केवल एक उद्देश्य और एक ही विधेय होता है उसे साधारण वाक्य कहते हैं । साधारण वाक्य छोटा और कर्ताविस्तार तथा विधेयविस्तार के कारण बड़ा भी होता है । जैसे—मैं जाता हूं । पंजाब यूनिवर्सिटी के प्रधान की संरक्षकता में संगठित लाहौर के संस्कृत साहित्य मण्डल ने आज, १ अगस्त १९३५ ई० को सायंकाल ५ बजे, विद्याभवन में लाहौर की प्रायः सभी सभाओं के प्रतिनिधियों को बुलाकर एक बहुत बड़ा निबन्धसम्मेलन किया ।

मिश्रितवाक्य

जिस वाक्य में एक प्रधानवाक्य और एक या अधिक अङ्गवाक्य होते हैं उसे मिश्रितवाक्य कहते हैं । जैसे—उसने कहा कि मैं आज बम्बई जाऊँगा । इस वाक्य में 'उसने कहा' प्रधानवाक्य और 'मैं आज बम्बई जाऊँगा' अङ्गवाक्य है ।

अङ्गवाक्य तीन प्रकार के होते हैं—संज्ञावाक्य, विशेषणवाक्य और क्रियाविशेषणवाक्य ।

संज्ञावाक्य संज्ञा के समान क्रिया के कर्ता, कर्म और पूरक आदि के रूप में आते हैं । जैसे—तुम जानते न थे, यह झूठ है—इसमें 'तुम जानते न थे' यह अङ्गवाक्य,

'झूठ है' क्रिया के कर्ता के रूप में आया है। वह लिखता है कि मरहठे बड़े वीर थे—इसमें 'मरहठे बड़े वीर थे' यह अङ्गवाक्य, 'लिखता है' क्रिया के कर्म के रूप में आया है। मेरा विचार है कि युद्ध समाप्त हो चुका होगा—इसमें 'युद्ध समाप्त हो चुका होगा' यह अंगवाक्य, 'विचार है' क्रिया के पूरक के रूप में आया है।

विशेषणवाक्य विशेषण का काम देते हैं। जैसे—जो गरजते हैं वे बरसते नहीं। जिस बालिका की ओर बहिनजी उंगली उठाती थीं उसे ही सब पकड़ने लगती थीं। इन वाक्यों में 'जो गजरते हैं' और 'जिस बालिका की ओर बहिनजी उंगली उठाती थीं' ये अंगवाक्य क्रमशः कर्ता और कर्म के काम देते हैं, अतः ये दोनों विशेषण-वाक्य हैं।

क्रियाविशेषणवाक्य क्रियाविशेषण का काम देते हैं। जैसे—जहां नदी बहती थी वहां अब सूखी रेत पड़ी है। जितना वह खिझता उतना ही लड़के उसे तंग करते। जब तुम परीक्षा दोगे तब मैं पढ़ना आरम्भ करूंगा। इन वाक्यों में 'जहां, जितना और जब' से आरम्भ होने वाले अगवाक्य क्रमशः स्थानवाचक, परिमाणवाचक और

कालवाचक क्रियाविशेषणों का काम देते हैं, अतः ये क्रियाविशेषण वाक्य हैं।

संयुक्तवाक्य

जिस वाक्य में दो या अधिक साधारण या मिश्रित वाक्य होते हैं उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं। संयुक्त वाक्य में एक प्रधान वाक्य और शेष समानाधिकरण वाक्य होते हैं। समानाधिकरण वाक्य चार प्रकार के होते हैं—संयोजकवाक्य, विभाजकवाक्य, विकल्पदर्शकवाक्य और परिणामबोधकवाक्य।

संयोजकवाक्य से वाक्यों का आपस में मेल प्रकट होता है। जैसे—एक पढ़ रहा है और दूसरा लिख रहा है। तुम जाते हो और वे आते हैं।

विभाजकवाक्य से वाक्यों का आपस में विभाग या विरोध प्रकट होता है। जैसे—मैंने तुमको बहुत समझाया, परन्तु तुमने एक न मानी। प्रधान मैं था, न कि आप।

विकल्पदर्शकवाक्य से वाक्यों में विकल्प प्रकट होता है। जैसे—चुप रहो या कमरे से बाहर चले जाओ। तुम आजाना अथवा मैं ही आजाऊंगा। भाग जाओ नहीं तो मार पड़ेगी।

परिणामबोधकवाक्य में फल का बोध होता है। जैसे—
तुम मेरे कहने पर चलते रहे, इसीलिये उत्तीर्ण हो गए।
तुमने क्षमा मांग ली है, अतः मैं तुम्हें क्षमा करता हूँ।

अभ्यास

वाक्य के कितने खण्ड होते हैं ? उद्देश्य और विधेय किसे कहते हैं ? कर्ताविस्तार किसे कहते हैं ? विधेय-विस्तार में क्या क्या होता है ? वाक्य कितने प्रकार के होते हैं ? मिश्रितवाक्य और संयुक्तवाक्य के उपवाक्य को क्या कहते हैं ? उनके भेद सोदाहरण लिखो। निम्नलिखित वाक्य किस किस भेद के हैं—

हमारी और तुम्हारी इतनी लम्बी यात्रा का पूरा समाचार कानपुर से निकलने वाले साप्ताहिक प्रताप में परसों ही अक्षरशः छप गया था। कमला की परीक्षा सिर पर थी, तभी तो वह आ नहीं सकी। न, इसे मत मारो, इतना कहकर वह भाग गया। रमेश, भोला, कुन्दन और मोहन को छोड़ सब खड़े हो जाओ।

तीसरा अध्याय

विरामचिन्ह

वाक्य के भाव को भली प्रकार से प्रकट करने के लिये बोली के ठहराव आदि के अनुसार वाक्य में जो चिह्न लगाए जाते हैं उन्हें विरामचिह्न कहते हैं। बोलने में कहीं थोड़ा ठहरते हैं, कहीं अधिक। कहीं प्रश्न होता है,

कहीं आश्चर्य, भय आदि हृदय के भाव प्रकट करने होते हैं; इसलिये विरामचिह्न दस प्रकार के हैं—

(१)	अल्पविराम	(,)
(२)	अर्धविराम	(;)
(३)	पूर्णविराम	(।)
(४)	प्रश्नचिह्न	(?)
(५)	भावबोधक	(!)
(६)	अवतरणचिह्न	(" ")
(७)	कोष्ठक	( ) [ ] { }
(८)	योजक	(-)
(९)	निर्देशक	(—)
(१०)	लाघवचिह्न	(०)

अल्पविराम (,)

अल्पविराम थोड़ा ठहराव प्रकट करने के लिये नीचे लिखे स्थानों पर प्रयुक्त होता है—

(अ) एक वाक्य में एक से शब्दों और एक से वाक्यांशों के बाद तथा प्रधानवाक्य और समानाधिकरण वाक्यों के बीच में। जैसे—मोहन, महेन्द्र, मधुसूदन और माधवेन्द्र दौड़ रहे थे। तुम खेलने-कूदने में, गाने-बजाने में और खाने-पीने में ही लगे रहते हो। कहीं तुम

धोखे में न रहो, इसलिये तुम्हें सावधान कर दिया है।

नोट—'और' से पहले अल्पविराम नहीं लगता। जैसे—रमेश, मोहन और नरेन्द्र पास हो गए हैं। मैं हो आया हूँ और तुम अभी तैयार भी नहीं हुए।

(आ) 'और', 'यह' तथा नित्य-सम्बन्धी शब्दों के लुप्त होने पर। जैसे—सीताजी सो रही थीं, (और) लक्ष्मण पहरा दे रहे थे। कौन आएंगे, (यह) मैं नहीं जानता। जब बादल आएंगे, (तब) वर्षा होगी। तुम जहां आओगे, (वहीं) गड़बड़ी मचाओगे।

(इ) वाक्य के अन्तर्गत वाक्य के आदि और अन्त में। जैसे—तुम, जैसा कि मुझे पता है, यद्यपि कलकत्ते नहीं जा सकते, फिर भी लखनऊ तो जा सकते हो न।

(ई) सम्बोधन प्रकट करने के लिये। जैसे—पिताजी, हमें पिस्तौल ले दो।

(उ) पद्य के पहले और तीसरे पाद के बाद। जैसे—

दुर्वृत्त दुर्योधन न जो शठता सहित हठ ठानता,
जो प्रेमपूर्वक पाण्डवों की योग्यता को मानता।
तो डूबता भारत न यों रणरक्त पारावार में,
ले डूबता है एक पापी नाव को मंझधार में॥

अर्धविराम (;)

अर्धविराम अल्पविराम की अपेक्षा कुछ अधिक

ठहराव प्रकट करने के लिये अधोलिखित स्थलों पर प्रयुक्त होता है—

(अ) प्रधान वाक्य और समानाधिकरण वाक्य का आपस में अधिक सम्बन्ध न होने पर। जैसे—वर्षा जोरों से हो रही थी; महेन्द्र पड़ा सो रहा था; मुझे स्टेशन पर पहुँचना चाहिये था।

(आ) लम्बे मिश्रित और संयुक्त वाक्य में अत्यन्त सम्बन्धित वाक्य से पहले। जैसे—यद्यपि मेरी सारी चीजें भीगकर बिगड़ चुकी थीं, मोहन की एक भी चीज़ नहीं बिगड़ी थी; फिर भी मेरे मुख पर चिन्ता का कोई भी चिह्न नहीं था।

पूर्णविराम (।)

पूर्णविराम ठहराव प्रकट करने के लिये निम्नलिखित स्थानों पर आता है—

(अ) पूरे वाक्य के बाद। जैसे—दस बजते ही सब लड़के आ पहुंचे। मेरी बातों को झूठ न समझना।

(आ) पद्य के दूसरे पाद के बाद। जैसे—दुर्वृत्त आदि का दूसरा पाद—'जो प्रेमपूर्वक पाण्डवों की योग्यता को मानता।' पद्य के चौथे पाद के बाद दो पूर्णविराम लगाए जाते हैं। जैसे—पूर्वोक्त कविता का चौथा पाद—'ले डूबता है एक पापी नाव को मंझधार में॥'

[अंग्रेजी में पूर्णविराम का चिह्न (.) यह है ।]

प्रश्नचिन्ह ?

प्रश्नचिह्न प्रश्न वाले वाक्य के अन्त में पूर्णविराम के बदले आता है। जैसे—अभी अभी यहां कौन बैठा था? कारक किसे कहते हैं ?

भावबोधक (!)

भावबोधक नीचे लिखे स्थानों पर प्रयुक्त होता है—

(अ) विस्मय, आश्चर्य, घृणा, डर, दुःख आदि को प्रकट करने वाले शब्दों वाक्यांशों और वाक्यों के बाद। जैसे—हैं ! यह दो वर्ष का है ! तुम अभी तक कुछ भी नहीं पढ़े ! बाप रे ?

(आ) नाटक में सम्बोधन प्रकट करने के लिये। जैसे—दुर्योधन—सिन्धुराज ! तुम हमारे सखा हो।

(इ) किसी शब्द, वाक्यांश या वाक्य का विरुद्ध अर्थ अभीष्ट हो तो। जैसे—मेरा सर्वनाश करके अब यह पुण्यात्मा ! तुम्हारी ओर झुका है। यहां पुण्यात्मा का अर्थ पापात्मा अभीष्ट है।

अवतरणचिह्न (" ")

ये निम्नलिखित स्थानों पर प्रयुक्त होते हैं—

(अ) किसी के कथन को अक्षरशः उद्धृत करने के लिये। जैसे—माता बोली, " इस प्रकार मैं अपने

लाल को नहीं छोड़ सकती" ।

(आ) पुस्तक, समाचारपत्र, पदवी, लेख आदि के नाम तथा किसी विशेष शब्द या अक्षर को प्रकट करने के लिये । जैसे—उनकी "मृत्यु पर विजय" बड़ी अमूल्य पुस्तक है । "हिन्दी मिलाप" लाहौर से निकलता है । आपने "प्रभाकर" कब पास की थी ? "अ" सब से पहला स्वर है ।

किसी की उक्ति में यदि एक और उक्ति दिखानी हो तो इकहरा अवतरणचिह्न प्रयुक्त होता है । जैसे—सुरेश बोला, "प्यारे प्रभु की आज्ञा 'सदा सत्य बोलो' मैं कभी नहीं भूल सकता" ।

कोष्ठक ( )

यह किसी शब्द का अर्थ दिखाने के लिए, नाटक में अभिनय प्रकट करने के लिये, विषय-विभाग-सूचक-अंकों या अक्षरों को बतलाने के लिये प्रयुक्त होता है । जैसे—

ऋषि की सन्तति (सन्तान) बड़ी विद्वान् थी ।

लव—मैं नहीं सुनना चाहता । (आगे बढ़कर और तलवार खींचकर) यदि वीर हो तो सामने आजाओ ।

प्रत्यय तीन प्रकार के होते हैं—

(१) क्रियाप्रत्यय, (२) कृत्प्रत्यय, (३) तद्धितप्रत्यय ।

प्रकार के तीन भेद हैं—

(क) साधारण, (ख) सम्भाव्य, (ग) प्रवर्तनार्थक।

योजक (-)

यह चिह्न मिश्रित शब्दों में लगता है। जैसे—प्रारम्भिक-विज्ञान, राम-रावण-युद्ध।

निर्देशक (—)

निर्देशक निम्नलिखित स्थानों में प्रयुक्त होता है—

(अ) कहना, लिखना, बताना, बोलना आदि क्रियाओं के और जैसे, यथा आदि अव्ययों के बाद। जैसे—उसने कहा—सच-सच कहो, क्या बात है। 'अ' और 'अ' मिलकर 'आ' बनता है, जैसे—राम + अयन = रामायण।

(आ) नाटक में वक्ता-पात्र के नाम के आगे। जैसे—सीता—महाराज! क्या आज्ञा है?

(इ) अचानक भाव परिवर्तन होने से वाक्य टूटने पर। जैसे—मैं जब तक जीवित—अथवा जीवित रहने का मुझे क्या अधिकार है!

(ई) शब्द, वाक्यांश या वाक्य का अर्थ बतलाने के लिये अर्थ के आगे और पीछे। इस पयोनिधि—समुद्र—को कौन लाँघ सकता है। सत्यवादिता के निमित्त—सचाई के लिये—महाराज हरिश्चन्द्र ने क्या कुछ न किया। जब भरत ने भी राज्य को बिलकुल त्याग दिया

—नगर छोड़ नंदीगांव में रहना आरम्भ किया—तो लोग चकित रह गए।

लाघवचिन्ह (०)

किसी शब्द को छोटा करने के लिये आगे लगाया जाता है। जैसे—लाहौर = ला०, महिलाविद्यालय = म० वि०।

निबन्ध-लेखन

किसी पदार्थ, व्यक्ति, गुण, स्वभाव आदि पर सुबोध भाषा में क्रमबद्ध और विस्तृत विचारों से युक्त लेख निबन्ध कहलाता है। प्रस्ताव, प्रबन्ध आदि निबन्ध के ही पर्याय-वाचक शब्द हैं।

निबन्ध तीन प्रकार के होते हैं—वर्णनात्मक, आख्या-नात्मक और विचारात्मक।

वर्णनात्मक निबन्ध

मनुष्य, वस्तु, देश, नगर, गांव, यात्रा आदि सम्बन्धी लेख वर्णनात्मक निबन्ध कहलाते हैं। भिन्न-भिन्न वर्णनात्मक निबन्धों में नीचे लिखी बातें आनी चाहियें—

(१) मनुष्य, पशु आदि प्राणी—जाति, श्रेणी, जन्म, निवास, शरीर-रचना, रूप-रंग, चाल-चलन, आहार, आयु की अवधि, ज्ञान, विशेष कार्य, हानि-लाभ, शिक्षा, अन्य देशवासियों से तुलना, उपसंहार। [मनुष्य के लिए विशेष—विद्या, धर्म तथा राजनैतिक स्थिति।]

(२) वृक्ष, पौदे आदि—जाति, रूप-रंग, लम्बाई-

चौड़ाई, फैलाव, जड़, शाखा, पत्ते आदि, कहां कहां होता है, कैसी भूमि चाहिये, फलने-फूलने की ऋतु, हानि-लाभ, उपसंहार।

(३) नगर, गांव आदि—नाम पड़ने का कारण, पहला नाम यदि हो तो, द्वीप, देश, प्रान्त, जिला आदि, सीमा, विस्तार, जलवायु, जन-संख्या, निवासियों का धर्म, बोली, व्यापार, दर्शनीय स्थान, मार्ग, राज्य, शासन का ढंग, उपसंहार।

(४) पर्वत—प्रदेश, अवस्थिति, विस्तार, जंगल, नदियां, झीलें, खनिज पदार्थ, जलवायु, नगर, गांव, तीर्थ, निवासी, प्रभाव, दर्रे, हानि-लाभ, उपसंहार।

(५) खनिज पदार्थ—निकास स्थान, निकालने के उपाय, साफ करने की रीति, मजदूरी, उपयोग, सुन्दरता, मूल्य, उपसंहार।

(६) भूकम्प आदि—कब हुआ, कितने भूभाग पर हुआ, विस्तृत वर्णन, हानियां, कोई लाभ, सहायता करने वालों का विवरण, उपसंहार।

(७) मेला, त्यौहार आदि—कौन मनाते हैं, कब मनाया जाता है, नाम का कारण, कब से आरम्भ हुआ, पहले कैसे मनाया जाता था, अब कैसे मनाया जाता है,

हानि-लाभ, यदि आवश्यक हो तो सुधार, प्रभाव, उपसंहार।

(८) यात्रा—क्या तैयारी करनी पड़ी, कब आरम्भ की, रास्ते में कहां कहां से होकर जाना पड़ा, मार्ग की घटनाएं, कब निश्चित स्थान पर पहुंचे, कहां ठहरे, वहां की विशेषताएं, विशेष घटनाएं, कब लौटे, शीघ्र या देर से लौटने का कारण, अनुभव, हानि-लाभ, दूसरों को शिक्षा या सम्मति, उपसंहार।

आख्यानात्मक निबन्ध

जीवन-चरित्र सम्बन्धी लेख आख्यानात्मक निबन्ध कहलाते हैं। इनमें निम्नलिखित बातें बतलानी चाहियें—

जन्मतिथि, जन्म-स्थान, कुल, जाति, माता-पिता, बचपन की विशेष घटनाएं, विद्याग्रहण, विवाह, सन्तान, अथवा विवाह क्यों न किया, आजीविका या राज्यप्राप्ति, स्वभाव, गुण-दोष, कर्म, परोपकार या अपकार का काम, जीवन के कष्ट, मान, अपमान, मर चुका हो तो मृत्यु, जीवन से उपदेश।

विचारात्मक निबन्ध

सत्य, दया, सन्तोष, आदि अमूर्त्त विषय सम्बन्धी और आलोचना तथा प्रत्यालोचना सम्बधी लेख विचारात्मक निबन्ध कहलाते हैं। विचारात्मक निबन्धों में निम्नलितिख

बातों पर प्रकाश डालना पड़ता है—

(१) सत्य, सन्तोष आदि——किसे कहते हैं, उसका मनुष्य पर क्या प्रभाव पड़ता है, उपयोग, उससे कुछ हानि तो नहीं होती, विरोधी मत का निराकरण, होने या न होने से लाभ या हानि, उदाहरण, किस प्रकार अभ्यास या अनभ्यास करना चाहिये, उपसंहार।

(२) आलोचना, प्रत्यालोचना——आलोच्य विषय का स्वरूप वर्णन, लेखक के उद्देश्य का वर्णन, क्रम से एक एक बात को लेकर खण्डन या मण्डन, प्रामाणिक पुस्तकों के संक्षिप्त उद्धरण, अपने द्वारा ही विरोध हो तो उसका स्पष्टीकरण, लाभ या हानि, अपनी सम्मति, उपसंहार।

अभ्यास की रीति और आवश्यक बातें

आरम्भ में सरल सरल वर्णनात्मक निबन्ध लिखने का अभ्यास करना चाहिये। फिर धीरे धीरे आख्यानात्मक और विचारात्मक निबन्ध लिखने चाहियें।

जिस विषय पर लिखना हो उस पर भली भान्ति विचारकर मुख्य बातों को ध्यान में रखते हुए क्रमपूर्वक लिखना चाहिये। वाक्य छोटे छोटे और भावानुकूल होने चाहियें। निबन्ध लिखने से पहले यदि उपशीर्षक बना लिये जाएँ तो बड़ी सुविधा होती है।

अधिक भावों को थोड़े शब्दों में प्रकट करने का

अभ्यास करना चाहिये। भाव स्पष्ट और प्रभावोत्पादक होने आवश्यक हैं।

अप्रसिद्ध और अश्लील शब्दों का प्रयोग, एक बात को बार बार लिखना, अपनी बात का आप ही खण्डन करना, 'परन्तु' आदि शब्दों का अनेक बार प्रयोग आदि बातें निबन्ध के सौन्दर्य को नष्ट कर देती हैं।

जब, तब आदि नित्य-सम्बन्धी शब्दों का ठीक ठीक प्रयोग करना चाहिये।

विचार उत्कृष्ट और परिमार्जित होने चाहियें। अन्य ग्रन्थों के छोटे छोटे उद्धरण निबन्ध को दृढ़ और प्रभावशाली बना देते हैं।

भाषा रोज की बोलचाल के अनुसार और यथासम्भव मुहावरेदार होनी चाहिये। विरामचिह्नों को सावधानी से प्रयुक्त करना आवश्यक है।

लम्बे लम्बे अनुच्छेदों (पैरों) से निबन्ध अस्पष्ट और जटिल बन जाता है। इसलिये जहां तक हो सके अनुच्छेद छोटे रखने चाहियें, पर इस बात का ध्यान रहे कि प्रसंग न टूटने पाए। इस प्रकार लिखा हुआ निबन्ध अवश्य सफल होता है।

अभ्यास

विरामचिन्ह किसे कहते हैं? उनके नाम और चिन्ह लिखो? भाववोधक और अवतरणचिन्ह बनाओ। निम्नलिखित उद्धरणों में विरामचिन्ह लगाओ—वाह वाह हँसो

हँसो खूब आनन्द लूटो अजी डूबने का बड़ा डर रहता है पैं मैं लखपति हूं पुस्तक लेखनी कापी और पैंसिल उठा लाओ मोहन यहां क्या कर रहा है चित्र बना रहा हूं पिताजी शक्ति लाहौर मे निकलता है व्याकरण किसे कहते हैं तुम किस कक्षा श्रेणी में पढ़ते हो तू अभी उठा भी नहीं इनका परिचय दो भरत मन्थरा विभीषण ।

निबन्ध सुन्दर कैसे बन सकता है ? निबन्ध लिखो—

वायुयान, एकता, सन्तोष, डाकिया, समाचारपत्र, प्रातः की सैर, स्वाधीनता, स्वावलम्बन, स्त्रीशिक्षा, श्री रामचन्द्र ।

चौथा अध्याय

वाक्यविच्छेद

वाक्यगत शब्दों को पृथक् करके दिखलाने की रीति को वाक्यविच्छेद या वाक्यविश्लेषण कहते हैं ।

वाक्यविच्छेद करते हुए सब से पहले वाक्य-भेद बतलाना आवश्यक होता है ।

वाक्यविच्छेद की रीति निम्नलिखित है—

साधारणवाक्य का विच्छेद

साधारणवाक्य के विच्छेद में क्रमशः उद्देश्य में कर्ता और कर्ताविस्तार तथा विधेय में क्रिया, पूरक, कर्म, कर्म-विस्तार और क्रियाविशेषण आदि दिखाए जाते हैं । जैसे—

(१) कपिलदेव बालकों को भली भांति पढ़ाता है ।

(२) अर्जुनपुत्र अभिमन्यु ने दुर्योधनपुत्र लक्ष्मण को क्षणभर म मार गिराया ।

(३) मुझे मेरे गुरु ने विद्वान बनाया ।

साधारणवाक्य का विच्छेद

वाक्य भेद	उद्देश्य		विधेय				
	कर्ता	कर्ताविस्तार	क्रिया	पूरक	कर्म	कर्मविस्तार	क्रियाविशेषण आदि
(१) साधारण	कपिल देव		पढ़ाता है		बालकों को		भलीभांति
(२) साधारण	अभिमन्यु ने	अर्जुनपुत्र	मार गिराया		लक्ष्मण को	दुर्योधनपुत्र	क्षणभर में
(३) साधारण	गुरु ने	मेरे	बनाया	विद्वान्	मुझे		

मिश्रितवाक्य का विच्छेद

मिश्रितवाक्य के विच्छेद में क्रमशः वाक्यभेद, उपवाक्य, उपवाक्य-नाम, योजक और शेष साधारणवाक्य की तरह दिखाया जाता है। जैसे—

(१) गीता में यह लिखा है कि कर्म करना ही मनुष्य का कर्तव्य है।

(२) जो बात मैंने तुम्हें बतलाई थी, वह तुम इन्हें बता दो।

(३) जब जब धर्म की ग्लानि होती है, तब तब कोई महापुरुष प्रकट होता है।

मिश्रितवाक्य का विच्छेद

वाक्य भेद	उपवाक्य	उपवाक्य नाम	योजक	उद्देश्य: कर्ता	उद्देश्य: कर्ता विस्तार	विधेय: क्रिया	विधेय: पूरक	विधेय: कर्म	विधेय: कर्म विस्तार	विधेय: क्रियाविशेषण आदि
(१) मिश्रित वाक्य	(१) (क) गीता में यह लिखा है।	(क) प्रधान वाक्य		यह		लिखा है				गीता में
	(ख) कि कर्म करना ही मनुष्य का कर्तव्य है।	(ख) संज्ञा अङ्गवाक्य	कि	करना	कर्म ही	है	कर्तव्य			मनुष्य का
(२) मिश्रित वाक्य	(२) (क) वह इन्हें बता दो।	(क) प्रधान वाक्य	वह	(तुम)		बता दो		वह इन्हें		
	(ख) जो बात मैंने तुम्हें बतलाई थी।	(ख) विशेषण अङ्गवाक्य	जो	मैंने		बतलाई थी		तुम्हें बात	जो	
(३) मिश्रित वाक्य	(३) (क) तब तब कोई महापुरुष प्रकट होता है।	(क) प्रधान वाक्य	तब तब	महा-पुरुष	कोई	होता है	प्रकट			
	(ख) जब जब धर्म की ग्लानि होती है।	(ख) क्रिया-विशेषण अङ्गवाक्य	जब जब	ग्लानि	धर्म की	होती है				

संयुक्तवाक्य का विच्छेद

संयुक्तवाक्य के विच्छेद में वाक्य-भेद, उपवाक्य, उपवाक्य नाम आदि मिश्रितवाक्य के विच्छेद की तरह ही सारी बातें दिखाई जाती हैं। जैसे—

(१) प्रातःकाल का उठना अत्यन्त ही लाभप्रद है और शीघ्र सोना उत्तम ओषधि है।

(२) सब बालक चुपचाप पढ़ते हैं, पर तुम इधर-उधर खेलते हो।

(३) वह यों ही दुःखी है अथवा तुमने उसे समय पर सहायता नहीं दी।

संयुक्तवाक्य का विच्छेद

वाक्य भेद	उपवाक्य	उपवाक्य नाम	योजक	उद्देश्य		विधेय				
				कर्ता	कर्ता विस्तार	क्रिया	पूरक	कर्म	कर्म विस्तार	क्रियाविशेषण आदि
(१) संयुक्त वाक्य	(१) (क) प्र त:काल का उठना अत्यन्त ही लाभप्रद है।	(क) प्रधान वाक्य		उठना	प्रात:काल का	है	लाभ-प्रद			अत्यन्त ही
	(ख) और शीघ्र सोना उत्तम ओषधि है।	(ख) संयोजक समानाधिकरण वाक्य	और	सोना	शीघ्र	है	ओषधि			उत्तम
(२) संयुक्त वाक्य	(२) (क) सब बालक चुपचाप पढ़ते हैं	(क) प्रधान वाक्य		बालक	सब	पढ़त हैं				चुपचाप
	(ख) पर तुम इधर-उधर खेलते हो	(ख) विभाजक समा० वाक्य	पर	तुम		खेलते हो				इधर-उधर
(३) संयुक्त वाक्य	(३) (क) वह यों ही दु:खी है।	(क) प्रधान वाक्य		वह		है	दु:खी			यों ही
	(ख) अथवा तुमने उसे समय पर महायता नहीं दी।	(ख) विकल्पदर्शक समा० वाक्य	अथवा	तुमने		दी		उसे सहा-यता		नहीं, समय पर

अभ्यास

अधोलिखित वाक्यों का विच्छेद करो—

उनका हिन्दी में अनुवाद करना अनुवाद नहीं है, केवल संस्कार मात्र है। मानसिक विचारों का चरित्र पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। इसमें इन बातों का मुख्यतया प्रतिपादन किया गया है कि मनुष्य अपने पैरों के बल खड़ा होकर ही अपनी सब प्रकार की उन्नति कर सकता है। संसार में जितने भी महापुरुष हुए हैं वे सब स्वावलम्बन के ही सहारे हुए हैं। एक मित्र कहते हैं कि यदि मैंने इस पुस्तक को न पढ़ा होता, तो मैं अब तक एक नीच प्राणी होता। आर्य लोग बड़े नियमित और उत्साही होते थे, इसीलिए सारे भूमंडल में उनका दबदबा था। या तो चुपचाप बैठो, या चले जाओ। हम उन्हें ढूंढ रहे थे, वे एक ओर बैठे संध्या कर रहे थे।

समाप्त

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४	१२	(—)	(–̇)
५	५	अनुसार	अनुस्वार
४१	५	एक प्रश्न लिखा	पेंसिल से एक प्रश्न लिखा
८२	२	चित	सूचित
९५	१७	उठाकर	उठवाकर
९९	२१	यईं	गईं